माह अक्टूबर 2024 से दिसम्बर 2024

वर्ष 10 अंक 4 मुल्य 50

साहित्य सरोज

RNI N0-UPHIN/2017/74520, ISSN N0-2548-0843(Print)

UDYAM-UP-30-0000534

तथाकथित गंगापुत्रों को नहीं दिखते कानपुर के रसायनिक नाले

10वाँ गोपालराम गहमरी साहित्य व कला महोत्सव एवं सम्मान समारोह 2024

साहित्य सरोज

एक सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

वर्ष-10 अंक -4

RNI No- UPHIN/2017/74520

ISSN N0-2548-0843(Print)

UDYAM-UP-30-0000534

माह अक्टूबर 2024 से दिसम्बर 2024

संस्थापिका -: स्व०श्रीमती सरोज सिंह

प्रधान संपादक कान्ति शुक्ला

प्रकाशक -: अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

संपादक -: डा० अखंड प्रताप सिंह, गहमर, गाजीपुर

प्रधान कार्यालय -:

मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

मो0 9451647845

ईमेल sarojsahitya55@gmail.com

बेवसाइट-: https://www.sarojsahitya.page/

प्रति अंक -५० रूपये मात्र,

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रधुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, जनपद गाजीपुर, उ0प्र0 पिन 232327 द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह द्वारा प्रकाशित।

पत्रिका में छपे लेख,कहानीयॉ एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा।

तकनीकि पक्ष-: कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर

चित्र -गूगल ईमेज द्वारा।

संपादक मंडल –

ओम जी मिश्र, श्रीमती रेनुका सिंह, ज्योति किरण रतन (लखनऊ)
डॉ प्रिया सूफी (होशियारपुर), डॉ राम कुमार चतुर्वेदी (सिवनी)
संतोष शर्मा शान (हाथरस),
तकनीकी संपादक - राजीव यादव (नोएडा)
कानूनी सलाहकार - अशोक सिंह एडवोकेट (गहमर)
प्रधान कार्यालय प्रभारी - प्रशांत कुमार सिंह (गहमर)

संपादक मंडल से जुड़ने के लिए काल करें

9451647845

संपादकीय

साहित्य सरोज पत्रिका के वर्ष १० अंक ४ में आप सभी का हार्दिक स्वागत है। साथ ही आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। विश्वास ही नहीं होता कि गहमर गहंव से निकलने वाली यह पत्रिका ने अपने १० वर्ष पूरे कर ११वें वर्ष में प्रवेश करने जा रही है। यह सब आपके विश्वास और प्यार की ही देन है। यह अंक मुख्य रूप से १०वें गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव में आये अतिथियों के अनुभव का है। साथ ही शोध-पत्र, संस्मरण एवं कहानियों का भी इसमें समावेश है।

यह अंक जब आपके हाथ में होगा तो कुंभ प्रारम्भ हो चुका होगा, लेकिन कहना चाहेगें कि गंगा महं के उद्गम के जितने साल नहीं हुए उससे कही अधिक तो पैसे उनकी सफाई के नाम पर खर्च हो गये। मगर गंगा में न पानी आया न साफ हुई। गंगा आज नहर के जैसी हो गई है। यही नहीं बरसाती मेढ़क की तरह अनेकों संस्थाएं उनके सफाई के नाम पर आई और अपना उल्लू सीधा करके चली गई लेकिन गंगा वही की गंदगी वही की वही रही। गंगा-सफाई एवं गंगा सेवा अब एक ऐसा वाक्य बन गया है जिसको लोग सुनते तो हैं लेकिन इसे एक जुमला समझ कर हंस देते हैं। आज गंगा सफाई के लिए भारत सरकार की कई परियोजना चल रही है, जिसमें बड़ी-बड़ी बाते हो रही है।लेकिन हकीकत के धरातल पर गंगा का पानी कितना शुद्ध है किसी से छुपा नहीं हैं। गंगा सफाई के नाम पर कई संस्थाएं तालाबों एवं नदियों के किनारे से कूड़ा-करकट और प्लास्टिक उठवा कर अपने आपको गंगा या अन्य नदीयों के सेवक बता रही हैं। इन संस्थाओं के अध्यक्ष अपने आपको गंगापुत्र कहलवाते हैं और जब इनसे कानपुर और अन्य शहरों से केमिकल युक्त नालों के गंगा में गिरने और मंदाकिनी को अवरोध मुक्त करो तो ऐसे भागते हैं जैसे किसी बेसुरे ने तान छेड़ दिया हो। जरूरत है आज हर आदमी आगे आकर खुद गंगा को निर्मल बनाने एवं उसे अविरल बनाने पर बल दें। आप देख चुके है कि कोरोना काल में केवल कारखानों का पानी गंगा में बंद था तो हमारी गंगा कितनी निर्मल और पावन हो गई थी। किसी संस्था या किसी प्रकार के धन की जरूरत नहीं पड़ी। तो आईये गंगा को अविरल बनाने का एक मुहिम आप अपने घर से प्रारंभ्भ करीये। जय गंगे

अखंड प्रताप सिह, संपादक साहित्य सरोज

9451647845

विषय सूची

संस्मरण उषा किरण श्रीवास्तव	03
संस्मरण नीति सक्सेना	04
रामबाबू मैहर देव	05
सीमा वार्णिका	07
मधु माधुरी	08
डॉ शीला शर्मा	09
अभिलााषा झा, रमा शुक्ला, विनय दुबे	10
त्र्ोति किरण रतन	11
संगीता गुप्ता	13
पुस्तक समीक्षा प्रमोद दीक्षित मलय	14
कविता लोहड़ी किरण बाला	15
संस्मरण संतोष शर्मा शान	16
कहानी राकेंश बैस की कहानी	17
शोध ॅ डॉ अशोक भाटिया	21
शोध कान्ता रॉय	25
संस्मरण ओम प्रकाश द्विवेदी	29
जीओ और जीने दो	30
एवरग्रीन फिल्म प्रदर्शन	31
सम्मान समारोह	32
धर्म संस्कृति और इतिहास गीता सिंह	33
आलेख हृदय नारायण सिंह	34
कहानी दीक्षा चौबे	35
सांता नहीं संतो का शीला शर्मा	36
कविता ममता सिंह, कुलतार कौर	37
बुरे लम्हें शीला श्रीवास्तव	38
ग़ज़ल प्रिया देवगन	39
समारोह रिपोट	40

आम महिलाओं के लिए खास लाइफ स्टाइल, फैशन, मॉडलिंग व फिल्म पर आधारित एक ई-पत्रिका “एवरग्रीन” की शुरूआत जनवरी माह से होने जा रही है। इस पत्रिका से जुड़ने एवं संपादकीय कार्य में यही आप रूचि है तो आप सम्पर्क करें: अखंड गहमरी 9451647845

एवरग्रीन मिसेज इंडिया का सलेक्शन राउंड आपके शहर में कब और कहाँ जानने के लिए काल करें 9451647845

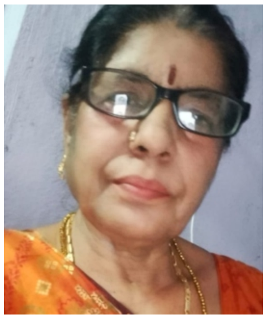

गहमर साहित्य महोत्सव में उभरी साहित्यिक भवना
डॉ. उषाकिरण श्रीवास्तव

प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार गोपालराम गहमरी की पुनीत स्मृति में आयोजित त्रिदिवसीय १० वीं गोपालराम गहमरी साहित्य व कला महोत्सव एवं सम्मान समारोह का २० दिसंबर से २२ दिसंबर को माँ कामाख्या महाविद्यालय गहमर के परिसर में प्रारम्भ होने कद उपलक्ष्य में २१ दिसम्बर को लोक गीतों और लोक नृत्य पर परिचर्या का आयोजन किया गया । आलेख , कहानी का वाचन, मोबाइल ने छीना बचपन पर परिचर्चा एवं फ़िल्म प्रदर्शन एवं चर्चा की गई है।

मैनें लोक गीतों और लोक नृत्य कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला आचार्यकुल मुजफ्फरपुर की अध्यक्षा लेखिका डा. उषाकिरण श्रीवास्तव ने की । १० वां गोपाल राम गहमरी साहित्य और कला महोत्सव के २१ दिसंबर को द्वितीय सत्र लोक-गीत और लोक -नृत्य में अध्यक्षता डह उषाकिरण श्रीवास्तव ने किया मुख्य वक्ता के रूप में ज्योति किरण ने नृत्य के बारे में बताया और विभिन्न नृत्य को व्यवहारिक रूप से भी बताया गया । अखंड प्रताप सिंह गहमरी द्वारा भी उपर्युक्त विषय पर प्रकाश डाला गया कार्यक्रम में अनेक राज्यों से आए हुए साहित्यकारों ने इस कार्यक्रम को सहारा , अध्यक्षता करते हुए डह उषाकिरण श्रीवास्तव ने कहा कि नृत्य के जन्मदाता भरत मुनि है और लोक -गीतों में संस्कार सृजन, सौन्दर्य सृजन, तथा समर्पण के वारे उदाहरण के साथ समझाया उन्होंने ने कहा कि लोक-गीतों का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है किसी भी देश का यदि लिखित इतिहास नहीं होता तो उनकी संस्कृति और संस्कार लोक -गीतों के आधार पर जान पाते हैं।कार्यक्रम के दौरान आचार्यकुल के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य धर्मेन्द्र जी के साथ रमा शुक्ला ,गौरी कश्यप, छत्तीसगढ़ की डह. शीला शर्मा, अणिमा श्रीवास्तव, संगीता गुप्ता, अनंता कुमारी,मिन्टु शर्मा, नीति सक्सेना, रंजीता ब्रजेश शर्मा, शिवनाथ सिंह, देवी प्रसाद पाण्डेय,श्री पाल शर्मा, गगनांचल तिवारी,आदि सभी प्रबुद्ध साहित्यकार उपस्थित रहे।

मां कामाख्या माता के मंदिर में पूरोहित जी द्वारा माता को चढ़ाई गई चुन्नी से सम्मानित होना, गहमर में गंगा जी में नौका विहार भोजन तथा आवास की उत्तम व्यवस्था साथ में मथुरा से पधारी संतोष 'शान' का स्नेहिल भाव अखंड जी की धर्मपत्नी ममता जी का आयोजन के प्रति समर्पण सभी साहित्यकार महिला -पुरुष का अपनत्व अविस्मरणीय रहा ।

अंत मे भव्य कार्यक्रम की सफलता के लिए अखंड गहमरी जी को कोटि-कोटि धन्यवाद देती हूँ। माँ कामाख्या के चरणों में निवेदन करती हूँ। हर वर्ष कार्यक्रम में शामिल होने का आशीर्वाद मिले । तीन दिवसीय १० वें गोपालराम गहमरी साहित्य और कला महोत्सव में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तृतीय सत्र में अध्यक्षता करना बहुत ही आनंददायक रहा है।

गहमर में लोक गीतों और नृत्य ने बांधा समां, साहित्य महोत्सव में उभरी क्षेत्रीय भावना प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार गोपालराम गहमरी की स्मृति में आयोजित १०वें गोपालराम गहमरी साहित्य और कला महोत्सव में २१ दिसंबर को लोक गीतों और नृत्य पर आयोजित परिचर्चा ने क्षेत्रीय भावनाओं को जीवंत किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला आचार्यकुल मुजफ्फरपुर की अध्यक्षा लेखिका डा. उषाकिरण श्रीवास्तव ने की।

मुख्य वक्ता ज्योति किरण ने नृत्य के विभिन्न रूपों को व्यवहारिक उदाहरणों के साथ समझाया। अखंड प्रताप सिंह गहमरी ने भी इस विषय पर प्रकाश डाला। डा. उषाकिरण श्रीवास्तव ने कहा कि लोक-गीतों में संस्कार सृजन, सौन्दर्य सृजन और समर्पण के अनूठे उदाहरण मिलते हैं। उन्होंने कहा कि लोक-गीतों का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है और किसी भी देश का लिखित इतिहास न होने पर उसकी संस्कृति और संस्कार लोक-गीतों के आधार पर जाने जा सकते हैं।

कार्यक्रम में आचार्यकुल के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य धर्मेन्द्र जी सहित कई प्रबुद्ध साहित्यकार उपस्थित रहे। मां कामाख्या माता के मंदिर में पूरोहित जी द्वारा माता को चढ़ाई गई चुन्नी से सम्मानित होना, गहमर में गंगा जी में नौका विहार और अखंड जी की धर्मपत्नी ममता जी का आयोजन के प्रति समर्पण सभी के लिए अविस्मरणीय रहा।

डॉ. उषाकिरण श्रीवास्तव ने तीन दिवसीय महोत्सव में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त होने पर आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह बहुत ही आनंददायक रहा है। उन्होंने अखंड गहमरी जी को कार्यक्रम की सफलता के लिए धन्यवाद दिया और मां कामाख्या के चरणों में हर वर्ष कार्यक्रम में शामिल होने का आशीर्वाद मांगा। क्षेत्रीय संस्कृति का उत्सवः यह कार्यक्रम क्षेत्रीय

संस्कृति और परंपराओं को जीवंत रखने का एक प्रयास है।।साहित्य और कला का संगम महोत्सव ने साहित्य और कला को एक मंच पर लाकर एक समृद्ध अनुभव प्रदान किया। महिलाओं की भागीदारीः कार्यक्रम में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने लैंगिक समानता को बढ़ावा दिया गया है। त्रयदिवसीय साहित्य महोत्सव में क्या खास लोक गीतों और नृत्य पर विस्तृत चर्चा , क्षेत्रीय भावनाओं को उजागर करना , प्रसिद्ध हस्तियों की उपस्थिति , महिलाओं की सक्रिय भूमिका में साहित्य प्रेमी ,संस्कृति प्रेमी ,लोक कथाकारों ,का गहमर में साहित्य और कला का संगम में लोक गीतों ने महिलाओं ने साहित्य महोत्सव को सफल भागीदारी रही । साहित्यिक कृतियों और साहित्य सरोज पत्रिका के संस्थापक अखंड प्रताप सिंह की कुशल नेतृत्व और आचार्यकुल के राष्ट्रिग अध्यक्ष आचार्य धर्मेंद्र का सुविचारों और छतीसगढ़ की डह. शीला शर्मा आदि कवित्रियों , लघु कथाकारों तथा गीतकारों द्वारा साहित्य महोत्सव सराहनीय रही है।

डाक्टर उषा किरण श्रीवास्तव
एडिटर वसुंधरा
मुजफ्फरपुर बिहार
93349 04712

संस्मरणः गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव-नीति सक्सेना

१६ दिसंबर को चंडीगढ़ से गहमर की यात्रा शुरू की थी। ट्रेन में बैठते हुए मन में यह विचार था कि इस बार का कार्यक्रम कितना खास होगा। बक्सर में उतरने के बाद, मुझे कुछ थकान महसूस हुई, लेकिन गहमर पहुंचते ही अखंड भैया और ममता दीदी ने दिल से स्वागत किया। उनका आतिथ्य बिल्कुल परिवार जैसा था, और इस स्नेह ने मेरी थकान को पूरी तरह से भुला दिया।

गहमर में पहुंचते ही, मुझे बहुत से पुराने और नए मित्रों से मिलने का अवसर मिलाकृरंजीत सिंह, डह्क्टर मंटू, संगीता दीदी, माधुरी, अनंत और अन्य कई लोग। हम सब एक ही कमरे में थे, और यह लगता था जैसे हम सब एक बड़े परिवार का हिस्सा हों। हर दिन सुबह तैयार होकर कार्यक्रम में हिस्सा लेते थे, और रात को आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते थे।

कार्यक्रम की शुरुआत ईश्वर की वंदना से हुई और फिर गंगा दर्शन तथा मां कामाख्या देवी के दर्शन का लाभ लिया गया। इस दौरान, मुझे रैंप वह्क में मुख्य अतिथि के रूप में भी शामिल होने का सौभाग्य मिला, जो मेरे लिए सम्मान का विषय था। यह आयोजन मेरे लिए न केवल एक सांस्कृतिक उत्सव था, बल्कि एक ऐसा अनुभव था, जिसमें हर एक व्यक्ति के साथ दिल से जुड़ने का अवसर मिला।

गहमर के इस आयोजन ने मुझे यह सिखाया कि सच्चा सांस्कृतिक कार्यक्रम वही है, जहां लोग एक-दूसरे को परिवार की तरह सम्मान दें और जहां हर व्यक्ति को प्यार और आदर से गले लगाया जाए। अखंड भैया और उनके परिवार का धन्यवाद, जिन्होंने मुझे इस अद्भुत अनुभव का हिस्सा बनाया। घर लौटते वक्त, मेरे मन में केवल एक ही भावना थीकृआभार और एक गहरी संतुष्टि, कि यह कार्यक्रम मेरे जीवन का एक अमूल्य अनुभव बन गया है। मैं यह उम्मीद करती हूं कि ऐसे और कार्यक्रम होते रहें, ताकि हम सब एक-दूसरे से जुड़ सकें और सांस्कृतिक धरोहर को संजो सके।

नीति सक्सेना“मयूरी”
Mrs Tourism Ambassador
Universe Asia Pacific 2020
95574 07454

ईश कृपा से पुण्य भूमि पर मेरा जाना हुआ

कहते हैं कि कहीं पर आप जाते नहीं है,बल्कि पहुंचाये जाते है।यह सब कुछ पहले से तय है।मां सरस्वती के आशीर्वाद से मां कामाख्या की नगरी व उपन्यासकार गोपालराम गहमरी की नगरी और सैनिकों के लिए प्रसिद्ध एशिया द्वीप के सबसे बड़े गांव गहमर मेरा अचानक जाना तय हुआ।

इस यात्रा में पहले से बिल्कुल तय नहीं था,मैं पहुंच भी पाऊंगा या नहीं,लेकिन ईश कृपा से इस पुण्य भूमि पर मेरा जाना हुआ और आकर संस्मरण लिख रहा हूं।

साहित्य सरोज पत्रिका द्वारा सम्मान की जानकारी फेसबुक के माध्यम से मिली थी और व्हाट्सप्प के माध्यम से सूचना मिली।खैर,२० दिसम्बर तक मुझे छुट्टी नहीं मिलना तय था,सो ११ दिसम्बर को मैंने आवेदन किया।उसमें भी ऊहापोह की स्थिति बनी रही।२२ दिसम्बर को एक टी. वी.कार्यक्रम की शूटिंग थी।उन्हे मना किया और आयोजक महोदय मान भी गए।

इस बार दिसम्बर की सर्द रातें कुछ ज्यादा ही सर्द थी।२० दिसम्बर की सुबह से सारे दिन मैं गहमर आने की तैयारी करता रहा ।रात को मैंने पास के रेलवे-स्टेशन से इटारसी जंक्शन के लिए ट्रेन पकड़ी और करीब एक घंटे से अधिक अंतराल के बाद इटारसी जंक्शन पर था।वहां से मैंने लोकमान्य टर्मिनल-पटना एक्सप्रेस(जनता एक्सप्रेस)को पकड़ा।

ट्रेन कुछ समय से पहले ही आ गई थी।कुछ युवकों ने बताया कि यह ट्रेन पटना जायेगी।मैं आश्वस्त हुआ और ट्रेन में बैठ गया।ट्रेन कई हाल्ट पर रुकती हुई,छुक-छुक करती चली जा रही थी। पं.दीनदयाल जंक्शन,जमानिया व दिलदार नगर स्टेशन होते हुए चली जा रही थी। वहाँ से गुजरते वक्त मेरे कुछ सहयात्री कह रहे थे कि कहां जा रहे हो? मैं बताया कि मैं "गहमर" जा रहा हूँ ।सहयात्री बता रहे थे कि यह एशिया का सबसे बड़ा गांव है और सबसे अधिक सैनिक देश-सेवा में यहीं से है और एक समय यहां पर मिलिट्री के कैम्प यहां पर लगते थे।

वास्तव में अपनी गंतव्य-यात्रा के बारे में सुनकर यह सब सुखद आश्चर्य देता है।कुछ मिनट के अंतराल के बाद मेरी मंजिल"गहमर"आ गया।रेलवे-स्टेशन पर उतरा ही था कि श्री शिवनाथ सिंह जी का संदेश आ गया कि रेलवे-स्टेशन से दायीं और मात्र ३०० मीटर की दूरी पर मां कामाख्या कॉलेज में यह कार्यक्रम चल रहा है। कार्यक्रम-स्थल नजदीक ही था,मुझे पहुंचने में देरी न हुई।

मेरी इस कार्यक्रम में उपस्थिति २१ दिसम्बर २०२४ को रात्रिकालीन समय पर हुई। इससे पूर्व कार्यक्रम के आयोजक एवं संरक्षक श्री अखंड प्रताप सिंह "गहमरी"अनुसार, "१६ दिसम्बर को साय ५ बजे पटना-दीनदयाल उपाध्याय पैसेंजर से बौद्ध गया के आर्चाय डॉ धमेंन्द्र तिवारी जी के आगमन के साथ अतिथियों के आने का सिलसिला शुरू हुआ। वह गाजीपुर से इन्द्रजीत तिवारी निर्भिक जी के आने के बाद समाप्त हुआ। २० दिसम्बर की सुबह तक देश के कोने-कोने से ५० से अधिक साहित्यकार व कलाकार गहमर पहुँच चुके थे।

२० दिसम्बर की सुबह ११ बजे कार्यक्रम स्थल पर सुंदरकांड का पाठ प्रारंम्भ हुआ। जिसमें गहमर के श्री अशोक उपाध्याय, श्री सुरेश सिंह जी श्री मगनू सिंह जी, आचार्य डॉ धमेन्द्र तिवारी, डॉ उषा किरण श्रीवास्तव जी, संगीता गुप्ता जी, अनंता कुमारी जी एवं मिंटू शर्मा जी ने हिस्सा लिया।

इसके बाद शुरू हुआ शुभारंभ का दौर। आचार्य धर्मेन्द्र तिवारी जी के मंत्रोच्चारण के बीच बड़े भाई ग्राम प्रधान गहमर बलवंत सिंह बाला ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। और सभी अतिथियों का गोपालराम गहमरी कार्यक्रम में स्वागत करते हुए गोपालराम गहमरी के जीवन पर एवं कृतियों पर चर्चा में भाग लिया।"

इस समय मैं सीधे कार्यक्रम - स्थल पर जुड़ा।इस समय कलाकार श्री मस्ताना जी का संगीत कार्यक्रम चल रहा था।बीच-बीच में अखंड गहमरी जी सभी साहित्यकार - कलाकारों से भोजन - विषयक भी पूछ रहे थे। कॉलेज के प्रांगण में एक व्यवस्थित पुस्तक-प्रदर्शिनी लगी हुई थी,जो बारम्बार मुझे अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। इस समय बहुत सारे कलाकारों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति दी ।इसी समय एक नन्हीं-सी बिटिया ने प्रस्तुति दी,जिससे यह कार्यक्रम हमारी विरासत साहित्य और संस्कृति को भावी पीढ़ी में रोपित करने का कार्य निःस्वार्थ भाव से पिछले कई सालों से करता आ रहा है।अनायास ही यह गहमर की पहचान बन गया है(मुझे माफ करे यहां के साहित्यकारों और सैनिकों से सारे देश में गहमर की पहचान है।

दूसरे दिन हम सभी को गंगा-स्नान पश्चात मां कामाख्या देवी के दर्शन के लिए जाना था।अचानक ही गहमर

थाने के टी-स्टहल पर हम कुल तीन साहित्यकार इकट्ठे हो गये।समय की नियति देखिए,गंगा-घाट और मां कामाख्या देवी मंदिर किसी ने नहीं देखा था,लेकिन रास्ता पूछते हुए हम तीन लेखक मैं रामबाबू मैहर देव,शमशाबाद विदिशा म.प्र,श्री शिव नाथ जी,रायबरेली और श्री तेजपाल शर्मा जी,दिल्ली।और हमारा पथ-प्रदर्शक रहीं हिन्दी-साहित्य की दो कवयत्रि -लेखिका ,जिनके नाम से मैं अनभिज्ञ था।खैर,हम सबकी टोली अंजाने में मां कामाख्या देवी के मंदिर-स्थान की ओर बढ़े चली जा रही थी।

लगभग २किमी किमी.का सफर तय करने के बाद हम सभी मंदिर प्रांगण पहुंच चुके थे।यहीं पर मंदिर के बाहर दूरी मैंने और श्री शिव नाथ जी ने स्नान किया ।तदुपरांत मां कामाख्या देवी,मां काली,राम मंदिर में हनुमान जी और राम-जानकी के दर्शन किए।बाद में हम सभी ने भैरव नाथ मंदिर के दर्शन किए।इस तरह से हम सभी बातचीत में मशगूल होते हुए जाने कब गहमर लौट आए पता ही नहीं चला।

इस दिन के कार्यक्रम में कुछ वक्ताओं की मन की बात भी हुई।दोपहर भोजन बाद दो शार्ट मूवी कम्पीटिशन एवं ब्लड दिखायी गई।इसमें कम्पीटिशन शार्ट मूवी को खजुराहो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में राजा बुंदेला अवार्ड से सम्मानित किया गया है। इस फिल्म में लखनऊ, बिलासपुर एवं रायबरेली के कलाकारों द्वारा अभिनय किया गया एवं श्री अखंड प्रताप सिंह गहमरी ने निर्मित और निर्देशित किया है।इस समय कई बार कार्यक्रम में किसी भी प्रकार की अड़चन आने पर हल करने के लिए स्वयं अखंड 'गहमरी'जी तत्पर दिखे,नहीं तो आमतौर पर देखने में आता है कि व्यक्ति इस स्थान पर अपनी शेखी बघारने और दूसरों को आदेशित करने से बिल्कुल भी नहीं रह पाता है।यह सरल व आत्मीय स्वभाव अखंड 'गहमरी'जी में देखा जा सकता है। वे किसी से कहने से ज्यादा स्वयं करने में विश्वास रखते हैं और अपने निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने तक पहुंचते हैं यानि लक्ष्य हासिल करते हैं।

कार्यक्रम के आरंभ के पूर्व में यादगार के तौर पर'गहमर और गोपालराम'व पत्रिका 'साहित्य-सरोज'का वर्ष नौवां अंक खरीद चुका था...बिल्कुल अविस्मरणी। रात्रीकालीन समय में रैम्प-वॉक के साथ ही कवि-सम्मेलन आरंभ हुआ।जिसमें देश कए विभिन्न प्रांतों से आए साहित्कारों -कलाकारों ने समां बांधा।बाद में सभी को यथोचित सम्मान से सम्मानित किया जाकर विदाई दी गई।

विदाई के समय श्री अखंड गहमरी जी भावुक हो गए ।यह विदाई का दर्द एर कलाकार-साहित्यकार से बेहतर भला कौन समझ सकता है? विदाई के समय हम सभी साहित्यकारों-कलाकारों के कहीं-न-कहीं आंसू भर आये थे। खैर,मिलना-बिछड़ना ईश्वर की नियति है।बस,यही समय अविस्मरणीय बनकर जहन में रह जाता है।रात्री में करीब १.१८ पर मेरी ट्रेन थी।जाते हुए श्री अखंड गहमरी जी नमस्कार करते हुए विदा ली।एक बार फिर शॉर्ट मूवी के कलाकारों व उनके एक दोस्त के साथ "गहमर"रेलवे-स्टेशन तक पहुंच चुका था।इस समय इन सभी से मूवी संबंधित बहुत सारी बातें हुईं।इन सह-बंधुओं की पहले ट्रेन आने से यह सभी जा चुके थे।कुछ समय बाद मेरी भी ट्रेन आ गई और मैं सफर के लिए ट्रेन में बैठ गया... ..सफर से वापसी.....अविस्मरणीय यादों के साथ।

रामबाबू मैहर देव,
शमशाबाद,विदिश
82699 54455

एवरग्रीन शार्ट-फिल्म प्रोडक्शन
भगवानपुर, लंका वाराणसी
9289615645
शार्ट फिल्मों में अभिनय, मॉडलिंग विज्ञापन कार्य,प्रशिक्षण एवं अपनी कहानी पर शार्ट-फिल्म निमार्ण के लिए तत्काल मिलें।

पशुपतिनाथ की दिव्य धरा पर मन हुआ रोमांचित-सीमा वर्णिका

भगवान पशुपतिनाथ की धरा नेपाल की पावन भूमि पर जैसे ही मेरे कदम पड़े मन रोमांचित हो उठा एक सकारात्मक दिव्य ऊर्जा के संवहन की अनुभूति हुई। शीतल बयार के झोंके लम्बे सफ़र की समस्त थकान भरी उष्णता को हर रहे थे। मनोहरी प्राकृतिक सौंदर्य ऐसा लग रहा था किसी और लोक में ले आया हो मन सम्मोहित हो रहा था। अति उत्साहित हृदय आह्लादित था।

जैसा हमने अनुभव किया वज्र झंझावत के अभ्यस्त नेपाली जन कर्मठ, सरल व अति मिलनसार व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं। प्रेम और आत्मीयता यहाँ की प्राणवायु में समाहित है। नेपाल विश्व के प्रतिशत आधार पर सबसे बड़ा हिन्दू धर्मावलम्बी राष्ट्र है। यहाँ की राष्ट्र भाषा नेपाली है। संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य नेपाल का राष्ट्र वाक्य " जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" है जो संस्कृत भाषा में है। यहाँ का राष्ट्रगान जो व्याकुल माइला द्वारा रचित है-

"सयौं थुँगा फूलका हामी, एउटै माला नेपाली।
सार्वभौम भई फैलिएका, मेची-महाकाली।।

राजधानी काठमांडू का वैभव देखते बनता है। नेपाल के ऐतिहासिक स्थल काल के गाल में समा गए राजा महाराजाओं की विरासत की धरोहर के रूप में आज भी बुलंद खड़े हैं। नेपाल में सांस्कृतिक तथा साहित्यिक अभिरुचि सशक्त रूप से दिखाई देती है। हिंदी कविता के समान नेपाली कविता में भी छायावाद ,रहस्यवाद, प्रगतिवाद तथा प्रयोगवाद की तमाम विशेषताएँ दृष्टिगत होती हैं। प्राकृतिक सौंदर्य हो, शृंगार की बात हो या फिर जीवन संघर्ष से जुड़ी समस्याएँ हों नेपाली साहित्य में मानवीय मनोभावों की अभिव्यंजना स्पष्ट व सशक्त रूप से परिलक्षित होती है। वर्तमान नेपाली कविता में समय सापेक्षता ,सामाजिक ,आर्थिक विषमताएँ ,अध्यात्मिक, सांसारिक बोध ,जीवन की व्यर्थता का भाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता ।

मेरी नेपाल यात्रा का उद्देश्य नेपाल भारत साहित्य महोत्स्व में प्रतिभाग करने का था अतः वहाँ के लोगों के बारे में व साहित्य पर चर्चा स्वाभाविक थी। विभिन्न देशों व भारत नेपाल के अलग अलग राज्यों से पहुँचे साहित्यकारों का महाकुंभ था। भिन्न संस्कृतियों तथा विचारों का आदान प्रदान सम्मेलन की महत्ता को बढ़ा रहा था ।

भोजन की व्यवस्था स्थानीय स्तर पर थी जो अपना अलग स्वाद व अंदाज लिए थी। परशुराम विश्व विद्यालय प्रांगण जो ज्ञान की दिव्यता भव्यता से परिपूर्ण था यहाँ त्रिदिवसीय साहित्य महोत्सव चला।

नेपाल की लेक सिटी पोखरा में आयोजित नेपाल भारत साहित्य महोत्सव का पंचम संस्करण में हिन्दी और नेपाली भाषा के संबंध प्रगाढ़ करने के लिए भविष्य हेतु सार्थक योजनाओं पर चर्चा विमर्श हुआ। २२ फरवरी २०२४ से आयोजित तीन दिवसीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन में भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों से हिन्दी साहित्य सेवी के साथ ही नेपाल के साहित्यकार- पत्रकार सम्मिलित हुए। भारतीय दूतावास के सहयोग से आयोजित भव्य साहित्यिक व सांस्कृतिक सम्मेलन में हिन्दी और नेपाली भाषा का आपसी अनुवाद तथा भाषा समन्वय हेतु दोनों देशों के प्रतिनिधियों की समिति बनाने का प्रस्ताव सर्व सहमति से पारित किया गया। नेपाल भारत साहित्य महोत्सव के आयोजक डहृ विजय पंडित ने दोनों देशों के साहित्यिक और सांस्कृतिक सम्मिलन के लिए ऐसे आयोजनों की आवृत्ति पर जोर दिया।

पृथ्वी नाथ कैंपस में आयोजित तीन दिवसीय सम्मेलन में भारतीय दूतावास के अधिकारी के हिन्दी और नेपाली के घनिष्ठ रिश्ते पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नेपाली भाषा संविधान कि सूची में शामिल है जबकि सिक्किम में कार्य की आधिकारिक भाषा है। उन्होने सरकार की ओर से दोनों भाषा के लेखक साहित्यकारों को करीब लाने के लिए हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया। सम्मेलन के संयोजक डहृ बलराम उपाध्याय ने भारतीय प्रतिनिधियों का

आभार जताया।

अतिशयोक्ति न होगी यदि पोखरा के सौन्दर्य के विषय में कुछ भी लिखें। पर्वत श्रृंखला से घिरा हरा भरा दिव्य ऊर्जा से परिपूर्ण मनोरम स्थल है हिमालय की वादियों में अपूर्व सुख की अनुभूति होती रही। यह स्वप्न जैसा ही था हिमाद्रि श्रृंग को अपनी आँखों से देखना। गोरखपुर से पोखरा की यात्रा के मध्य हम लोगों ने लुम्बिनी, बौद्ध विहार तथा ह्वेनसांग टेम्पल आदि के दर्शन किये अभूतपूर्व अनुभव रहा। अपनी सांस्कृतिक विरासत को देख कर भारतीय होने पर गर्व होता है। नेपाल की पावन धरा पर जाकर तनिक नहीं लगा कि कहीं और आएँ हैं अपनत्व प्यार सौहार्द यहाँ की मृदा में मिश्रित हो जैसे।

हम स्थलीय प्राणियों को पर्वतीय क्षेत्र में जाने में थोड़ा शारीरिक कष्ट अवश्य झेलना पड़ता है क्योंकि हमारा परिवेश अलग है। सड़क मार्ग लम्बा उबड़ खाबड़ होने के कारण कठिनाई उठाना स्वाभाविक है। साहित्यिक महोत्सव एक बड़ा आयोजन होता है छोटी मोटी कमियों के चलते उसकी महत्ता को कम नहीं आँका जा सकता है। आयोजन समिति के आदरणीय बलराम रेगमी जी तथा आदरणीय विजय पंडित जी का आत्मीयता पूर्ण सौम्य व्यवहार स्मरणीय रहेगा।

श्रीमती सीमा सक्सेना 'वर्णिका'
कानपुर-उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर-7376498172

अनोखी, विविध कला एवं साहित्यिक संगम

एक साथ विविध कार्यक्रम का, व्यवस्थित ढंग से संयोजन अद्भुत आश्चर्यजनक एवं दुस्साध्य कार्य है। जिसे अग्रज अखंड गहमरी भैया ने सम्पादित किया। बहुधा किसी एक दिवसीय एवं एकल आयोजन में लोग एड़ी चोटी का जोर लगाते हैं,तब कहीं जाकर कार्यक्रम सफल होता है। ऐसे में एक ज्वलंत उदाहरण एवं विकल्प का नाम अखंड गहमरी है। भैया स्वनाम धन्य हैं।

जिस तरह चाणक्य ने अखंड भारत का स्वप्न देखा, साकार किया ऐसे ही अखंड भैया ने गहमर महोत्सव का अखंड, ऐतिहासिक कार्यक्रम आयोजित किया। जिसे अगर हम सराहनीय कहें, तो साहित्य एवं कला का अपमान होगा। उन्होंने साहसिक योगदान , व भगीरथ प्रयास किया कार्यक्रम को भव्य एवं सफल बनाने में।

हमारी सनातन परंपरा को मूर्त एवं जीवंत करने वाले, सशक्त हस्ताक्षर का नाम अखंड गहमरी है।अनंत अविस्मरणीय क्षण हैं, गहमर से जुड़े; जो वर्णनातीत है। हम भैया और आदरणीय भाभी के,आतिथ्य से अभिभूत हैं। हम सभी पुष्पों को आपने पिरोकर एक सुंदर हार निर्मित किया, मां कामाख्या के पावन गले का, मां गंगे का ऋणी बनाकर हमें कर्जदार बना दिया। और अपने बहनों को विदा करने से पूर्व एक पिता ,एक भाई की तरह भाव विहवल हो, फूट फुटकर रो पड़े।

कैसे भुलाया जा सकता है, इन अविस्मरणीय क्षणों को!?! हार्दिक आभार मेरे भाई। आपकी श्रद्धा एवं साहस को नमन। उससे भी बड़ी बात मैने, महसूस की, बेटी व बहन की विदाई के बाद भाई की निधि का, कोष का खाली होना। शायद यह बात सिर्फ मैने महसूस की, सबसे छोटी बहन होने के नाते। हार्दिक प्रणाम मेरे भैया

श्रीमती माधुरी मधु
कुशीनगर-उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर-9695779092

ना भूतो ना भविष्यति

साहित्य सरोज पत्रिका द्वारा आयोजित गहमर का २० से २२ दिसंबर २०२४ तक चलने वाली तीन दिवसीय गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव कार्यक्रम एक अनोखी, विविध कला एवं साहित्यकारों का एक अनुपम संगम था जिसे हम साहित्यकारों का महाकुंभ भी कह सकते हैं।

एक साथ विविध कार्यक्रम का, व्यवस्थित ढंग से संयोजन अद्भुत आश्चर्यजनक एवं दुस्साध्य कार्य है जिसे कार्यक्रम के संयोजक अखंड गहमरी जी ने सम्पादित किया। प्रायः यह देखा गया है कि कोई भी कार्यक्रम को करने के लिए आयोजक कड़ी परिश्रम करता है,तब कहीं जाकर कार्यक्रम सफल होता है।

अखंड जी कार्यक्रम में अतिथि नहीं अपितु अपने परिवार के रूप में साहित्यकारों को आमंत्रित करते हैं। और अतिथियों के आवभगत में उनका पूरा परिवार लगा रहता है। अखंड जी एक ऐसे शख्स है जो केवल सपने नहीं देखे अपितु साकार करना भी जानते हैं। एक ऐसा जुनूनी शख्सियत जो हर कार्य को अंतिम चरण देकर ही दम लेते हैं। गहमर का यह कार्यक्रम केवल कार्यक्रम नहीं अभी तो अखंड जी की साधना है। जिसमें प्रतिभाओं को सामने आने का पूर्ण अवसर प्रदान किया जाता है। अखंड जी एक पारस पत्थर है जिन्हे कलाकारों को निखारना अच्छी तरह से आता है।

गहमर महोत्सव एक ऐतिहासिक कार्यक्रम है जिसके बारे में मैं बस यही कहना चाहूंगी कि ऐसा कार्यक्रम "ना भूतो ना भविष्यति।" जिसे अगर हम सराहनीय कहें, तो साहित्य एवं कला का अपमान होगा। उन्होंने साहसिक योगदान , व भगीरथ प्रयास किया कार्यक्रम को भव्य एवं सफल बनाने में। हमारी सनातन परंपरा को मूर्त एवं जीवंत करने वाले, सशक्त हस्ताक्षर का नाम अखंड गहमरी है।अनंत अविस्मरणीय क्षण हैं, गहमर से जुड़े; जो वर्णनातीत है। हम अखंड जी और आदरणीय ममता जी के,आतिथ्य से अभिभूत हैं।

अलग-अलग प्रांत से सभी कलाकारों को बुलाकर एक मंच देना कोई आसान काम नहीं है। हम सभी पुष्पों को आपने पिरोकर एक सुंदर हार निर्मित किया, मां कामाख्या के पावन धरा पर हमें आने का अवसर मिला। मां कामाख्या के पूजन वाली चुनरी से हम सभी का स्वागत कर हमारा सम्मान किया गया। मां गंगा का न केवल हमने दर्शन किए बल्कि उसमे स्नानकर हमने अपने जीवन को पवित्र कर लिया। जो प्रेम पुत्री को अपने मायके से मिलता है वह सम्मान हमे गहमर में आकर मिला। अखंड जी ने हमें ऋणी बनाकर कर्जदार बना दिया। गांव से विदा हो लेते वक्त हमने आपको एक पिता और भाई के रूप में देखा जो अपने बहनों को विदा करने से भाव विहवल हो, जाता है,कैसे भुलाया जा सकता है, इन अविस्मरणीय क्षणों को जो हमने गहमर में ३ दिन बिताए है।

आपका हार्दिक आभार आपकी श्रद्धा एवं साहस को नमन। मैंने भी यह महसूस किया कि बेटी व बहन की विदाई के बाद भाई की निधि का, कोष का खाली होना। किसी प्रकार की कोई भी सहयोग राशि लिए बिना इस प्रकार का कार्यक्रम करना कोई आसान बात नहीं है। आदरणीय अखंड जी को सादर प्रणाम आपके जज्बे को सलाम।

डॉ शीला शर्मा
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
लिंगियाडीह,बिलासपुर
(छत्तीसगढ)
9589591992

10वां गोपालराम साहित्य महोत्सव अतिथियों की नज़र में

अभिलाषा झा, एवरग्रीन मिसेज छत्तीसगढ़-मेरे जीवन का प्रथम आनंदमयी एवं वास्तविक गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव २०२४ त्रिदिवसीय समारोह कार्यक्रम सराहनीय था । कवियों की कविताएं और साहित्य का अनूठा संगम , माता कामख्या का क्षेत्र औऱ गंगा के पावन तट पर साहित्यसेवी अखंड सर की कुशलता से समारोह सुचारु रूप से सम्पन हो गया। मुझे इस समारोह मेरे शामिल होने का शौभाग्य अखंड सर के द्वारा प्राप्त हुआ उसके लिए उन्हें दिल से धन्यवाद समारोह की सफलता के लिए आयोजक और उनके पुरे परिवार को आभार ।**अभिलाषा झा छत्तीसगढ़**

रमा शुक्ला जी झासी – पहलजासूसी उपन्यासकार कीर्तिशेष गोपालराम गहमरी जी की दसवीं पुण्यतिथि के अवसर पर अखण्ड गहमरी जी के आमंत्रण में २० से २२ दिसम्बर २०२४ माँ कामाख्या महाविद्यालय गहमर में देश के कोने- कोने से आए कलाकारों, साहित्यकारों का सुसंगम देखकर मैं अभिभूत हो गईइस आयोजन में अखण्ड प्रताप गहमरी जी की सपरिवार निःस्वार्थ सेवाभाव अवर्णनीय रहीद्यअतिथि सत्कार कीअनूठी कोशिश हर पल देखा मैंनेद्यअपने हर वादे को निभाने वाले दम्पति (अखण्ड +ममता) का स्नेह अतुलनीय रहाद्यउनके क्रियाकलाप युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैंद्यअस्तु उन्हें एवं समस्त सहभागियों को आयोजन के सफल समापन की बधाई एवं असीम शुभकामनाएं

विनय दुबे जी, नागपुर– पतितपावनी गंगा के पावन तट पर एशियाँ के सबसे बड़े गांव ”जिसे सैनिको का गाँव कहा जाता है। जँहा बारह हजार देश की सीमाओं पर वर्तमान में देश की विभिन्न सीमाओं पर तैनात हैं, वहीं लगभग पंद्रह हजार सैनिक सेवा निर्वित इस गाँव में हैं, प्रतेक घर से एक व्यक्ति में रह कर राष्ट्र रक्षा हेतु समर्पित है उस गाँव का नाम गहमर है।
यह साधारण गाँव नहीं है। यह गोपाल राम गहमरी की पावन भूमि है, माँ कामाख्या कि धाम है।आज देश की आबादी के बड़ा हिस्सा कला, साहित्य, फ़िल्म, रंगमंच, के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाने का सपना देखते हैं।बहुत माया नगरी में जाकर संघर्ष करते हैं, संघर्ष करते अपनी जीवन की बड़ा हिस्सा खो देते हैं, फिर भी अवसर नहीं मिलता। सम्मान की बात बहुत दूर की है।आज जो सम्मान दिए जाता है वो मोटी रकम देकर खरीद लिया जाता है। जो जितना बड़ी राशि देता है उसको उतनी बड़ा सम्मान दिया जाता है। धन्य हैं अखंड गहमरी जो ॅ६वर्ष से बिना किसी आर्थिक सहयोग लिए आयोजन कर रहे हैं। धन्य हैं इनके माता -पिता जो ऐसे सपूत क़ो साहित्य की सेवा करने के लिए समर्पित कर दिए।आइये
मन की धरातल से नहीं आत्मा की धरातल से लिखे, चाहे वह, गीत, कविता, कहानी, ग़ज़ल, फ़िल्म क़ोई भी क्षेत्र हो। आज हम रहें या नहीं रहें, लेकिन आने वाला कल के लिए एकयादगार छोड़ जाय, गाड़ी, बांग्ला, पैसा, यँही रह जातीहै, शरीर छूट जाता है।गहमर गाँव की यादें, हमेशा बनी रहेगी। गहमर की धरती जब भी याद करेगी हम एक सेवक के रूप में सेवा देने के लिए हाजिर रहूँगा।

”मन की तरंग मार लीजिए
बस हो गया भजन।
आए हो कँहा से, जाओगे कँहा
इतनी सी जान लीजिये,
बस हो गया भजन।
आदत बुरी सुधार लीजिये
बस हो गया भजन

EverGreen

अपने मरने की खबर सुन खड़ी हुई

मुझे जैसे ही १० वें गोपालराम गहमरी साहित्य और कला महोत्सव की जानकारी मिली मैंने तभी तय कर लिया की मुझे गहमर आना है। बीते वर्ष मेरे साथ लखनऊ की कुछ महिलाएं और भी गयी थी जिनका सम्मान भी हुआ ।उनके गाये गीत सबकी जुबान पर चढ़ गये । इसलिए मैंने फिर उनसे गहमर चलने के लिए पूछा तो ,कोई बाहर था, किसी के पति, सास बीमार थे तो किसी के पैरों की समस्या। आने वालों में चार लोग तैयार हुए जिसमें दो का पक्का नहीं था । लेकिन मैंने अपूर्वा अवस्थी सहित चारों के रिजर्वेशन करा लिया।जिसमें कार्यक्रम सहभागिता के आमंत्रण पत्र जमा ना करने पर अपूर्वा अवस्थी की ड्यूटी परीक्षा में लग गयी ।

मै रह गयी अकेले लखनऊ से आने वालों में। अंत तक प्रयास किया कि रिज़र्वेशन कैंसल ना हो लेकिन आने से छः घंटे पहले रिजर्वेशन कैंसिल ही कराना पड़ा। लोक साहित्यकार उमा त्रिगुणायत दीदी जिनकी पुस्तकें मैंने गहमर में दी थी आना चाहती थी। लेकिन उनकी बहू का का सख्त आदेश हुआ मम्मी कहीं नहीं जायेगी ।ठंड में उनका खाना पीना बिगड़ेगा ठंड लग गयी तो क्या होगा। अच्छा लगा सास के लिए बहू का प्रेम ७६ वर्ष में उनका अस्पताल से आने के बाद सफर ठीक भी नहीं था। तो बस मैं चल पड़ी अकेले ही । १६ दिसंबर को सब पैकिंग कर ली थी क्योंकि २० की सुबह सुबह ३:३० बजे उठकर खाना नाश्ता बना कर १२५ किलोमीटर का सफर रायबरेली स्कूल का भी करना था । वापस शाम ४:०० बजे की घर वापसी हुई ,थोड़ा आराम करके फिर से बच्चों के लिए रात का खाना बनाने के साथ सुबह के टिफिन को भी बनाकर निकली । अब यात्रा से पहले सोशल मीडिया का लाभ लेते हुए ट्रेन का समय देखा कब आ रही तो दिखाया ,एक घंटे देरी से आयेगी । सोचा अब आराम से चला जायेगा। बेटियो ईशा रतन मीशा रतन ने कहा था हम चलेंगे स्टेशन छोड़ने तो उनका इंतजार करने लगी । छोटे बच्चों की जैसे बार बार टायलेट देखी जाती है वहीं आदत मोबाइल की हो गयी है। वह भी जब ट्रेन का पता करना हो, तो और भी ज्यादा।फिर से फोन देखा अरे बाप रे। ट्रेन तो सही समय पर आ रही है। तुरन्त एक घुंट चाय पिया । बाकी थरमस में रखी बेटे को स्कूटी पर पीछे बैठाकर चल दिए चारबाग रेलवे स्टेशन।

रेलवे स्टेशन पर पता किया की श्रमजीवी १२३६२ किस प्लेटफार्म पर आयेगी तो लिखा दिखा ४ नंबर पर, लेकिन रेलवे के अनाउंसमेंट की आवाज आयी प्लेटफार्म नंबर ५ पर आने की सूचना दी गई। बस यही से गड़बड़ शुरू हुई। एक्सलेटर से चढ़कर जब प्लेटफार्म उतरी तो देखा श्रमजीवी १२३६१--१२३६२ प्लेटफार्म पर खड़ी है। जो पटना से दिल्ली जा रही थी यह पढ़ा नही। बेटे के साथ दौड़ कर ट्रेन मे चढ़कर सीट के पास पहुंच गयी लेटी महिला को उठने के लिए कहा ।उसने कहा यह हमारी सीट है।

मैने अपना टिकट दिखाया सबने कहा की टी०टी० को आने देते हैं । मैंने कहा ठीक है । तभी ट्रेन ने सीटी बजा दी ।बेटे को कहा जाओ कहकर,उसे वापस भेज दिया था।जब ट्रेन चली तो देखा यह तो उल्टी दिशा में जा रही तुरंत पूछा कहां जा रही सबने कहा दिल्ली। मैंने कहा नहींईईईईईई रोको इसे, मुझे गहमर जाना है । सबने कहा आगे रुकेगी हरदोई में। मैंने तुरंत ट्रेन से कूदने का फैसला किया। पहले पीठ का बैग प्लेटफार्म पर फेंका । जब मैं कूदने लगी तो लोगो ने मुझे पकड़ लिया की ट्रेन की स्पीड बढ़ गयी है । मैंने कहा मेरा बैग फेंक देना उनको धक्का देकर कूद गयी संकटमोचन का नाम लेकर। सबने कहा औरत ट्रेन के नीचे आ गयी क्योंकि मैं कूदने पर प्लेटफार्म पर लेट गयी थी ।

अपने मरने का सुनकर तुरंत खड़ी हो गयी तो देखा मेरा ट्राली बैग भी कूदकर पीछे-पीछे आ रहा है । प्लेटफार्म पर सब लोगो ने मेरे पीछे आकर मुझे घेर लिए ।मै सबसे कह रही हटो मेरी ट्रेन आ रही है छूट जायेगी । १२३६१--१२३६२ पटना से दिल्ली,श्रमजीवी ट्रेन के जाने के पांच मिनट बाद मेरी ट्रेन १२३६२/१२३६१ श्रमजीवी दिल्ली से पटना आ गयी जहां मैं कूदी थी ठीक उसी जगह मेरा कोच का डिब्बा आकर लगा मैने ट्रेन में चढ़कर चैन की सांस ली।

थकान हो गयी थी ,दिनभर की तो सुबह गहमर पहुंचने का समय देखकर पैंतालीस मिनट देरी का अलार्म लगा कर आंख बंद कर ली । पर हाय री किस्मत मेरी नींद और आराम का छत्तीस का आंकड़ा है मुझसे लेटते ही शोर होने लगा। कुछ लड़के बैठने के लिए इधर-उधर बैठने की जगह मांग कर शोरकर रहे थे।

मेरे आस-पास के दानदाताओं ने उनको बैठा लिया। बैठकर वह शान्त तो हो गये लेकिन फिर उनकी बाते शुरू हो गयी जिसको आधा घंटा सुनने के बाद मुझे फर्जी फोन मिलाना पड़ा रेलवे पुलिस को कुछ लोग मेरी सीट पर शोर कर रहे हैं । तब वह सब शांत हुए ।अब नया शोर

मोबाइल पर गाने शुरू कर दिया फिर थोड़ी देर बाद मैंने दो ईयर फोन निकाले और उनको कहा की भाई सौ-- सौ रुपये दे ,दो यह लेकर कान में लगाओ रात भर कया ज़िन्दगी भर गाने सुनो तब जाकर फोन बंद हुआ। रात में कंबल निकालने लेटने के लिए बाकी ऊपर की बर्थ के लोग उतरते चढ़ते रहे। जिसके कारण रात १:०० बजे के बाद सो सकी। बीच में सुल्तानपुर और बनारस मे शोर से उठना पड़ा। जैसा सोचा था एक घंटा लेट ट्रेन गहमर पहुंची।एस- ४ में हरदोई राम बोला शर्मा पागल जी के साथ चार लोग गहमर के लिए बैठे थे बात हुई थी उनसे।

गहमर पहुंच कर सभी प्लेटफार्म पर मिले। प्लेटफार्म पर एक बच्चे के साथ महिला को दरवाजे के उल्टा जाते देखा तो उसे बताया रास्ता उधर है। वाट्स एप पर मैसेज देखा माधुरी मधु कुशीनगर का की वह गहमर प्लेटफार्म पर है कोई है साथ का तो हमें भी ले ले।उनको स्टेशन के बाहर बुलाया क्योंकि मैं हरदोई के चारों लोगों के साथ चाय के लिए पहुंच गयी थी।

सभी लोग चाय पीकर चला पडे १० वें गोपालराम गहमरी साहित्य और कला महोत्सव आयोजन स्थल की तरफ। पुरुष लोग पुरुषों के कमरों मे। मै और माधुरी महिलाओं के कमरे में पहुंच गए। वहां सभी नये लोग दिखे मैंने सोचा सबसे बाद में परिचय तो हो , ही जाएगा। इसलिए आराम करना ठीक लगा। लेकिन नहीं मैंने बताया है ना कि मेरा आराम और नींद का छत्तीस का आंकड़ा बताया है ना यहां भी वही हुआ। महिलाओं की सुबह-सुबह लाईन लगी थी टायलेट और नहाने के लिए जिसके लिए ना खत्म होने वाली लम्बी बातचीत चलने लगी। सबकी सुन कर मेरा पेट बोला समझ नहीं आता क्या तुम कब खाली होंगे। फिर क्या रजाई लपेट किनारे किया। चल दिए अखंड गहमर आवास पर। ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी। बाहर ही व्यवस्था के चलते आराम दायक स्थिति में आ गयी।

पुनः महिलाओं के कमरे में आयी तो पानी ना होने का दुःख बांटा जा रहा था। फिर मैंने अखंड गहमरी जी को फोन लगाकर स्थिति से अवगत कराया। लाईट ना होने के कारण आधा घंटे बाद पानी उपलब्ध हो गया जो रात को किसी के द्वारा नल खुला छोड़ देने के कारण टंकी खाली होने का कारण बना। हमेशा की तरह सर्दी में नहाने के लिए गर्म पानी भगोनै में गर्म हो रहा था। घुमाते टहलते वहां संतोष शर्मा शान हाथरस से आकर मुझे मिली। अपने साथ अखंड गहमर आवास ले आयी, मै भी अपने कपड़े लेकर चल पड़ी गंगा नहाने। फिर वही तो गहमर आवास के नल से निकलते ठंडे गंगा जल से स्नान ध्यान करा। पिताजी का आशीर्वाद लेकर लगे पेड़ों के हरसिंगार गुड़हल तुलसी के पत्तों का पानी बनाकर पिया। कुछ देर बाद चाय चाय की आवाज आयी।चल पड़े नाश्ते की मेज पर। चाय, चना, हलुआ से तृप्त होकर आयोजन स्थल पर सभी आ जमे। कार्यक्रम का उद्घाटन होने के पश्चात मेरे मंच संचालक पर संस्मरण लेखन पर कार्यशाला प्रारम्भ हुई।कार्यशाला के पश्चात वरिष्ठ जनो का उद्बोधन हुआ।

दोपहर भोजन में दाल-चावल,दो तरह की सब्जी ,सलाद ,अचार के खाने के बाद , दूसरे सत्र में मेरी लोकनृत्य पर कार्यशाला आयोजित हुई। मेरे बाद आये साहित्यकारो में क्रमशः डा ऊषा किरण के उद्बोधन के साथ लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए। । शाम हेल्थ ममता सिंह के सौजन्य से स्वास्थ्य और हेल्थ का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

रात्रि भोजन के बाद मेरा लोक नृत्य, महिलाओं का रैम्प वहक, गायन,भजन , काव्य पाठ आदि की संध्या सजी जो देर रात तक चलती रही। । दूसरे दिन के आयोजन में मां गंगा के घाट पर जाकर स्नान करने का था जो अपने समय से दो घंटे की देरी से शुरू हुआ। वहां स्नान ध्यान करके सभी ने प्रस्थान किया मां कामाख्या दर्शन के लिए मंदिर की तरफ। मां कामाख्या के दर्शन के पश्चात मंदिर परिसर में ही सबने अपने-अपने उद्‌गार व्यक्त किये गीत भजन और कविता से। सभी का सम्मान मंदिर के महंत ने मां कामाख्या की चुनरी उढ़ाकर किया।

कामाख्या मंदिर परिसर में ही चाट का आनन्द लेकर वापस आकर बैठ गये , मां कामाख्या महाविद्यालय परिसर आयोजन स्थल पर। जहां नवंबर में गहमर मे आयोजित शार्ट फिल्म कार्यशाला में बनी शार्ट फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। जिसमें ब्लड डोनेशन को खजुराहो फिल्म उत्सव में अवार्ड भी मिला। इस फिल्म में लखनऊ के तीन कलाकारो ने काम किया है। मैंने इस कार्यशाला में प्रशिक्षण प्रदान किया था।

फिल्म प्रदर्शन के बाद कलाकारो ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। अखंड गहमरी जी का धन्यवाद किया की मात्र ढाई हजार में एक सप्ताह तक रहने और खाने के साथ छोटी-छोटी बातों को बारीकी से सिखाना बहुत ही अच्छा रहा।बड़े शहरों में मोटी फीस लेकर भी वह नहीं सिखाते तो अखंड गहमरी जी ने सिखाया।। दोपहर के सत्र के बाद मैंने वापसी की तैयारी करली क्योंकि मुझे छुट्टी नहीं मिली थी। रात्रि भोजन करने का समय नहीं था। इसलिए रात के खाने में चोखा बाटी बन रहा था जो मैंने अपने लिए पैक कर लिया।गहमर की ट्रेन छोड़कर,करहिया से जनशताब्दी ट्रेन लेना पड़ा। वहां से दीनदयाल उपाध्याय स्टेशन पर आकर एकात्मता ट्रेन पर बैठ गयी जिसमे बैठकर लाया हुआ चोखा बाटी खाया क्योंकि भाग भागकर भूख भी तेज लगने लगी थी। मुझे रायबरेली स्कूल भी पहुंचना था। आधा घंटा देर से रायबरेली पहुंचीं। स्कूल का समय ७:२० था। तो स्टेशन पर ही लेटने का फैसला कर लिया। ६:३० बजे थोड़ा उजाला होने पर स्टेशन पर ही ब्रश करके बाहर आयी। स्टेशन से बाहर आकर चाय पीकर आटो में बैठी तो आटो वाले ने कहा अभी ट्रेन आ रही है सवारी लेकर जायेंगे। जल्दी नहीं करियेगा ।

मैंने उसको तुरंत किराया पकड़ा

दिया, क्योंकि मुझे भी जल्दी नहीं थी। पन्द्रह मिनट बाद स्कूल के पास पहुंच गयी । गार्ड से जिस बिल्डिंग में मेरा कमरा था उस बिल्डिंग का ताला खोलने को कहा तो ना-नुकुर करके उसने ताला खोला यह कहकर इतना जल्दी ताला खोलने का आदेश नहीं है। बच्चे ना जाये अंदर ध्यान रखिएगा। मैंने कहा ठीक है। वही खुद बाथरूम में स्नान ध्यान करके स्कूल के लिए तैयार होकर पहुंच गयी अपने ड्यूटी स्थल पर दूसरे दिन से जाड़े की छुट्टी होनी थी इसलिए बच्चों की आधे दिन की छुट्टी हो गयी । शिक्षकों की मीटिंग शुरू हो गयी। हिन्दी टीचर ने चाय भिजवा दी। पास में रखी पूड़िया खाकर बैठे रहे। शाम को प्राइवेट वैन से लखनऊ तेलीबाग वहां आटो से चारबाग जहां भूख बढ़ चुकी थी ।तो पानी बतासे खाये। फिर दूसरा आटो से हनुमान सेतु पुल पहुंची । संकटमोचन हनुमान जी को सही सलामत वापस घर लाने का धन्यवाद किया। बेटी मीशा को फोन किया लेने आओ तो उसके समय का ध्यान करके चाय और पकौड़ी ले ली । आश्चर्यजनक रूप से मीशा समय से पहले आ गयी जल्दी जल्दी चाय पी कर स्कूटी थाम ली ।और इस प्रकार मेरी २० दिसंबर से २३ दिसम्बर तक आयोजित १० वे गोपालराम गहमरी साहित्य और कला महोत्सव २०२४ की यात्रा संपन्न हुई। जय श्री राम संकटमोचन हनुमान जी ने जैसे मेरे कष्ट दूर करे वैसे सबके दूर करें।

ज्योति किरण रतन
लोकनृत्य कलाकार
लखनऊ(उ0प्र0)
94159 10781

कब आ गया गहमर

कवि और कवयित्रीयों के बीच मुझे रहने और उनके अनुभवों को जानने का मौका मुझे पहली बार माँ कामाख्या की धरती गहमर में मिला। पहला दिन शुक्रवार २० दिसम्बर को मैं गहमर पहुँची। रास्ते में फिक्र हो रही थी कि कहाँ जाना है? जगह कैसा होगा? लोग कैसे होगें? मैं तीन दिनों तक वहाँ रह पाँऊगीं कि नहीं ? सब सोचते-सोचते ट्रेन कब गहमर पहुँच गई पता ही नहीं चला।

मुझे निमंत्रण देने वाली मिन्टू दी, उषा दी, बहन अनन्ता साथ उतरे। हमारी रिस्पेक्ट बढ़ाने वाले आदरणीय अखंड प्रताप सिंह जी हमें खुद लेने आये थे। घर जा कर हम उनकी सुन्दर, सुशील, कर्मठ पत्नी से मिले जो घर में किचन व्यवस्था सम्भाली हुई थी। उनका स्नेह माँ अन्नपूर्णा के स्वरूप लगता था। पूरा परिवार दिल से सभी आगंन्तुकों की खातिरदारी में लगा हुआ था। जैसे बहुत दिनों का बिछ़ड़ा परिवार आया हो। कार्यक्रम की शुरूआत आर्चाय धर्मेन्द्र जी के सुन्दरकांड पूजन से हुआ। काव्यपाठ, रैंपवाक, नाटक जैसे कार्यक्रम बहुत लुभावने थे।

२२ दिसम्बर की शुरूआत गंगा स्नान, नौका बिहार और माँ कामाख्या दर्शन पूजन से हुआ। २४ दिसम्बर को बनारस में काशी विश्वनाथ जी के दर्शन हुए और एक एक कर के सभी आगंतुक अपने गतंव्य स्थान प्रस्थान करने लगे।

अखंड जी और अखंड जी के परिवार का द्वारा जो स्नेह मिला वह अतुलनीय, प्रेरणादायक रहा।समस्त उपस्थित सहभागियों को आयोजन के सफल समापन की बधाई एवं असीम शुभकामनाएं।

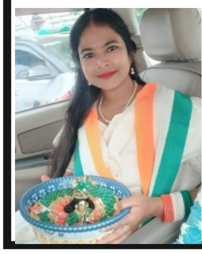

संगीता गुप्ता
पोस्ट ऑफिस दानापुर,
बिहार
7631 469 269

एवरग्रीन शार्ट-फिल्म प्रोडक्शन
भगवानपुर, लंका वाराणसी
9289615645
शार्ट फिल्मों में अभिनय, मॉडलिंग
विज्ञापन कार्य,प्रशिक्षण एवं
अपनी कहानी पर शार्ट-फिल्म निमार्ण
के लिए तत्काल मिलें।

शब्द-संधान : शब्दों के सम्यक् प्रयोग का विवेचन करती पुस्तक-प्रमोद दीक्षित मलय

शब्द केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, अपितु जीवन के संगीत और रचनात्मकता के राग का प्रतीक भी होते हैं। अर्थ की धरोहर लिए हुए ये शब्द न केवल लोक-चेतना को परिष्कृत करते हैं, बल्कि उसे परिमार्जित भी करते हैं। हम जानते हैं कि परस्पर पर्याय होने के बावजूद शब्दों के अर्थ में सूक्ष्म भिन्नताएँ होती हैं। यह भिन्नता, किसी शब्द के पद या वाक्य में सम्यक् प्रयोग से पाठक के मन-मस्तिष्क में एक सजीव चित्र की भांति अर्थ का अंकन करती है। जहाँ उपयुक्त शब्द-प्रयोग रचना की गुणवत्ता को सरसता और प्रवाह के साथ पाठकों तक पहुँचाता है, वहीं अनुचित एवं अनुपयुक्त शब्द-प्रयोग न केवल अर्थ के प्रकटीकरण में बाधा डालता है, बल्कि कई बार हास्यास्पद स्थितियाँ भी उत्पन्न कर देता है।

लेखन में शब्दों के शुद्ध, सार्थक और उपयुक्त प्रयोग की आवश्यकता पर बल देती पुस्तक 'शब्द-संधान' इन दिनों साहित्य प्रेमियों और शब्द साधकों के बीच चर्चा का केंद्र बनी हुई है। यह कृति न केवल विद्वज्जनों, साहित्यिक मनीषियों, विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए उपयोगी है, अपितु सामान्यजन के लिए भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। विशेष रूप से यह पुस्तक उन व्यक्तियों के लिए अपरिहार्य है, जिनका कार्य संवाद और संप्रेषण से जुड़ा है, जैसेदृ मीडिया कर्मी, राजनेता, वकील, रंगमंचीय कलाकार, उपदेशक, संत इत्यादि।

'शब्द-संधान' केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि सार्थक अभिव्यक्ति और शुद्ध संप्रेषण की दिशा में एक मार्गदर्शिका है। पुस्तक की विषयवस्तु तीन खंडों में विभाजित है। खंड (क) शब्द-संधान, खंड (ख) शब्द-संधान के सूत्र तथा खंड (ग) शब्द-संकलन। प्रथम खंड में शब्दों के उचित प्रयोग पर १०० अध्यायों में विस्तृत विवेचन मिलता है। प्रत्येक अध्याय में समानार्थी, समानोच्चारित तथा लेखन एवं बोलचाल में सामान्यतः व्यवहृत ऐसे शब्दों को लिया गया है, जिनके प्रयोग में प्रायः त्रुटि होती है, जैसेदृ अनुदित और अनूदित, शैक्षिक और शैक्षणिक, सपत्नीक और सपत्नी; नृत्त और नृत्य, बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा और प्रतिभा, पुरुष और परुष; कठिन और कठोर, स्वागतम् और सुस्वागतम् , अनभिज्ञ, अभिज्ञ, अज्ञ, विज्ञ और ज्ञ, खोज, गवेषणा, शोध, आविष्कार और अनुसंधान, जयंती और जन्मोत्सव, सृजन और सर्जन का पेंच, कृति, कृत्ति और कृती, कोटि, श्रेणी और वर्ग, अनशन, उपवास, व्रत और भूख हड़ताल इत्यादि। इन सौ अध्यायों में सम्मिलित और विवेचित शब्द पाठक के सम्मुख उनकी पूरी अर्थवत्ता के साथ उपस्थित होते हैं, जिससे अर्थ एवं प्रयोग की दृष्टि से महीन अंतर भी सुस्पष्ट हो जाता है।

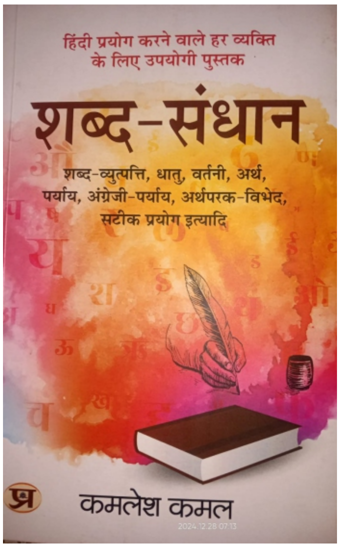

अनुभूत सत्य है कि न केवल लोकजीवन के परस्पर मौखिक संवाद में अथवा वार्ता के क्रम में, अपितु लेखन में भी साहित्यिकों द्वारा बहुधा त्रुटिपूर्ण शब्द व्यवहृत होते हैं, जिसके कारण व्यक्त भाव अनर्थकारी हो जाते हैं। उदाहरण के लिएदृ अर्थी और अरथी समानोच्चारित होने के बावजूद अर्थ में बड़ा अंतर रखते हैं। असावधानी या अज्ञानवश इनका अनुचित प्रयोग अर्थसिद्धि में समर्थ नहीं हो सकता, यह समझना चाहिए। विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि पाठक इन सौ अध्यायों से गुजरते हुए शब्द-सम्पदा अर्जित करता चलता है और भाषा-संवर्धन के प्रति उसका अनुराग भी बढ़ता जाता है। लेखक का मत हैदृ "सटीक अथवा समुपयुक्त शब्द-प्रयोग से ही किसी भाषा का प्राण-तत्व अक्षुण्ण रहता है।"

निश्चित ही, शब्दों के साधु और सुसंगत सम्यक् प्रयोग एवं व्यवहार से ही भाषा की सम्प्रेषणीयता प्रभावी होती है और वह लालित्यपूर्ण एवं सहज प्रवाहमयी बनती है।

द्वितीय खंड (ख) के अंतर्गत आठ अध्याय जहाँ अपनी शब्द-सुवास से पाठकों के मन-मस्तिष्क को सुरभित करते हैं, वहीं बुद्धि के कपाट खोल अचम्भित भी करते हैं कि कैसे कुछ शब्द अपने सन्निहित अर्थ के विपर्यय अर्थ में प्रयुक्त हो, हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न कर देते हैं। उदाहरण के लिए, कृष्णा और सूर्या को ही लीजिए।

बच्चों को बड़ों द्वारा लाड़-दुलार से पुकारे जाने वाले ये दोनों शब्द प्रायः हमारे पड़ोस में मिल जाते हैं। अभिभावकों को नहीं ज्ञात होता कि कृष्णा का अर्थ द्रौपदी है, कृष्ण नहीं। इसी तरह सूर्या, सूरज नहीं है; बल्कि उनकी पत्नी का नाम है। उपरोक्त तो अपने शुद्ध रूप 'उपर्युक्त' को बहुत पीछे धकेल लगभग हर शासकीय-विभागीय आदेश-पत्रों में महिमा मंडित हो रहा है। ऐसे ही पत्रों और रपटों में उल्लिखित 'दिनाँक' मानो भाषाविदों को चिढ़ा रहा हो, जिसे दिनांक होना चाहिए था। साम्यता, औदार्यता, सौंदर्यता, स्तनपान, गोकशी, समंदर, स्वादिष्ट, नवरात्रि, अभ्यारण्य, अंतर्ध्यान आदिक अशुद्ध शब्द जन-मानस में भाषिक सजगता की अपेक्षा करते हैं। इन आठ अध्यायों में लोकजीवन में कुछ बहु प्रचलित शब्दों तथा देशज-विदेशज शब्दों के निर्माण की वार्तनिक यात्रा अंकित है। अंतिम खंड (ग) में पर्यायवाची, विलोम तथा श्रुति-सम भिन्नार्थक शब्दों की विस्तृत सूची दी गई है जिसमें क से त्र वर्ण तक के ३५१ शब्दों के पर्यायवाची शब्द, ६०० विलोम शब्द तथा ४६० श्रुति-सम भिन्नार्थक शब्दों की सूचिका पाठकों के लिए शब्दों के अर्थ का विस्तृत फलक प्रदान करती हैं।

पुस्तक 'शब्द-संधान' पढ़ते हुए लगता है कि जैसे कोई शिक्षक अपने स्नेहपात्र विद्यार्थियों के सम्मुख शब्द-रचना के सूत्रों को चित्र-पट पर प्रकाशित कर रहा हो। मेरे पास हिंदी व्याकरण एवं शब्दकोश की एक दर्जन पुस्तकें होंगी; पर भाषाविद् एवं वैयाकरण कमलेश कमल की कृति 'शब्द-संधान' अपनी शोधपरक अंतःसामग्री, सम्यक् शब्द विवेचन एवं अर्थ-स्पष्टता तथा रुचिपूर्ण शैली के कारण मुझे अत्यंत महत्त्वपूर्ण लगती है। यह शब्दों के शुद्ध-अशुद्ध उलझाव का संजाल ऐसे काट देती है, जैसे घने बादल को प्रकाश की किरण। भाषिक-जटिलता का व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती अनुपम कृति 'शब्द-संधान' विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं सामान्य पाठकों के लिए तो बहूपयोगी है ही, साथ ही लेखकों-संपादकों के लिए भी अत्यावश्यक और मार्गदर्शक है। मुझे विश्वास है, 'शब्द संधान' अपने ध्येय में सिद्ध हो शब्दानुशासन के नवल पथ की सर्जना कर भाषा संरक्षण एवं सम्वर्द्धन का रुचिर रसमय परिवेश रचेगी। आकर्षक कवर के साथ प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा दिसम्बर २०२४ में प्रकाशित 'शब्द संधान' प्रकाशन के पूर्व ही अहनलाइन प्लेटफार्म पर शीर्ष पुस्तकों में शुमार हो गई थी। नेचुरल शेड पीले कागज के ३०४ पृष्ठों में बिखरी शब्द-संपदा प्रत्येक परिवार में होनी चाहिए ताकि हिंदी भाषा के परिष्कार एवं समृद्धि की वेगवती धारा सतत प्रवाहमयी रहे।

कृति : शब्द-संधान
लेखक - कमलेश कमल
प्रकाशक - प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य - ५००/-

समीक्षक शिक्षक हैं और भाषा संवर्धन पर काम कर रहे हैं। बांदा, उ.प्र. मोबा. – 9452085234

लोहड़ी

लो निकल पड़ी बच्चों की टोली
घर-घर जा माँगने लोहड़ी
कराने याद दुल्ला-भट्टी की कहानी
सुंदरी-मुँदरी गाने की जबानी

सजे-धजे से खेत और क्यारी
इठलाई सी गेहूँ -जौ की बाली
पीली धरा झूमे मतवाली
चहुँ ओर छाई हरियाली

नभ में दूर पतंगों की रंगोली
काटने पतंग की वो होड़ा-होड़ी
ढोल-नगाड़े संग मतवाली टोली
कहीं भांगड़ा तो कहीं टप्पे व बोली

जले अलाव लो भगाने सर्दी
बंटे तिल, गुड़ गज्जक और मक्की
सजे-धजे से नवयुवक-युवती
हर्षित हृदय और चहुँ ओर है मस्ती

पावन-पुण्य पर्व है लोहड़ी
सद्भाव-शान्ति का मर्म है लोहड़ी
दान-पुण्य की मिसाल है लोहड़ी
मधुर मिठास का भाव है लोहड़ी

है पर्व एक पर विभिन्न है बोली
कहीं संक्रांत तो कहीं बीहू है लोहड़ी
कहीं पोंगल तो कहीं खिचड़ी है लोहड़ी
संस्कृति की अमिट छाप है लोहड़ी

किरण बाला
चण्डीगढ़
79 7390 9907

सभी हमारे किरदार में खुद ही खो

जासूसी शब्द के जनक कहे जाने वाले जासूसी उपन्यासकार गोपालराम गहमरी जी की पावन स्मृति में सैनिकों की वीर भूमि गहमर से प्रत्येक वर्ष होने वाले कला साहित्य के महा-महोत्सव में लगभग चार वर्षों की लगातार अपनी सहभागिता को देखती हूँ तो दोनों ओर से प्रेम आशीर्वाद एवं वात्सल्य भरे अपनत्व के सिवा कुछ नजर नहीं आता।

इस सफल आयोजन का नेतृत्व भले ही संपादक प्रकाशक श्री अखंड प्रताप सिंह जी करते हों लेकिन उस नेतृत्व की प्राणशक्ति उनकी पत्नी ममता सिंह और पूरा परिवार है।यथा नाम तथा गुण वाली कहावत को चरितार्थ करती ममता जी का आने वाले (जानकर या अजनबी) प्रत्येक कलाकार साहित्यकार के प्रति जो अपनत्व का व्यवहार है उसे शब्दों में गढ़ पाना मुश्किल है।यदि उन सभी का आभार व्यक्त करें भी तो भार लगता है।

२०-१२-२०२४ को पहुँचने से लेकर अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम की रूपरेखा के साथ कुशल संचालन से जो दी गई जिम्मेदारी पूरी की तो वही मन की बात कार्यक्रम में अपनी ओर से कुशल संचालन करने के बावजूद कुछ को शिकायत रही हमसे की किसी को ठीक से बोलने नहीं दिया या कोई बिना बोले ही रह गया।लेकिन मेरा हमेशा से उद्देश्य रहा है कि जो भी कार्य हमें सौपा जाता है उसे हम पूरी निष्ठा से निभाते हैं और वही हमने किया भी।

वैसे तो गहमर आने की मेरी कोई संभावना थी ही नहीं इसका कारण था पारिवारिक और आर्थिक समस्या के साथ स्वयं की मानसिक स्थिति का ठीक ना होना। इसका सबसे बड़ा कारण था मेरे पति महाराज का सड़क दुर्घटना में बुरी तरह से घायल होना।

दूसरी ओर घर में पांच माह की छोटी बच्ची जिसकी जिम्मेदारी भी मुझ पर थी । ऊपर से आकाशवाणी मथुरा के नववर्ष में नवकथा के अंतर्गत कुछ तैयारी करने की टेंशन ....लेकिन इन सब परेशानियों के बीच साहित्य के प्रति जो समर्पण भाव था वह जीत गया और मेरे इष्ट ठाकुर जी की कृपा से सब आसान हो गया

और मै इस महोत्सव के अखंड दीप प्रज्ज्वलन में शामिल हो सकी

हमेशा की तरह इस बार भी बहुत से नये लोगों जो अपने अपने स्तर पर अपनी अपनी विधा में महारथी थे उनसे मिलने का अवसर मिला और सभी से कुछ ना कुछ सीखने को भी मिला

वही उस महोत्सव में

एक सैनिक जो हाड़ कंपा देने वाली बर्फीली चोटी पर देश की सेवा रक्षा करता है कर रहा है वही जब हमारे बीच एक आम नागरिक की तरह हमारे जलपान से लेकर भोजन तक की व्यवस्था करते नहीं थकता फिर हमें ही नहीं किसी और को भी धन्यवाद तक का अवसर नहीं देता तब ऐसे व्यक्तित्व के आगे हृदय नतमस्तक हो जाता है और अंदर से एक ही आवाज़ आती है जय हिन्द जय हिन्द की सेना वही दूसरी ओर एक सख्त सा दिखाई देने वाला फौजी जब अपनी हास्य रचना से हंसाते हंसाते सभी को लोटपोट करते देखते हैं तो दंग रह जाते हैं कि फौजी का ऐसा रूप भी होता है!?यहाँ ये कहना गलत ना होगा कि यदि कार्यक्रम में सौ कलाकार साहित्यकार शामिल थे तो सब के सब अपनी विधा में पारंगत थे।

फिर अपनी एकल प्रस्तुति पर जब माहौल में एक अजीब सी खामोशी देखी तो ऐसा लगा की हमारी कला विधा में बहुत कमी है लेकिन प्रस्तुति के बाद जब तालियों की गूँज उठी तब समझ आया कि सभी हमारे किरदार में खुद ही खो गए थे।

दूसरे दिन की हमारी गजल रचना तो कईयों की जुबान पर रच बस गई और कुछ तो अभी भी गुनगुनाते फिर रहें हैं दर-ब-दर इधर उधर इससे गर्व भी होता है और हंसी भी आती है।

अंत में २०२४ के इस महा महोत्सव को अपनी बहन बेटी की तरह रूंधे गले से विदाई देना तथा कुछ ना देकर भी बहुत कुछ न्योछावर करना अखंड सरजी का हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हमारे आंखों को जल से डबडबा कर गई।ईश्वर इस कला संस्कृति संस्कार और साहित्य के मंच को वर्ष प्रति वर्ष शक्ति संबल और सामर्थ्य प्रदान करें यही माँ कामाख्या और ठाकुर जी से प्रार्थना है

एक बार फिर से सभी के पुनः मिलन एंव आगमन की आशा लिए सभी को राधे राधे

संतोष शर्मा " शान "

हाथरस उ0प्र0

86508 03221

मज़हबों की यात्रा

रेल यात्रा एक ऐसा अनुभव है जिसे हर कोई अपने जीवन में चाहे एक बार ही सही पर ज़रूर करता है। यह यात्रा कभी ना भूलने वाली एक याद बन हमेशा दिल में समाई रहती है क्योंकि इसमें अरमानों को छूने की कोई ना कोई सच्ची कहानी जुड़ी होती है, जिसे शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। रेल यात्रा के माध्यम से हम देश के विभिन्न प्रान्तों के लोगों को जानने,उनके रीति-रिवाज़ों को समझने के साथ-साथ नए-नए दृश्यों और अनुभवों का आनंद लेने का अवसर मिलता है। रेल यात्राओं से हम संवेदनशीलता, सहयोग और तालमेल को महसूस करते हैं जो हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए अति महत्वपूर्ण है। हमारे देश की राष्ट्रीय सद्भावना में रेल एक अहम भूमिका निभा रही है। रेल में हम बिना किसी धर्म,लिंग,भेद-भाव,ऊंच-नीच, ईर्ष्या के बिना अपनी यात्रा करते हैं।

वो रेल यात्रा मेरे लिए एक अद्वितीय अनुभव था। जिस में मन की भावनाएं,किसी की पीडा, करुणा, अहसास और जिम्मेवारी के साथ एक अद्भूत सुंदरता की छवि छिपी हुई थी। मैं जब भी उन लम्हों को याद करता हूँ तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं और उस रेल यात्रा का हूबहू दृश्य मेरी आँखों के समक्ष एक फ़िल्म की भाँति चलने लगता है। उस यात्रा के सारे सह-यात्री जो उस वक्त मेरे साथ सफ़र कर रहे थे मानो फिर उसी सफ़र को दोहराने के लिए निकल पड़े हों। मेरा मन-मस्तिक फिर से उन्हीं पलों में अठखेलियाँ लेने लगता है।

मैं उस दिन अत्याधिक जल्दी में था। मैंने दोपहर के डेढ़ बज़े तक ऑफिस के सारे काम निपटाए और दफ़्तर से बाहर आ गया। मुझे नई दिल्ली से ऊना (हिमाचल) की ट्रेन पकड़नी थी। मैंने एक ऑटो वाले को हाथ दिया और उसे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर छोड़ने के लिए कहा। वह मान गया और जाने के एक सौ रुपये माँगने लगा। मैंने उसे कहा भाई यह तो ज्यादा है। मैं अस्सी रुपये देता हूँ चलना है तो चल बाकी तेरी मर्ज़ी। ऑटो वाला भला आदमी था और वह झट से मान गया और मुझे कहने लगा साहब चलो, बैठने से तो अच्छा है कि हम चलते ही रहें। उसकी बात में बहुत गहराही छुपी हुई थी।

ऑटो वाला फिर मेरी देखकर कहने लगा बैठो साहब। मैं तुरंत अहटो में बैठ गया। हमारा ऑटो भीड़ से बचता हुआ आगे बढ़ रहा था। लाल क़िले से जैसे ही हम आई.टी.ओ. के पास पहुंचे तो देखा कि यहाँ तो लंबा ज़ाम लगा हुआ था पर ख़ैर धीरे-धीरे हम अपने गंतव्य की ओर अग्रसर थे।आई.टी.ओ. चौंक के सामने लगा बड़ा सा होर्डिंग दिल्ली का तापमान दस डिग्री दिखा रहा था। हवा का एक ठंडा झोंका मेरे मुख पर पड़ रहा था।

मैंने ऑटो के लगे शीशे में देखा कि मेरा चेहरा लाल हो गया था और आंखो से थोड़ा पानी बह रहा था। खैर ऑटो वाले ने अपनी फुर्ती दिखाते हुए अत्यधिक यातायात के बावजूद समय पर नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंचा दिया।

मैंने सौ का नोट ऑटो ड्राईवर के हाथ में थमा दिया और उसने बीस का नया नोट मेरे हाथ में दे दिया। मैंने उसे धन्यवाद कहा और फिर भागता हुआ स्टेशन के गेट पर लगी हुई एक लंबी कतार में लग गया। यहाँ स्वचालित स्कैन मशीन लगी हुई थी। लोग अपना सामान बारी आने पर एक-एक करके उसमें डालते जा रहे थे और दूसरे छोर से निकाल कर प्लेटफार्म की ओर बढ़ते जा रहे थे।

अपनी बारी आने पर मैंने भी झट से अपना बैग स्वचालित स्कैन मशीन में डाला और फिर अगले छोर से लेने बाद मैं प्लेटफार्म नंबर सात पर पहुंचा। मुझे पंजाब के जिले रोपड़ जाना था। दो बज के पच्चीस मिनट हो चुके थे। मेरी ट्रेन का प्रस्थान समय दो बज़ के पैंतीस मिनट था। प्लेटफार्म पर पहुँचते ही मेरे मन में उम्मीद और उत्साह की लहरें दौड़ने लगी। प्लेटफार्म पर लोगों का जमावड़ा लगा हुआ था और सब अपने सामान को संगठित कर रहे थे। खानपान के स्टालों पर बहुत भीड़ थी शायद साथ लगते छह नंबर प्लेटफार्म पर अभी-अभी कोई गाड़ी आई थी जिस कारण यात्रीयों में सामान लेने के लिए कौतूहल मचा हुआ था।

मेरी साँसे अभी भी फूली हुई थी। बिना समय बर्बाद किए मैं अपने डिब्बे की ओर जा रहा था। कुछ क्षणों पश्चात मैं हाँफता हुआ अपने डिब्बे के पास पहुँचा और तत्पश्चात मैं अंदर जाकर अपनी सीट तलाशने लगा। कुछ समय उपरांत फिर मैं खिड़की के पास अपनी सीट पर जाकर बैठा तभी गाड़ी की एक लंबी सीटी बजी और मेरा ध्यान बाहर की ओर गया। मैं देखकर घबरा गया कि एक गर्भवती महिला जिसके साथ दो बच्चे थे वह भागती हुई ट्रेन में चढ़ने के लिए आ रही थी।इतने

में ट्रेन की एक और सीटी बजी । मैं थोड़ा परेशान हो गया ओर भागकर अपने डिब्बे के गेट पर गया और मैंने तुरंत उस गर्भवती महिला को ट्रेन में चढ़ने के लिए उसकी मदद की और साथ ही उसके दोनों बच्चों को डिब्बे में चढ़ा दिया ।

फिर एक-दम ज़ोर का झटका लगा और गाड़ी चल पड़ी । मैंने गुस्से से उस औरत की ओर देखकर कहा बहन जी ! आपको थोड़ा जल्दी आना चाहिए । आपको इस हालत में ऐसा जोख़िम नहीं लेना चाहिए था । यदि कोई अप्रिय घटना हो जाती तो आपके लिए तो मुश्किल हो ही जाती और तुम्हारे परिवार वालों के लिए भी । वह औरत चुप-चाप रही । मैं यह कह कर अपनी सीट पर आ कर बैठ गया । ट्रेन आहिस्ता-आहिस्ता प्लेटफार्म से निकलने लगी । वह औरत भी मेरे आगे एक खाली सीट देखकर अपने बच्चों के साथ बैठ गई ।

लगभग बीस मिनट के बाद ट्रेन सब्जी मंडी स्टेशन पर आकर रुक गई और जहां से बहुत सी सवारियाँ आकर ट्रेन में बैठने लगी । इतने में गरमा-गर्म, चाय ले लो और चाय-चाय करता हुआ एक चाय विक्रेता आया । मुझे हल्की-हल्की ठंड लग रही थी । मैंने उसे कहा भाई एक कप चाय देना । उसने एक कप चाय मुझे दी । इतने दो-तीन और लोग भी चाय मांगने लगे । मैं चाय की चुसकियाँ लेने लगा । इसके बाद मैंने अपने बैग में से एक किताब निकाली और उसके पृष्ठ पलटने लगा । कुछ देर बाद मैं अपने साथ बैठे सहयात्रियों से बात-चीत करने लगा ।

मेरे साथ बैठा एक आदमी थोड़ा परेशान लग रहा था । मैंने हिचकिचाते हुए कारण पूछा तो वह बड़े दुखी स्वर में कहने लगा भाई साहब बात यह है कि मेरी साली की दोनों किडनियाँ फ़ेल हो चुकी हैं और वह कई दिनों से अस्पताल में भर्ती है । परिवार से किसी भी सदस्य की किडनी का मिलाप नहीं हो रहा और ना ही हमें कोई अंग दाता मिल रहा है । परिवार पे बहुत बड़ी समस्या आन पड़ी है । कोई हल नज़र नहीं आ रहा अब तो सिर्फ भगवान का ही आसरा रह गया है ।

मैंने उसे धीरज रखने के लिए कहा और साथ ही बताया कि मैं पिछले पाँच सालों से भारत में अंगदान जागरूकता अभियान पे काम कर रहा हूँ । मैंने उसे बताया कि उसे कैसे किडनी प्राप्त करने के लिए कहाँ और कैसे राष्ट्रीय अंग और उत्तक प्रत्यारोपण संगठन पर रजिस्टर करना है । साथ बैठे लोग हमारी बातें ध्यान से सुन रहे थे ।

फिर मैंने सब को बताना शुरू किया कि कैसे भारत में लाखों ऐसे रोगी हैं जो अपने अंगों की विफलता के कारण दुनिया छोड़ने को विवश हैं । इनके लिए बस अंगदान ही एक उम्मीद की किरण है । अंगदान प्रत्यारोपण नहीं होने के कारण हर साल लगभग पाँच लाख रोगी दुनिया छोड़ने को मजबूर हो जाते हैं । दूसरी ओर हम मरने के बाद अपने अंगों को या तो जला देते हैं या मिट्टी में दफ़ना देते हैं और यह बेशकीमती अंग किसी के काम नहीं आते । कहने का अर्थ हमें मरने के बाद अपने अंगों को दान करके दूसरों को देकर जाना चाहिए ताकि हम मरने के बाद भी अमर होकर दूसरे इंसानों को जिंदगी देने के काम आ सके । साथ बैठे यात्री बड़े उत्साह से मेरी बातें सुन रहे थे ।

मैं अभी यह बात कर ही रहा था कि इतने में टी.टी. आ गया और यात्रियों की टिकट चेक करने लगा । मेरी नज़र टी. टी. के कोर्ट पर लगे बैज पर गई जिस पर लिखा था निर्मल शर्मा ।

मैंने अपनी टिकट बैग से निकाली और टी. टी. को दे दी । उसने मेरी टिकट देखकर अपने चार्ट पर टिक करके मुझे वापस लौटा दी । मेरी अगली कतार में वह गर्भवती औरत भी बैठी हुई थी । टी.टी. ने उससे टिकट मांगी और उसका नाम पूछा । उसने अपना नाम तसलीमा और अपने दोनों बच्चों के नाम राबिया और सुल्ताना बताया ।फिर तसलीमा ने टी.टी. को अपनी टिकट दी जिसे देखकर टीटी थोड़ा गुस्से में आ गया और कहने लगा यह तो दूसरे दर्ज़े का टिकट है और आप वातानुकूलित डिब्बे में बैठे हुए हो । टी.टी. ने उस औरत से कहा कि वह दूसरे दर्ज़े के डिब्बे में चली जाए । उस औरत ने हाँ में सर हिला दिया ।

अब टी.टी. दूसरी सवारियों की टिकट चेक करता हुआ आगे बढ़ने लगा । मैंने उस औरत की ओर सरसरी नज़र दौड़ाई । वह थोड़ी बेचैन नज़र आ रही थी पर मैंने उसकी तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया और मैं सह-यात्रियों के साथ बातों में मशरुफ हो गया ।

मेरी बातों का क्रम निरंतर आगे बढ़ रहा था । मैं अपने राष्ट्रीय अंगदान जागरूकता अभियान के बारे में लोगों से खुल कर बात कर रहा था कि पता नहीं चला कि कब सोनीपत स्टेशन आ गया । मेरे सामने तसलीमा ने अपना सामान उठाया और दोनों लड़कियों को लेकर साथ में लगे दूसरे दर्ज़े के डिब्बे में चली गई । मैंने अपने साथ बैठे लोगों को अंगदान अभियान के संबंधित पैम्फलेट के रूप में प्रसार सामग्री दी ताकि वह ध्यान से दी गई जानकारी पढ़ लें और फैली हुई गलत भ्रांतियों से दूर रहें ।

मेरी बातों से प्रभावित होकर एक नवदंपति जिसका नाम रविंद्र जैन था वह अपनी पत्नी सविता जैन के साथ मेरे विचारों को सराहने लगा । फिर वह मुझे कहने लगा भाई साहब आप देश के अत्यंत ज्वलनशील मुद्दे पर काम कर रहे हो और यह इंसानियत के लिए बहुत बड़ा सार्थक क़दम है । इस कोशिश से प्रतिवर्ष लाखों लोगों की ज़िंदगियाँ बच सकती हैं । फिर उन दोनों ने मुझ से अपने अंगदान करने की इच्छा व्यक्त की ।

मैंने फटाफट अपने बैग से दो अंगदान प्रतिज्ञा फॉर्म निकाले और भर दिए और उन्हें आश्वासन दिया कि जल्दी ही उनके अंगदानी दाता कार्ड पोस्ट द्वारा उनके घर पहुंचा दिये जाएंगे । मेरे साथ बैठे शमशेर सिंह ने भी इस उत्कृष्ट कार्य के लिए अपनी उत्सुकता दिखाई । वह कहने लगा मैं अपनी आंखे दान करना चाहता हूँ ताकि मेरे मरने के बाद मेरी आंखे बेकार ना जाए और यह किसी अंधे इंसान को रोशनी देने के काम आ सके तो इससे अच्छी कोई और बात हो ही नहीं सकती ।

मैंने शमशेर सिंह जी का भी अंगदान प्रतिज्ञा फॉर्म भरकर उसके रजिस्ट्रेशन का काम भी कर दिया । हमारी बातों का सिलसिला चलता जा रहा था और पता ही नहीं चला कि कब अंबाला स्टेशन आ गया । शमशेर सिंह अंबाला स्टेशन आने पर हम सभी से विदा लेकर उतर गया । रविंद्र जैन और सविता जैन को तो ऊना तक जाना था । दोनों ने अपने हाथ जोड़कर शमशेर सिंह को नमस्ते कहा । हम सब ने शमशेर सिंह को धन्यवाद कहा और उसकी इंसानियत के लिए की गई पहल की सराहना की ।

निर्धारित समय तक रुकने के बाद ट्रेन अंबाला स्टेशन से चंडीगढ़ की और चलने लगी । मैं, रविंद्र जैन और सविता बातें करते जा रहे थे । हमारी ट्रेन धूलकोट,लालरु और दप्पर होते हुए चंडीगढ़ पहुँच गई । बहुत सारी सवारियां चंडीगढ़ में उतर गई और कुछ नई सवारियाँ भी चढ़ गई । फिर रविंद्र कहने लगा कि उसकी बीबी यानि सविता का दो दिन बाद ऊना में सरकारी नौकरी के लिए साक्षात्कार है । मैंने सविता को कहा भगवान की कृपा से सब ठीक-ठाक ही होगा । सविता ने मुझे धन्यवाद कहा ।

पाँच मिनट के बाद ट्रेन चंडीगढ़ स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक से अपने अगले स्टेशन के लिए आगे बढ़ने लगी । इतने में टी. टी. निर्मल शर्मा हमारे पास से मुस्कुराता हुआ आगे बढ़कर टिकट चेक करने लगा । तभी एक चाय वाला आया और मैंने उसे तीन कप चाय के लिए कहा ।

जैन दंपति ने मना किया पर मेरे आग्रह करने पर वह मान गए । हम तीनों चाय की चुसकियाँ लेते हुए साहिबजादा अजीत सिंह नगर पहुँच गए । अब काफी सवारियाँ उतर चुकी थी । बाहर सर्दी का प्रकोप अब और बढ़ता जा रहा था । प्लेटफार्म पर बत्तियाँ जल चुकी थी । प्लेटफार्म पर पंछियो के चहकने की आवाज़े आ रही थी,ऐसे लग रहा था कि मानो यह सब भी किसी गंभीर मुद्दे में उलझी हुई हों । लंबी सीटी के साथ एक ज़ोर का झटका लगा और ट्रेन आगे बढ़ने लगी । जैसे ही ट्रेन स्टेशन यार्ड से बाहर हुई तो टी.टी. निर्मल शर्मा भागता हुआ आया और सविता जैन को कहने लगा, बहन जी मेरे साथ पिछले डिब्बे में चलें, एक औरत को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई है । मेरे दिमाग में एकदम तसलीमा का ध्यान आया कि यह ज़रूर वही औरत है । हम सारे दूसरे डिब्बे की और भागे । सविता ने अपने बैग से एक शाल अपने साथ रख लिया । इतने में एक दूसरी औरत चरण कौर ने भी अपने बैग से चादर निकाली और हमारे साथ चल दी । देखते ही देखते एक औरत जिसका नाम दिव्या सलारिया था वो भी साथ होकर तसलीमा की मदद के लिए आगे आ गई । दिखने में कमज़ोर तसलीमा दर्द से कराह रही थी । हम सब ऊपर वाले से दुआ कर रहे थे कि किसी तरह तसलीमा की जान बच जाए । चरण कौर से हालत देखी ना गई । उसकी आंखो में आंसू आ गए थे और वह वाहेगुरु का नाम जपने लगी । तीनों औरतों ने तसलीमा को नीचे लिटा दिया और अपनी समझ से उसकी मदद करने लगी । एक ने तसलीमा को चादर से ढक दिया और वह पास खड़ी हो गई । बाकी दोनों तसलीमा से बातें करने के साथ-साथ ज़रूरी परामर्श दे रही थी ।

साहिबजादा अजीत सिंह नगर और खरड़ के बीच की दूरी तकरीबन बीस किलोमीटर की थी । टी.टी. निर्मल शर्मा ने ज्यादा वक्त खराब ना करते हुए फौरन खरड़ स्टेशन पर ड्यूटी-पे-तैनात स्टेशन मास्टर से फोन पर बात की । बलविंदर कौर ड्यूटी पर थी । निर्मल ने सारी घटना बलविंदर कौर को बताई और तुरंत एक एम्बुलेंस उबलब्ध करवाने के लिए के कहा ताकि समय पर तसलीमा की ज़रूरी मदद की जा सके ।

बलविंदर कौर ने अपनी तरफ से पुरजोर कोशिश की लेकिन कोई हल नहीं निकला और जिसकी पल-पल की जानकारी वह निर्मल को मोबाइल फोन पर दे रही थी । निर्मल ने अंबाला डिविजन के बड़े अफ़सर को भी सारा हाल बताया तो डिविजन के अधिकारी भी हरकत में आए गए और उन्होने पूरी मदद करने के निर्देश दिए ।

उन दिनों कोविड़-१६ का भयंकर समय चल रहा था और कोई किसी के पास आना भी नहीं चाह रहा था पर इसके बावजूद सविता, देवेंद्र,निर्मल, चरण कौर और दिव्या सलारिया ने साहस और मानवता का परिचय देते हुए तसलीमा की पूरी मदद कर रहे थे । दोनों बेटियां राबिया और सुल्ताना मां के बगल में बैठी रो रही थी और हम सब दोनों को सांत्वना रहे थे । जब एम्बुलेंस की कोई बात ना बनी तो डिब्बे में खरड़ निवासी डेविड नाम का आदमी था वह कहने लगे भाई मैं कोशिश करता हूँ ,शायद बात बन जाए । डेविड देखने में सज्जन और समाज में अपना रुतबा रखने वाला व्यक्ति प्रतीत हो रहा था । उसने फोन किया और फिर कहने लगा घबराओ नहीं, मैंने चर्च में बात कर ली है और संयोग से चर्च की एम्बुलेंस और ड्राईवर दोनों उपलब्ध है । आप चिंता मत करें एम्बुलेंस जल्दी स्टेशन पर आ जाएंगी ।हम सब ने चैन की सांस ली ।

दूसरी ओर तसलीमा और उसकी चीख़ों ने डिब्बे के अंदर एक डरावना माहौल बना दिया था । सबके चेहरों पर उदासी के बादल छाए हुए थे । कुछ क्षणों बाद बुरी हालत में तड़पती हुई तसलीमा ने एक बेटी को जन्म दिया । नवजात बच्ची को शाल में लपेट दिया गया । सभी औरतों ने मिलकर तसलीमा और बच्ची को साथ लगते वातानुकूलित डिब्बे में पहुंचाया ताकि इनको कुछ राहत मिल सके । कुछ देर के बाद हमारी गाड़ी मेन लाइन से लूप लाइन पर होती हुई स्टेशन पर आकर रुक गई ।

कुछ ही देर में एम्बुलेंस के हूटर बजने की आवाज़ आने लगी । निर्मल समझ गया कि आपातकालीन स्थिति से

निपटने के लिए जो एम्बुलेंस बुलाई गई थी शायद वह आ रही है। निर्मल ने सब को हिदायत दी अब तसलीमा को जल्दी ही हस्पताल ले जाया जाएगा। फिर जैसे ही निर्मल ने छोटी नवजात बच्ची को उठाया तो तसलीमा कराहने लगी क्योंकि अभी तक नन्ही बच्ची की नाड़ जो माँ के साथ जुड़ी हुई थी वो कटी नहीं थी। निर्मल समझ गया और उसने बेटी को फिर से माँ के बगल रख दिया। हमारे देखते ही देखते कुछ ही लम्हों में एम्बुलेंस स्टेशन के बाहर आकर खड़ी हो गई और उसका हूटर लगातार बजता जा रहा था।

एम्बुलेंस के साथ आई एक नर्स जिसका नाम कैमि था प्लेटफार्म पर आई और पूछने लगी कि मरीज़ कहा है ? हम कैमि के साथ आगे बढ़ते हुए इशारे से डिब्बे की तरफ ले जा रहे थे। कैमि फौरन डिब्बे के अंदर गई और तसलीमा की हालत देखकर कहने लगी कि यह तो आपातकालीन केस है। मरीज़ को जल्दी गाड़ी में डाला जाए। कैमि ने सबसे पहले तसलीमा की नाड़ को काटकर बेटी और माँ दोनों का अलग किया और फिर तसलीमा को स्ट्रेचर पर लिटा दिया।

रविंद्र जैन और डेविड ने दो और आदमियों की सहायता से स्ट्रेचर उठाया और स्टेशन के बाहर खड़ी एम्बुलेंस की ओर चल पड़े। दोनों बेटियां राबिया और सुल्ताना रोती हुई पीछे-पीछे चल पड़ी। टी. टी. निर्मल ने अपनी जेब में से पाँच हज़ार रुपये तसलीमा को दे दिये। मैंने भी अपनी हैसियत के अनुसार कुछ राशि तसलीमा को दी।

रविंद्र और सविता ने कहा कि हम एम्बुलेंस में चले जाते हैं ताकि तसलीमा को अस्पताल में दाखिल करवाया जा सकें। हम सब ने एक दूसरे के मोबाइल नंबर ले लिए और हर तरह से मदद देने आश्वासन दिया। हम सब ने डेविड को तह दिल से शुक्रिया कहा जिस की वजह से टाइम से एम्बुलेंस स्टेशन पर आ गई थी।

सारी औपचारकिताएं निपटाकर कर टी.टी. ने स्टेशन मास्टर को गाड़ी चलाने के लिए कहा। हरा सिग्नल मिलते ही ट्रेन ने सीटी बजाई और ट्रेन अपने गंतव्य को चलने लगी। सब के लिए यह समय बड़ा ही भावुक था और सबकी आखों में नमी थी। रोपड़ पहुँच कर मैं भी ट्रेन से उतर गया।

इस दिन के बाद हम सारे लगातार मोबाइल फोन द्वारा डेविड से तसलीमा का हाल जान रहे थे ताकि यदि उसको किसी चीज की जरूरत हो तो हम पूरी कर सकें। तसलीमा बीस दिन खरड़ अस्पताल में रही और इस बीच डेविड ने अपने अनथक प्रयासों से तसलीमा के पति को ऊना में ढूंढ निकाला और पूरे परिवार को मिला दिया। मेरे पास सविता और देवेंद्र का फोन भी था। मैंने देवेंद्र को फोन करके सविता की साक्षात्कार के बारे में पूछा तो उसने जो बताया उसको सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। रविंद्र जैन ने सविता के कहे अनुसार बताया कि साक्षात्कार में बड़ा सहज़ माहौल बन गया था और बातों ही बातों में सविता ने तसलीमा का सारा वाक्या भी साक्षात्कार में बताया। जब परिणाम आया तो सुनीता के लिए भी बहुत अच्छी ख़बर थी। सुनीता जिस सरकारी नौकरी के लिए साक्षात्कार देने ऊना आई थी, उसी दिन शाम को उसका चयन हो गया और उसे नियुक्ति पत्र भी उसी दिन ही मिल गया था।

कहते हैं ना कि भगवान उन सब की मदद करते है जो दूसरों में भगवान को देखते हैं।मैं अपने बिस्तर पर लेटा हुआ यह सोच रहा था कि इस यात्रा ने कितने सारे विभिन्न धर्मों के लोगों को मानवता के लिए एकजुट कर दिया था। मैं देख रहा था कि रेल यात्रा का यह कैसा संजोग बन गया था कि किस तरह एक मुस्लिम औरत और उसके दो बच्चे ने किस तरह असल जिंदगी में हम सब को एक राष्ट्रीय सद्भावना में बांधकर अनेकता में एकता का एक अलग ही अध्याय लिख दिया था। राष्ट्रीय एकता के बारे में बचपन में पढ़ा करते थे पर इस सफ़र ने इसके साक्षात दर्शन करा दिए थे। इस घटना ने सभी धर्मों के लोगों को एक साथ एकता के सूत्र में पिरो दिया था। जिस तरह से तसलीमा की तीसरी बच्ची का जन्म हुआ जिसमें सभी धर्मों के लोगों ने अमीरी-गरीबी,जात-पात,उंच-नीच, लिंग, भेद-भाव, से ऊपर उठकर मानवता का परिचय देते हुने एक अंजान औरत की समय रहते मदद करके उसकी जान बचाई थी।

सही अर्थों में मुझे रेल की इस यात्रा से एक ऐसा अहसास हुआ कि कैसे भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में विभिन्न समुदायों के लोगों ने कैसे अपने निजी हितों को भूल कर और समय की नज़ाकत को देखते हुए किस तरह निस्वार्थ सेवा भावना से मानवता की यह यात्रा को अनमोल अनुभव में परिवर्तित करके एक जीवंत मिसाल खड़ी कर दी थी। यह घटना हम सब के दिलों में एक अमिट छाप छोड़ चुकी थी। मैं समझ रहा था कि मेरे देश की इस राष्ट्रीय एकता में रेल का कितना बड़ा योगदान है, जो प्रतिदिन विभिन्न धर्मों के लोगों को एक साथ एक डिब्बे में बिठाकर सही अर्थों में मानवता की सेवा करने के साथ-साथ लोगों में प्यार मोहब्बत का प्रसार करके राष्ट्रीय सद्भावना ,स्नेह और प्यार को नयीं ऊंचाइयों की तरफ ले जाकर इंसानियत की अद्भुत गाथा लिख रही है।

राकेश बैंस

7009141355

`306, सेक्टर 44।

चंडीगढ़

हिन्दी लघुकथा : बुनावट और प्रयोगशीलता : डॉ. अशोक भाटिया

हिन्दी लघुकथा अपने वर्तमान रूप में बीसवीं सदी के उत्तरार्ध के हालात और संघर्षों की उपज है। काव्य जहाँ संक्षिप्तता और सूक्ष्मता की ओर अग्रसर होता है वहीं गद्य विस्तार माँगता है। लेकिन लघुकथा के लिए हमेशा ही "संक्षिप्तता" की बात की जाती है। व्यर्थ विस्तार न होना एक अलग बात है लेकिन संक्षिप्तता के नाम पर अनावश्यक कसावट किसी भी रचना के बुनियादी स्वभाव के विपरीत है। इससे लघुकथा की बनावट उसकी सहजता, सुंदरता और पाठकीय प्रभाव कमजोर पड़ते हैं। सामाजिक यथार्थ के बड़े भाग को लघुकथा के छोटे कलेवर में कैसे लाया जाए ताकि यह अपना सामाजिक अस्तित्व और बेहतर ढँग से निभा सके।

इसके दो ही रास्ते हैं एक तो लघुकथा के बाह्य आकार-प्रकार को लेकर रूढ़िगत सोच से बाहर आना, जिस पर चर्चा यहाँ अपेक्षित नहीं है, दूसरे इसकी बनावट (टेक्सचर) को लेकर आवश्यक प्रयोगों के माध्यम से इसे संपन्न बनाना।

डॉ.सतीश दुबे ने लिखा है, "आज भी लघुकथा साहित्य जगत में सतही लेखन के आरोपों की गिरफ्त में हैं।" वैसे तो पूरे समकालीन लेखक में ही साहित्यिकता कम हुई है, लेकिन लघुकथा साहित्य का अधिकतर भाग सतही ब्यौरों और विवरणों से भरा पड़ा है। हमारी अधिकतर लघुकथाएँ छोटे-छोटे रिपोतार्ज हैं जो लघुकथा के लिए भारी खतरा है। यद्यपि वर्णनात्मक बुनावट के साथ लेखकीय विवेक से युक्त हिन्दी में बहुत सी सम्पन्न लघुकथाएँ मिलती हैं, जो पाठक की चेतना के द्वार पर दस्तक देती हैं। लेकिन वर्तमान यथार्थ को सामने लाने की दृष्टि से यह पर्याप्त नहीं है।

प्रश्न यह है कि हमारे लघु कथाकार की सोच क्या इस वर्णनात्मक रूढ़ साँचे में इतनी बंध गई है कि वह इससे बाहर लघुकथा के स्वरूप की कल्पना भी नहीं कर पा रहा? इसी से दूसरा चिन्तनीय प्रश्न यह उठता है कि यह सीमा लेखक द्वारा सरल मार्ग को चुनने की है सुविधा है या यथार्थ के अन्य आयामों का दबाव महसूस न कर पाना है? कहीं यह छपने और चर्चा की सुविधा तथा लाइक्स और कमेंट्स ने उसकी सोच को सीमित कर उसे आत्मामुग्ध तो नहीं बना दिया? इस आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता है और यह हिन्दी लघुकथा का एक और संकट है। दरअसल लघुकथा लघु यथार्थ-बोध या विपन्न यथार्थ-बोध की रचना नहीं है।

इसके रेडीमेड सोच से बाहर तभी आया जा सकता है जब रचनाकार व्यापक सामाजिक यथार्थ को लघु कथा में उतारने की प्रक्रिया से गुजरेगा। तब उसे कहीं प्रतीक, कहीं सामान्य संकेत, कहीं कल्पना और फैंटेसी तो कहीं नाटकीय युक्ति आदि से काम लेना होगा। लेकिन यह सब यथार्थ को व्यक्त करने की आवश्यकता से निःसृत होना चाहिए।

प्रयोग कोई सजावट या चमत्कार की वस्तु नहीं है कि कुछ लघुकथाओं में मिलता है। हाँ, प्रयोग की जरूरत लघुकथा की बुनावट को बदलेगी, लेकिन उसे पाठक का भी ध्यान रखना होगा जो रचना के अंतिम कसौटी होता है। यहां कथा सम्राट प्रेमचंद की बात याद रखनी होगी। वे लिखते हैं कि- "खरा साहित्य वही है जो हम में गति,संघर्ष और बेचैनी पैदा करें सुलाए नहीं।" प्रयोग के कारण रचना में ठंडापन आने की आशंका रहती है। जब रचना कार के भीतर विसंगतियों के प्रति आक्रोश मनुष्य माः के लिए संवेदना और करुण भाव आदि स्थायी भाव की तरह मौजूद रहेंगे और रचनात्मक बुनावट में भी सक्रिय भूमिका निभाएँगे तो पाठक पर उसका निश्चय ही प्रभाव पड़ेगा। फिर लघुकथा को "गागर में सागर" कहने वाला लघुकथाकार मोटे तौर वे भी विपन्न यथार्थ बोध से ही क्यों तुष्ट होता चला जा रहा है?

प्रसिद्ध आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल का मत था कि किसी रचना को सामाजिक सार्थकता साहित्यिक दोनों कसौटियों पर खरा उतरना चाहिए। उनकी दृष्टि में साहित्यिक दृष्टि से वही कृति श्रेष्ठ हो सकती है जो सामाजिक रूप में सार्थक हो और रूप में सार्थक वहीं कृति हो सकती है जो साहित्यिक दृष्टि से श्रेष्ठ हो। इसमें कोई एक धरातल कमजोर हुआ तो रचना का प्रभाव और श्रेष्ठता क्षीण हो जाएगी ऐसा आचार्य शुक्ल का मंतव्य है। आचार्य शुक्ल के इस मत पर लघुकथा की बुनावट और प्रयोगशीलता के संदर्भ में विचार करना अपेक्षित है।

विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार बर्तोल्त ब्रेदत की लघुकथा "रूप और वस्तु" में संस्मरण के माध्यम से कहा गया है कि रचनात्मक बाह्य सौन्दर्य के लिए वस्तु की बलि नहीं चढ़ाई जा सकती। कवि रघवीर सहाय का मत भी तर्कसंगत है कि "जहाँ बहुत अधिक कला होगी वहाँ परिवर्तन नहीं होगा" इसलिए वस्तु को शक्तिशाली रूप में प्रस्तुत करने और यथार्थ के विविध धरातलों को लघुकथा में व्यक्त कर पाने के लिए ही लघुकथा में प्रयोग करने की आवश्यकता है। रचना में व्यक्त यथार्थ को कोई कलात्मक आयाम, कोई कलात्मक मोड, कोई संकेत, लक्षणा या व्यंजना या प्रतीक या उपमान का प्रयोग फैंटेसी या द्वंद काव्यात्मक या नाटकीय शैलीका प्रयोग उसकी शक्ति को, अर्थ को उभार सकें तो ऐसा प्रयास सफल कहा जाएगा। हाँ रचना की पठनीयता और रोचकता बनी रहनी चाहिए बल्कि उसमें भी वृद्धि हो सके तो प्रयोग की सार्थकता बढ़

जाएगी।

बुनावट और प्रयोग की यह यात्रा घटित से कहन तक की प्रक्रिया है जो सृजन का
आधार है। आइए ऐसी कुछ लघुकथाओं की सारणियाँ बनाते हुए संक्षिप्त चर्चा करें।

०१. न्यूनोक्ति (अंडर स्टेटमेंट) का प्रयोगः कथा के होने वाले अंत को छुपाकर रखना।अंत में पाठक को वो हाथ लगता है जिसके लिए वह तैयार नहीं है। इसका पाठकीय प्रभाव बड़ा शक्तिशाली होता है। रमेश बतरा की लघुकथा "बीच बाजार" के पूर्वार्ध में मुहल्ले की स्त्रियाँ विद्या को आड़े हाथों लेती हैं कि उनकी बेटी कैबरे डांसर हो गई है- क्यों री, मुझे जरा लाज भी न आई जो चार-चार बेटों के रहते हुए परोस दिया बेटी को अपनी थाली में? लेकिन जब उन्हें उसकी आमदनी का पता चलता है तो बदल जातीं हैं । रचना की अंतिम पंक्तियाँ हैं- "लड़कियां दफ्तरों में भी तो काम करती हैं होटल में काम होटल में कौन हौआ बैठा है।" खुद अच्छे तो भगवान भी अच्छा... तेरे तो ठाठ हो रहे होंगे आजकल! जरा हमें भी तो बता ना?... और हाँ तेरी लाडली सरोज कह रही थी, मौसी से कहो ना, मुझे भी सिखवा देना कैबरे...।

युगल के मातम, लघुकथा में एक पत्रकार किसी मंत्री से इंटरव्यू के लिए जाता है। मंत्री के घर गमगीन वातावरण है। लेखक ने स्थिति को इस प्रकार बुना है कि लगता है मंत्री के छोटे बच्चे की मृत्यु हुई है। पत्रकार कवरेज के लिए मृतक की फोटो माँगता है। रचना की अंतिम पंक्ति है रोशो अच्छी नस्ल का कुत्ता था। अंत में बाद में रचना पाठक को पुनर्विचार के लिए बाध्य करती है उसके बाद इसका व्यंग्यार्थ पाठक को हतप्रभ कर देता है

२. व्यंगात्मक बुनावटः व्यंग्य रचना को बुनता है या रचना व्यंग्य को बनती है- यह विचारणीय प्रश्न है। हरिशंकर परसाई की लघु कथाएं व्यंग से जुगलबंदी करके चलती हैं। उनकी "जाति", "यस सर", "सुअर," "बात" जैसी लघुकथाएं अपने पैने व्यंग्य की नोक पर यथार्थ के विद्रूप और विडम्बना को उद्घाटित करने का उपक्रम करती हैं। विष्णु नागर की पुस्तक -ईश्वर की कहानियाँ- की सभी लघु कथाएं व्यंग्यात्मक बुनावट से ही उपेक्ष
अपेक्षित प्रभाव पैदा करती हैं। मुकेश वर्मा की -मुक्त करो- जैसी लघुकथाओं में व्यंग अंडर करंट की तरह काम करता है इसमें अमिता से विचलन पर लक्षणा और व्यंजना के के जरिए शोषक की क्रूर मानसिकता को सशक्त रूप में उभारा गया है। शकुंतला किरण की लघुकथा "साप्ताहिक भविष्यफल" का व्यंग्य धीरे- धीरे उभर कर अपनी तासीर दिखाता है।जरा इस रचना के आरंभ से अंत तक कुछ अंश देखें-आरंभ- देखो उस लड़के का पीछा करो जो तेज साइकिल चलाता हुआ भीम नगर से आया है और तुम्हारे घर का चक्कर काटकर अब अलकापुरी जा रहा है। उसका रंग काला,घुन्नी आँखें, सूरत से छटा हुआ बदमाश लगता है,बल्कि है।...मध्य-१.. यकीनन आप भले आदमी हैं। आप से जो मिलता है, कहता है कि देवता स्वरूप हैं।...मध्य-२..ध्यान से देखो इसकी मुठ्ठी खुली है। हाथ फैल पसर रहे हैं ।आँखों में लाल डोरे कस रहे हैं ।यहीं खतरा है।वह कुछ भी कर सकता है।... मध्य-३..घेर लो। साइकिल में अड़ी डालकर उसे जमीन पर गिरा दो।उसकी जामा तलाशी लो।... अंत... ओफ्फोह, नरक बढ़ रहा है। वह नरक का कीड़ा बन जाएगा। उसे मुक्त करो। हाँ, जैसी आपकी मर्जी हो, बकरे की तरह या कुत्ते की तरह। लेकिन करो और जल्दी करो। समय कम है।आपको डिनर पर भी जाना है। और समाज के दूसरे संकटों को भी निपटाना है।

हरिशंकर परसाई जी व्यंग्यात्मक बुनावट के मास्टर थे। इनकी अधिकतर विद्रूप, विडंबना, विसंगतिकी की चरम परिणिति के साथ समाप्त होती है। उसी के मुताबिक रचना को बुनते हैं। "जाति" लघुकथा में एक ठाकुर और ब्राहमण क्रमशः अपनी बेटी
और बेटे की आपसी शादी की स्वीकृति नहीं देते, क्योंकि इससे जाति चली जाएगी। रचना का उत्तरार्ध देखिए - किसी ने उन्हें समझाया कि लड़का-लड़की बड़े हैं, पढ़े-लिखे हैं, समझदार हैं। उन्हें शादी कर लेने दो। अगर शादी नहीं हुई, तो भी वे चोरी-छिपे मिलेंगे और तब जो उनका संबंध होगा, वह व्यभिचार कहा जाएगा। इस पर ठाकुर साहब और पंडित जी ने कहा - "होने दो। व्यभिचार से जाति नहीं जाती, शादी से जाती है।" इस प्रकार शकुंतला किरण की लघुकथा "साप्ताहिक भविष्यफलो का व्यंग धीरे-धीरे उभारकर अपनी तस्वीर दिखाता है।

३. वैचारिक बुनावटः इस प्रकार की लघुकथाएँ बहुत कम लिखी गई हैं और उनकी स्वीकार्यता भी उतनी ही कम है। ऐसी लघुकथाओं के केंद्र में एक विचार रहता है, उसी के इर्द-गिर्द लघुकथा की बुनावट की प्रक्रिया चलती है। जाहिर है कि ऐसी लघुकथाओं में बिम्ब की अपेक्षा अमूर्तता और प्रतीकात्मकता रहती है। भागीरथ की "दुपहरिया", "चेतना", "अँधेरे द्वीप" आदि कई लघुकथाएँ इसी कोटि की हैं। ऐसी रचनाओं का लेखन परिपक्व सोच और प्रयोगधर्मी दृष्टि के संयोग से ही संभव है। "दोपहरिया" में तेजस्विता की सामान्य स्वीकार्यता को लेखक की कवायद दृष्टव्य है। रचना का आरंभ देखें "चौंधियाने वाली धूप की दुपहरिया आँगन में ऐसी पसरी पड़ी है जैसे अल्लड़ जवानी। इसका अंत है जो दैविक है, वह मानवीय क्यों नहीं है? जब ढलती धूप सुहाने हो सकती है, उगती किरणें सुनहरी हो सकती हैं तो चकाचौंध भरी, तपती दुपहरिया का ही क्या कसूर है कि वह उज्जड़ उदास और बेनूर हो।

४.तार्किक बुनावटः लघुकथा की वैचारिक बुनावट में भी तर्क रहता है, लेकिन वह बुनावट प्रायः अमूर्त व प्रतीकात्मक होती है। तार्किक बनावट में पात्रों के बीच तर्क-वितर्क की क्रिया रहती है। हरिशंकर परसाई की लघुकथा "संस्कृति" में दो व्यक्तियों की बहस वास्तव में पेट की भूख नाम जनम- जनम की सांस्कृतिक भूख पर बहस होती है।इसी प्रकार मार्टिन जॉन की लघुकथा "गॉड ब्लेस हिम" आस्था बनाम तर्क के आधार पर लिखी गई है ऐसी लघुकथाएँ पाठक की चेतना पर गहरा प्रभाव छोड़ती हैं। विष्णु नागर की "फुर्सत" लघुकथा तर्क में से दूसरा तर्क निकलती जाती है।

५.समावेशी बुनावट समकालीन लेखन में साहित्यिक विधाओं का चरित्र आवश्यकतानुसार समावेशी होता गया है। हालांकि हिन्दी में यह कोई नई प्रवृत्ति नहीं है। अक्षेय का "शेखर" एक जीवनी औपन्यासिकता में जीवनी को समेटे है, तो धर्मवीर भारती का "अंधा युग" काव्य-शक्ति संपन्न नाटक (नाट्य काव्य) है इधर ऐसी रचना में वृद्धि हुई है।

कथाकार काशीनाथ सिंह का "काशी का अस्सी" अपने औपन्यासिकता में कहानी और रिपोर्ताज के गुण समेटे हुए हैं, तो विश्वनाथ त्रिपाठी का "नंगातलाई का गाँव" कथा के साथ आत्मकथा और संस्मरण विधाओं का भी समन्वय करता चलता है। किन्तु समकालीन हिन्दी लघुकथा का समावेशी रूपअभी कम ही उभरकर आया है, जबकि उसे इस प्रवृत्ति के सर्वाधिक आवश्यकता है। लघुकथा के समावेशी बनावट के कुछ पक्ष इस प्रकार हैं-

क. लघुकथा का काव्यात्मक व्यवहारः लघुकथा के ताने बाने में काव्यात्मक निर्वाह उसे बड़े आयामों की रचना बनाने की सामर्थ्य प्रदान करता है इस निर्वाह के भी कई आयाम हैं ।बलराम अग्रवाल की लघुकथा "नदी को बचाना है" का मूल आधार ही काव्यात्मक है जबकि इनकी भी "उसकी हँसी" लघुकथा में कार्यात्मक छटा का बीच- बीच में प्रयोग हुआ है। कविता की लघुकथा में नदी के प्रवाह- सा सौंदर्य देखना हो तो सुशांत सुप्रिया की "सबके लिए" लघुकथा बड़े अर्थों की संवाहक है। चैतन्य त्रिवेदी की बहुत-सी लघुकथाएँ कलात्मक धरातल और उर्वरक कल्पना के संयोग का अच्छा उदाहरण है -"वह जैसे दूध के ऊपर जमी हुई मिलाई थी। वह जैसे मुँह में घुल गई मिठाई थी। वह जैसे सितारों को थामने वाली आकाशगंगा थी। वह जैसे खजाने से लदा एक समुद्री जहाज थी। जिसकी चाहत में समुद्री डाकू पागल हो जाते हैं।.... वह माँ भी तो मकान था। वह बहन भी तो भाइयों की कलाई पर राखी थी। वह बेटी थी तो घर में रौनक थी। वह पत्नी थी तो थाली में भोजन था, जीवन में प्रयोजन था"। सबके लिए (सुशांत सुप्रिय)

मुकेश वर्मा की अनेक लघुकथाओं में कविता आकर उसके अर्थ और घनीभूत अर्थ और संवेदना को घनीभूत करती जाती है इनकी "समुद्र-तट पर" लघुकथा से एक उदाहरण- मैंने उसके (बेटे के) हाथों में छोटे- छोटे जुगनू रख दिए बेडोल शंख और पानी में वर्षों घिसे पत्थर रख दिए। ढलते हुए सूर्य की रोशनी और आती हुई रात की रौनक रख दी मैंने उसके हाथों में नमक रख दिया और अपने झुर्रियों को हाथों में समेट लिया।

रघुनंदन त्रिवेदी की लघुकथा "स्मृतियों में पिताः एक-काव्य" व्यवहार के कारण बड़े आशय को सहज ही सामने लाकर पाठक पर अमित प्रभाव छोड़ती है। संध्या तिवारी की "कविता" लघुकथा में स्त्री पर लिखी जा रही पारिवारिक दायित्वों की कविता का समावेश हुआ है। इसकी अंतिम पंक्तियां हैं- मैं मुख्य द्वार की सांकल सबकी सुविधा और सुरक्षा के लिए खुलती और बंद होती हूँ। मैं समूचा घर हूँ, बस घर की नेम प्लेट नहीं।

ख. बुनावट में प्रतीकः जब प्रतीक के आधार पर लघुकथा की रचना हो तो वह लघुकथा की बुनावट को बदल देता है। ऐसी रचनाएँ हिन्दी में कम ही हैं। हाँ लघुकथा में प्रतीक का प्रयोग अलग विषय है, लेकिन प्रतीकात्मक संरचना एक अलग विषय है। रत्नेश कुमार की "अखबार" लघुकथा में संपादन विभाग में कार्यरत शेर, गिद्ध, कौए लोमड़ी आदि पात्र आज के मीडिया की हालत को रोचक रूप में बयां करते हैं। इतने प्रतीक गहरे अर्थों के संवाहक बनकर आते हैं। "भेड़िए और सियार ने बैलों की नियुक्ति उप-संपादक के पद पर की और कुत्तों को मुख्य/विशेष संवाददाता बनाया। चूंकि कुत्तों में सूँघने की शक्ति अधिक होती है। समाचार सूँघना कुत्तों के ही वश का है, जिससे आने-जाने वालों, उद्घाटन-समापन करने वालों की सूचना-ऊचना, खबर-उबर मिल सके। कोयल ने संपर्क किया। सियार ने कोयल को बहुत मुश्किल से मिलने का समय दिया। उसके बाद मिलने पर कई दिन आज-कल कर उसे दौड़ाता रहा। वह अंततः बोला, "अखबार में तुम्हारा क्या काम?" अखबार (रत्नेश कुमार) हर भगवान चावला की लघुकथा "थूक"विकृत सोच का प्रतीक लेकर रची गई रोचक रचना है।मानवेतर पात्र जब प्रतीक रूप में आकर लघुकथा को संचालित करते हैं तो रचना की रोचक बनावट देखते ही बनती है। तब बड़े आशयों को कम शब्दों में प्रभावशाली रूप में व्यक्त करने की संभावनाएं रहती हैं।सुरेंद्र मंथन की "राजनीति" लघुकथा में दो बकरियों के माध्यम से राजनीति में स्वार्थ और विद्रूप का उद्घाटन हुआ है। प्रसिद्ध लोक कथाओं व पौराणिक कथाओं को नए संदर्भो में उभारने का काम कई लघुकथाकार कर रहे हैं। शरद जोशी की "लक्ष्य की रक्षा" रचना में खरगोश और कछुए की प्रसिद्ध को राजनीतिक संदर्भ के साथ रोचकता से बुना गया है। लघुकथा के नए पारंपरिक पूर्वार्ध के बाद नया उत्तरार्ध देखिये-"जब खरगोश सोकर उठा, उसने देखा कि कछुआ आगे बढ़ गया है, उसके हारने और बदनामी के स्पष्ट आसार हैं। खरगोश ने तुरंत आपातकाल घोषित कर दिया। उसने अपने बयान में कहा कि प्रतिभागी पिछड़ी और कंजरवेटिव (रूढ़ीवादी) ताकतें आगे बढ़ रही हैं, जिनसे देश को बचाना बहुत जरूरी है। और लक्ष्य छूने के पूर्व कछुआ गिरफ्तार कर लिया गया।-लक्ष्य की रक्षा (शरद जोशी) चंद्रेश कुमार जतलाने की लघुकथा "गुलाम अधिनायक" बड़े आशय की रचना है जिसे कई प्रतीकों से बुना गया है जैसे आश्वासन का बोतल, खाकी वर्दीधारी बाज आदि।

इसी संदर्भ में उर्मी कृष्ण की -बिल्लियों और बंदर- की नई कथा, वीरेंद्र भाटिया की "प्यासा कौआ" और सतीश राठी की "कलेजा बंदर का" चंद्रेश कुमार छतलानी की "मानव मूल्य" देखी जा सकती हैं ।

५. एक शब्द वाक्यों का प्रयोगः यथार्थ के बड़े फलक को लघुकथा में उतारने की आवश्यकता ही प्रयोग के लिए प्रेरित करती है। हिन्दी में ऐसे प्रयोग इक्का दुक्का ही हुए हैं। भागीरथ की "हड़ताल" लघुकथा में हड़ताल के पीछे की राजनीति और दबावों का भी उद्घाटन करने का यही एक रास्ता था। लगभग दो सौ शब्दों की लघुकथा के आरंभिक व अंतिम बीसेक शब्द देखें "आरंभ" माँगपत, सभा, आमसभा, बातचीत, खत्म, लेबर , कमिश्नर,

बीच-बचाव। अंत - समझौता, विजय, खुशी, मजदूर, सामग्री, कोर्ट, कचहरी, बहस, तारीख- दर-तारीख, साल-दर-साल।

६. फैंटेसी का प्रयोगः फैंटेसी अयाथार्थ और यथार्थ के माध्यम से यथार्थ को शक्तिशाली रूप में व्यक्त करने का एक डिवाइस है। यह विशिष्ट कोटे की रचनात्मक कल्पना ही है। यशपाल की "सीता की पीड़ा" लघुकथा में पत्रकार सीता से सपने में ही इंटरव्यू ले सकता था।सुकेश साहनी की लघुकथा "गोश्त की गंध" फैंटेसी का प्रयोग कर रचना के कथ्य को अधिक मार्मिकता के साथ पाठक तक पहुँचाती है। भारतीय दामादों के संदर्भ में इसकी कुछ पंक्तियाँ देखें -जब सास ने खाना परोसा तो वह सन्न रह गया। सब्जी की प्लेटों में खून के बीच में आदमी के पोस्ट के बिल्कुल ताजा टुकड़े तैर रहे थे। बस उसी क्षण उसकी समझ में सब कुछ आ गया। ससुर महोदय पूरी आस्तीन की कमीज पहन कर बैठे हुए थे, ताकि वह उनके हाथ से उतारे गए गोश्त रहित भाग को न देख सकें। अपनी तरफ से उन्होंने काफी होशियारी बरती थी उन्होंने अपने गालों के भीतर शुरु से ही भाग से गोस्ट उतरवाया था, पर ऐसा करने से गालों में पड़ गए गड्ढों को नहीं छिपा सके थे।

सन् १९९४ में निर्वाचित लघुकथाएँ पुस्तक के विमोचन के अवसर पर राजेंद्र यादव ने कक्का की कहानियों में फैंटेसी का जिक्र करते हुए कहा था कि लघुकथा में फैंटेसी का प्रयोग कठिन काम। है दरअसल लघुकथा के बाह्य आकार में यथावश्यक छूट लेने पर फैंटेसी की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

७. प्राचीन संदर्भो की नई बनावटः बहुत सी हिन्दी लघुकथाओं को ऐतिहासिक-पौराणिक आख्यानों और मिथकों का संदर्भ लेकर रचा गया है। बुद्ध, राम, सीता,कृष्ण, सुदामा, द्रोणाचार्य एकलव्य, शकुंतला आदि पात्र इनमें प्रमुख हैं। ऐसी रचनाओं के भी कई आयाम हैं कुछ लघुकथाओं में इतिहास के एक प्रसंग और वर्तमान स्थिति को आमने-सामने रख कर निष्कर्ष निकाला गया है। पृथ्वीराज अरोड़ा की "दया और दुःख" में कपिलवस्तु के राजकुमार और मछुआरों को लेकर की गई बुनावट देखते ही बनती है। कुछ लघुकथाओं में प्राचीन संदर्भ को नई दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है, जैसे प्रसिद्ध कथाकार यशपाल की लघुकथा "सीता की पीड़ा" कुछ लघुकथाओं में पुरातन संदर्भ का वर्तमान संदर्भों में नवीनीकरण किया गया है, और रामनारायण उपाध्याय की दूसरी शकुंतला रचना ऐसी लघुकथाएं इतिहास और वर्तमान में द्वन्द वर्तमान के द्वंद से बुनी गई हैं पाठक पर खासा असर डालती हैं। माधव नागदा की "शहर में रामलीला" में सीता-त्याग की लीला के दिन राम बीमार पड़ गए दूसरों को भूमिका दी गई वह लक्ष्मण को हटाकर सीता के साथ बैठ जाता है और कहता है सीते में इतना विवेकहीन नहीं हूँ कि एक धोबी के अनगर्ल
प्रलाप के कारण तुम्हें त्याग दूँ।... यदि अयोध्या को तुम स्वीकार नहीं, तो मुझे भी अयोध्या स्वीकार नहीं।

साहित्य में घटित से कहन तक की प्रक्रिया में कल्पना का प्रयोग होता, है किन्तु उसमें काल्पनिक कुछ भी नहीं होता। उद्देश्य तो यथार्थ को उद्घाटित करना ही होता है। कुछ और प्रयोग अपनी ओर ध्यान खींचते हैं हरिशंकर परसाई की लघुकथा "बात" में एक बात को सात पात्रों में इस त्वरा के साथ घुमाया गया है, जैसे करवाचौथ के अवसर पर महिलाएँ थालियाँ घुमाती हैं। लक्ष्मी कान्त वैष्णव के "लोग" लघुकथा कल्पना के माध्यम से आपातकाल की घुटन को जीवंत कर देती है। अशोक वर्मा की "खाते बोलते हैं" मधुदीप की "समय का पहिया घूम रहा है" योगराज प्रभाकर की
"कुल्हाड़ियां और दस्ते" और लक्ष्मी नारायण अग्रवाल के "इतिहास के कूड़ेदान से" कल्पना के यथावश्यक प्रयोग से बड़े कैनवक्स को अपनी बुनावट में समेटने में सफल प्रयोग कहे जा सकते हैं।

कांता राय "सावन की झड़ी" लघुकथा में बड़ों की तनावपूर्ण बातचीत के बीच बाल-सुलभ प्रश्नों को शामिल कर नया प्रयोग करती हैं। सीमा जैन की लघुकथा "फाँस" घर के खाने की मेज द्वारा तीन पीढ़ियों की बहुओं में आए क्रमशः बदलाव की रोचक दास्तान सुनाई गई है। स्नेह गोस्वामी की -वह जो नहीं कहा- डायरी और आत्मकथा के रूप में दिन के छह भागों में स्त्री-पुरुष संबंधों की रोचक दास्तान है। संध्या तिवारी की -डायरी- लघुकथा में डायरी द्वारा दो भिन्न प्रसंगों का बयान भी पाठकीय आकर्षण का केंद्र बन जाता है। इसके अतिरिक्त रचना में स्पष्ट या अघोषित रूप से दो तीन चार दृश्यबंधों वाली कई लघुकथाएँ भी बुनावट की दृष्टि से ध्यान खींचती हैं।

डॉ. अशोक भाटिया
1882, सेक्टर-13,
करनाल -132001
फोन : 9416152100

शोध पत्र

कथा परंपरा का आधुनिक रूप लघुकथा : कान्ता रॉय

लघुकथा के कल के इतिहास में भारतीय ज्ञान परंपरा का एक व्यापक संसार दिखाई देता है। वेदों में निहित कथा के सूत्र पौराणिक अख्यानों से होती हुई कथा सरित्सागर, बौद्ध कथाएं, जातक कथाएं, पंचतंत्र, हितोपदेश इत्यादि से गुजर कर आधुनिक हिंदी साहित्य की कथा परंपरा में तीसरी विद्या के रूप में स्थापित होती है। कथा परंपरा का आधुनिक रूप जीवन के यथार्थ से जुड़ी विसंगतियों को चिन्हित करने के साथ ही जीवन के नए अर्थ तलाश में के लिए तत्पर होती है। जहां कहानी यूरोप से आयातित मानी जाती है वहीं लघुकथा भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्ध पृष्ठभूमि पर खड़ी है।

लघुकथा में जब हम उसके 'कल' को पीछे पलट कर देखते हैं तो पौराणिक आख्यानों से लेकर समकालीन लघुकथाओं को पाते हैं जिनमें कई ठहराव दिखाई देते हैं। लघुकथा का बीत गया जो समय है वह पौराणिक आख्यानों से लेकर समकालीन वर्तमान लघुकथाओं तक का सफर है।

समकालीन वर्तमान लघुकथाओं में जो सफ़र हम देखते हैं उसमें कई पड़ाव, कई ठहराव नजर आते हैं। कथा अपनी गति से अपनी यात्रा तय करती हुई बोध कथाएं, जातक कथाएं, पौराणिक कथाओं के साथ वह सदियों की यात्रा करती चली आती है। जब भारतेंदु हरिश्चंद्र छोटी-छोटी चुटकियां लिखते हैं और व्यंग्यात्मक लहजे में जो कटाक्ष रोपित करते हैं वही तेवर का स्वर जनता को उद्वेलित करता है। तो ये वह समय था जहां प्रतिरोध प्रकट करने की, दुस्साहस करने की कीमत चुकानी पड़ती थी। वह समय दबे छुपे स्वर में प्रतिरोध को व्यक्त करने का समय था। खुल कर कोई किसी को कुछ कह नहीं सकता था। शासन के खिलाफ अपना असंतोष वह प्रकट नहीं कर सकता था। उदहारण स्वरुप भारतेंदु नाटक 'सबै जात गोपाल की' में जात-पात से टकराते इस वैचारिक संघर्ष को महसूस कीजिये -

पंडित : क्यों, इसमें दोष क्या हुआ? "सबै जात गोपाल की और फिर यह तो हिन्दुओं का शास्त्र पनसारी की दुकान है और अक्षर कल्प वृक्ष है इसमें तो सब जात की उत्तमता निकल सकती है पर दक्षिणा आपको बाएं हाथ से रख देनी पड़ेगी फिर क्या है फिर तो "सबै जात गोपाल की"।

क्षत्रिय : भला महाराज, जो चमार कुछ बनना चाहे तो उसको भी आप बना दीजिएगा?

पंडित : क्या बनना चाहै?

क्षत्रिय : कहिये ब्राह्मण।

पंडित : हां, चमार तो ब्राह्मण हुई है इस में क्या संदेह है, ईश्वर के चम्म से इनकी उत्पत्ति है, इनको यह दंड नहीं होता। चर्म का अर्थ ढाल है इससे ये दंड रोक लेते हैं। चमार में तीन अक्षर हैं 'च' चारों वेद 'म' महाभारत 'र' रामायण जो इन तीनों को पढ़ावे वह चमार। पद्मपुराण में लिखा है। इन चर्मकारों ने एक बेर बड़ा यज्ञ किया था, उसी यज्ञ में से चर्मण्ववती निकली है। अब कर्म भ्रष्ट होने से अन्त्यज हो गए हैं, नहीं तो है असिल में ब्राह्मण, देखो रैदास इनमें कैसे भक्त हुए हैं लाओ दक्षिणा लाओ। 'सवै'

क्षत्रिय : और डोम?

पंडित. डोम तो ब्राह्मण क्षत्रिय दोनों कुल के हैं, विश्वामित्र-वशिष्ट वंश के ब्राह्मण डोम हैं और हरिश्चंद्र और वेणु वंश के क्षत्रिय हैं। इस में क्या पूछना है लाओ दक्षिणा 'सबै जा.'।

क्षत्रिय : और कृपा निधान! मुसलमान।

पंडित : मीयाँ तो चारों वर्णों में हैं। बाल्मीकि रामायण में लिखा है जो वर्ण रामायण पढ़े मीयाँ हो जाय।

दबे छुपे लहजे में, व्यंग्यात्मक शैली में, हंसी मजाक में बड़ी बात कह देने, तानाकशी के माध्यम से अपनी वैचारिकता को मुखरित करने का यहाँ एक नया कलेवर प्रकट होता है। इसी तरह के कलेवर जिसमें व्यवस्था से विरोध कथ्य में विकसित होती जाति है; अनायास ही भारतेंदु काल में लघुकथा के कलेवर अर्थात फर्ह्मेट की नींव रख दी जाती है। यथार्थ बोध लिए कथात्मक प्रस्तुति के कई धाराओं जिसमें निबंध, नाटक, कहानी के साथ लघुकथा विकसित होती है। तत्पश्चात समय के अंतराल में जाकर लघुकथा का एक स्पष्ट शिल्प सामने निकल कर आता है।

कहते हैं कि पहले रचना आती है, मापदंड और कलेवर की पहचान उसके बाद आती है। भारतेंदु काल में ही इस विधा का जन्म होता है जिसमें यथार्थ बोध लिए उसको अपनी एक शैली विकसित होती है। लघुकथा अपना एक विशेष प्रकार से शिल्प ग्रहण करता है; 'एक टोकरी भर मिट्टी' के नाम से जिस लघुकथा का जिक्र हम बार-बार करते हैं, लघुकथा के रूप में या पहली कहानी के रूप में, तो यह बात तय है कि आधुनिक हिंदी साहित्य में पहली कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' है और वहीं से पहले हिंदी लघुकथा की शुरुआत भी मानी जा सकती है। यह इसलिए भी क्योंकि हिंदी का विकास हम बीसवीं शताब्दी के शुरुआत से देखते हैं। द्विवेदी युग के बाद खड़ी बोली का आधुनिक हिंदी भाषा महत्वपूर्ण तरीके से स्थापित हुआ। यहां भाषा में प्राजंलता आती है। व्याकरण की दृष्टि से भाषा परिपक्व होने लगती है। हजारी प्रसाद द्विवेदी, पदुमलाल पन्नालाल बख्शी, रामचंद्र शुक्ल सहित यहीं से प्रेमचंद ने आधुनिक

हिंदी साहित्य की सभी विधाओं को समृद्ध किया। इसी अंतराल में कई लघुकथाएं लिखी गई। इस अवधि में छोटी-बड़ी सभी तरह की कथाएं लिखी गई।

जयशंकर प्रसाद की 'अघोरी का मोह', प्रेमचंद की 'बाबाजी का भोग' जगदीश चन्द्र मिश्र की लघुकथा 'बूढ़ा व्यापारी', कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की 'आहुति' जैसी लघुकथाएँ विधा को आगे लेकर आती हैंद्य इसके बाद के दशकों में हरिशंकर परसाई की 'जाति', शरद जोशी की 'लक्ष्य की रक्षा', विष्णु प्रभाकर की 'फर्क' लघुकथाओं में स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज की विद्रूपताओं का चित्र दिखाई देता हैद्य बदलते परिवेश और मूल्य समय को प्रभावित करते रहेद्य इन्हीं को केंद्र में रखकर एक तरफ जहां कहानी लिखी गई वहीं दूसरी ओर कहानियों में छोटी रचनाएं भी सामने आई।

उदाहारण स्वरुप शरद जोशी की लघुकथा 'लक्ष्य की रक्षा' को देख लीजिये : एक था कछुआ, एक था खरगोश जैसा कि सब जानते हैं। खरगोश ने कछुए को संसद, राजनीतिक मंच और प्रेस के बयानों में चुनौती दी – अगर आगे बढ़ने का इतना ही दम है, तो हमसे पहले मंजिल पर पहुँचकर दिखाओ। रेस आरंभ हुई। खरगोश दौड़ा, कछुआ चला धीरे-धीरे अपनी चाल। जैसा कि सब जानते हैं आगे जाकर खरगोश एक वृक्ष के नीचे आराम करने लगा। उसने संवाददाताओं को बताया कि वह राष्ट्र की समस्याओं पर गंभीर चिंतन कर रहा है, क्योंकि उसे जल्दी ही लक्ष्य तक पहुँचना है। यह कहकर वह सो गया। कछुआ लक्ष्य तक धीरे-धीरे पहुँचने लगा। जब खरगोश सो कर उठा, उसने देखा कि कछुआ आगे बढ़ गया है, उसके हारने और बदनामी के स्पष्ट आसार हैं। खरगोश ने तुरंत आपातकाल घोषित कर दिया। उसने अपने बयान में कहा कि प्रतिगामी पिछड़ी और कंजरवेटिव (रूढ़िवादी) ताकतें आगे बढ़ रही हैं, जिनसे देश को बचाना बहुत जरूरी है। और लक्ष्य छूने के पूर्व कछुआ गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया।//

कथा में लघुता विशेषण के रूप में विद्यमान रहा। लेकिन आधुनिकता के सन्दर्भ में एक खास तरह का तेवर लघुकथा में देखा जाने लगा। इसमें एक वैचारिक पक्ष को केंद्र में रखकर लिखा जाता था। इस तरह लघुकथा लिखने का चलन भी कहानी, उपन्यास, निबंध इत्यादि के साथ चल पड़ा था। वे सभी समांतर में सब चल रहे थे। इस तरह से लघुकथा के रूप में अलग-अलग, चाहे वह विशेषण के रूप में ही क्यों न हो, उसको ग्रहण कर रहे थे। तो उस समय जब हरिशंकर परसाई जैसे व्यंग्यकार, साहित्यकार लघुकथा लिख रहे थे जो बड़े कहानीकार थे। उस वक्त की स्थिति बड़ी अजीब थी। लेखक पशोपेश में थे कि लघुकथा जैसे नए कलेवर जो एक नई तरह की विधा आ रही थी, जो कथा परंपरा से थी, इसको स्वीकार किया जाना चाहिए या नहीं। परसाई ने लघुकथा के पक्ष में अपना मत रखा उन्होंने लघुकथाएं लिखी। रावी ने लघुकथा को दिशा देने में अच्छे, मजबूत काम किए। विष्णु प्रभाकर जैसे साहित्यकार लघुकथा के साथ खड़े हुए।

विष्णु प्रभाकर की लघुकथा 'फर्क' के शिल्प को देखिये :

//उस दिन उसके मन में इच्छा हुई कि भारत और पाक के बीच की सीमारेखा को देखा जाए, जो कभी एक देश था, वह अब दो होकर कैसा लगता है? दो थे तो दोनों एक-दूसरे के प्रति शंकालु थे. दोनों ओर पहरा था. बीच में कुछ भूमि होती है जिस पर किसी का अधिकार नहीं होता. दोनों उस पर खड़े हो सकते हैं. वह वहीं खड़ा था, लेकिन अकेला नहीं था-पत्नी थी और थे अठारह सशस्त्र सैनिक और उनका कमाण्डर भी. दूसरे देश के सैनिकों के सामने वे उसे अकेला कैसे छोड़ सकते थे! इतना ही नहीं, कमाण्डर ने उसके कान में कहा, 'उधर के सैनिक आपको चाय के लिए बुला सकते हैं, जाइएगा नहीं. पता नहीं क्या हो जाए? आपकी पत्नी साथ में है और फिर कल हमने उनके छह तस्कर मार डाले थे.' उसने उत्तर दिया, 'जी नहीं, मैं उधर कैसे जा सकता हूं?' और मन ही मन कहा-मुझे आप इतना मूर्ख कैसे समझते हैं? मैं इंसान, अपने-पराए में भेद करना मैं जानता हूं. इतना विवेक मुझ में है। वह यह सब सोच रहा था कि सचमुच उधर के सैनिक वहां आ पहुंचे. रौबीले पठान थे. बड़े तपाक से हाथ मिलाया।

उस दिन ईद थी. उसने उन्हें 'मुबारकबाद' कहा. बड़ी गरमजोशी के साथ एक बार फिर हाथ मिलाकर वे बोले, 'इधर तशरीफ़ लाइए. हम लोगों के साथ एक प्याला चाय पीजिए.'। इसका उत्तर उसके पास तैयार था. अत्यन्त विनम्रता से मुस्कराकर उसने कहा, 'बहुत-बहुत शुक्रिया. बड़ी ख़ुशी होती आपके साथ बैठकर, लेकिन मुझे आज ही वापस लौटना है और वक़्त बहुत कम है. आज तो माफ़ी चाहता हूं.'।

इसी प्रकार शिष्टाचार की कुछ बातें हुई कि पाकिस्तान की ओर से कुलांचें भरता हुआ बकरियों का एक दल, उनके पास से गुज़रा और भारत की सीमा में दाखिल हो गया. एक-साथ सबने उनकी ओर देखा. एक क्षण बाद उसने पूछा, 'ये आपकी हैं?'
उनमें से एक सैनिक ने गहरी मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया, 'जी हां, जनाब! हमारी हैं. जानवर हैं, फ़र्क़ करना नहीं जानते।

अवध नारायण मुद्‌गल ने सारिका का, महाराज कृष्ण ने 'तारिका' (शुभतारिका), जगदीश कश्यप ने 'मिनी युग', 'जनगाथा' बलराम अग्रवाल, विक्रम सोनी ने 'मिनी आघात' एवं 'मिन्नी कहानी' का संपादन श्यामसुंदर अग्रवाल एवं श्यामसुंदर दीप्ति में मिलकर संपादन किया था। इसके अलावा भी कई पत्र-पत्रिकाएँ निरंतर लघुकथा को लेकर आगे आयींद्य वह सत्तर-अस्सी के आंदोलन का समय था। वह लघुकथा का कल था। वह संघर्ष का दौर था। उसमें सारिका के संपादन में अवध नारायण मुद्‌गल ने एक विस्तार दिया। रमेश बत्रा ने लघुकथा के लिए काम किया। उन्होंने लघुकथाएं लिखी, लिखवाई और लघुकथा के लिए बेहतर प्रयास किए। नए प्रयोग किए ।नए आयामों पर काम किया। कमलेश्वर ने भी लघुकथा को महत्वपूर्ण बताते हुए लगातार अपने सम्पादन में प्रकाशित करते रहे। अपने संपादन में धर्मयुग जैसी पत्रिका लघुकथा को अपने प्रकाशन में लेती थी। तो इस तरह से कल का वह दौर लघुकथा में स्वीकार्यता का दौर था। और जैसा कि हम सब जानते

हैं अस्सी-नब्बे के दौर तक आते-आते चुटकुलानुमा, हास्यरस लिए मात्र हँसी मजाक की सामग्री बनकर लघुकथा बन गई। आंदोलन के बाद का वह समय लघुकथा में पतन का दौर भी था। हल्की फुल्की रचनाओं के इस दौड़ से जूझने वाले प्रतिबद्ध लघुकथाकारों जिनमें रामनारायण उपाध्याय, रावी, विष्णु प्रभाकर, भागीरथ परिहार, सतीश राज पुष्करणा, अशोक भाटिया, कमल चोपड़ा, बलराम अग्रवाल, कमलेश भारतीय, जगदीश कश्यप, रामेश्वर कांबोज हिमांशु, सुकेश साहनी, महाराज कृष्ण, उर्मी कृष्ण इत्यादि थे, आप सभी ने एक जुट होकर साक्षात्कार, आलेख सहित लघुकथा के मापदण्डों, शिल्प, शैलियों को लेकर विभिन्न तरीकों से आलोचनात्मक टिप्पणी लिखी। अपने समय में लिखी गयीं अच्छी लघुकथाओं का चयन किया और सम्पादन के क्षेत्र में व्यापक रूप से काम किया। उन्होंने लघुकथा को लेकर लगातार काम करना जारी रखा। प्रयास लगातार तेज होते गए। लघुकथा में जो लेखन था वह निरंतर चलता रहा। यही कारण है कि लघुकथा अपने कल से होती हुई आज के स्वर्णिम काल के दौर को देख रही है।

लघुकथा का आज स्वर्णिम काल कई मायनों में है। आज के समय में जितनी भी विधाएं हैं चाहे वह कविता हो, व्यंग, संस्मरण, कथाएं, उपन्यास, कहानी और लघुकथा, हम सबको समग्र रूप से अगर देखें तो आज जो सबसे अधिक लिखी जाने वाली विद्या है, वह लघुकथा है। और दूसरे श्रेणी में कहानी और तीसरी श्रेणी में उपन्यास खड़ी है। अब लघुकथा में जब लेखक लिख रहे हैं, अपनी कलम चला रहे हैं, ऐसे समय में लोक की पसंद की जो विधा निकल कर आई हैं वह लघुकथा ही है।

कोई इस बात को मानना चाहे ना मानना चाहे लेकिन यह तो अब स्थापित विधा है ही, इस बात के अपने मायने हैं। इसका अपना एक आलोचना शास्त्र तैयार हो गया है। हिन्दी लघुकथा, डॉ. शकुंतला किरण, समकालीन हिंदी लघुकथा, डॉ. अशोक भाटिया, हिंदी लघुकथा का मनोविज्ञान, डॉ. बलराम अग्रवाल, हिंदी लघुकथा : समीक्षा और सिद्धांत, भगीरथ परिहार, बीसवीं सदी का हिंदी लघुकथा का इतिहास, डॉ. रामकुमार घोटड, हिंदी लघुकथा का शास्त्रीय अध्ययन, डॉ. ध्रुव शुक्ल इत्यादि अनेक विद्वानों द्वारा आलोचना सम्बन्ध में लगातार काम कर रहें हैं यही कारण है कि आज इसका अपना इतिहास भी है। इसका अपना सौंदर्य शास्त्र भी है। और अब विश्वविद्यालयों में 'लघुकथा लेखन कौशल' पर सम्पूर्ण रूप से कोर्स स्थापित हो गया है। तीन महीने का सार्टिफिकेट कोर्स और एक साल का डिप्लोमा कोर्स, जिसके लिए दो सेमेस्टर तय किए गए हैं। यूजीसी के निर्देशानुसार दो सेमेस्टर में छह पेपर तय किए गए हैं। लघुकथा लगातार अपने लक्ष्य संधान कर रही है।

अभी महाराष्ट्र में अहमदनगर विश्वविद्यालय में बीए और एमए के कोर्स में शामिल की गई है। दिल्ली के प्रमुख विश्वविद्यालय के कोर्स में भी लघुकथा पर एक पेपर सुनिश्चित किया गया है। साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश एवं उर्दू अकादमी मध्यप्रदेश में प्रादेशिक और मैं राष्ट्रीय पुरस्कार स्थापित हो चुके हैं। रिसर्च के क्षेत्र में लगातार शोधार्थी आगे आ रहें हैं। लघुकथा पर शोधात्मक कार्यों का दस्तावेजीकरण करने के उद्देश्य से एक विधा विशेष के लिए लाइब्रेरी बन गई है। लघुकथा शोध केंद्र अपनी बारह इकाइयों के साथ देश भर में काम कर रही है। अभी इसका विस्तार होना बाकी है। तो कहने का आशय यह है कि ऐसे बहुत सारी चीज है जो लघुकथा को स्वर्णिम युग तक लेकर आती हैं। अभी के जो लेखक हैं उन्होंने एकजुट होकर गंभीरता से लघुकथा को एक नया आयाम दिया है।

लघुकथा के आज का जब हम विश्लेषण करते हैं तो कई महत्वपूर्ण नाम सामने उभरकर आते हैंद्य क्षितिज लघुकथा संस्थान के अध्यक्ष, श्री सतीश राठी, दीपक मशाल, अनुराग शर्मा, शील कौशिक, चैतन्य त्रिवेदी, संतोष सुपेकर, अंतरा करवड़े, वसुधा गाडगीळ, ज्योति जैन, संध्या तिवारी, सुषमा गुप्ता चंद्रेश छतलानी, वीर मेहता, विनय कुमार सिंह, गणेश बागी, योगराज प्रभाकर, कुमार संभव जोशी, अनीता राकेश, अनीता रश्मि, घनश्याम मैथिल 'अमृत', गोकुल सोनी, मुजफ्फर इकबाल सिद्दीकी, मनोरमा पन्त, सुनीता प्रकाश, सीमा व्यास, शोभा रस्तोगी इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण नाम हैं।

गोकुल सोनी की लघुकथा 'करियर' को वर्त्तमान समय की लघुकथा के तौर पर देख सकते हैं : आज मिसेज भल्ला के घर किटी पार्टी थी, मोंटू को वे डांट भी रही थी, और समझा भी रही थी. "देखो बेटा आज की किटी पार्टी विशेष है. आज की थीम है, बच्चे और उनका कैरियर, तुमको तो पता ही है. आज सभी आंटियां आपने-अपने बच्चों को लेकर अपने घर आयेंगी. सभी बच्चों का स्केटिंग, डांसिंग, पेंटिंग, सिंगिंग, म्यूजिक, और पोएट्री काम्पिटीशन रखा गया है. उस में जो बच्चा ओवर आल विनर होगा उस बच्चे और उसकी मम्मी को बड़ा सा प्राइज मिलेगा. तुम अपने कमरे में खिलौनों से खेलने में मस्त रहते हो, आज कोई खेल नहीं. दिन भर तैयारी करो." फिर हाथ पकड़कर, जमके भम्भोड़कर बोली- "याद रखना, शाम को मुझे प्राइज चाहिए, समझे. देखो मेरी नाक मत कटवा देना." चिंटू डरा-डरा सा बोला - "जी मम्मी, पर मुझे नींद आ रही है." मम्मी बोली- "कोई नींद नहीं जाओ, कमरे में और तैयारी करो." थोड़ी देर बाद जब मिसेज भल्ला चुपचाप चिंटू को देखने गईं तो चिंटू एक बन्दर के खिलौने के गले में रस्सी बाँध कर उसे खूब उछाल रहा था, उसको गुलाटी खिला रहा था और पटक रहा था पर उसके चेहरे पर सहज आनंद न होकर गुस्सा और तनाव था और कुछ बडबडा रहा था. उसने ध्यान से सुनने की कोशिश की तो वह बन्दर को रस्सी से उछाल कर गुलाटी खिलाते हुए डांट रहा था. "ए बंदर...जल्दी नाच.. तुझे फर्स्ट आना है. देखो सो मत जाना. तुझे आर्टिस्ट बनना है, सिंगर बनना है, म्यूजीशियन बनना है, डांसर बनना है, और हाँ खिलाड़ी और पोएट भी बनना है. अभी.. इसी वक्त... सब कुछ बनना है और याद रखना, तुझे गणित, इंग्लिश, जी के, ड्राइंग

हिंदी, साइंस, सभी में ए प्लस भी लाना है. नाच बन्दर नाच, नहीं तो बहुत मारूंगा..बहुत मारूंगा२“ और बन्दर को बार बार जमीन पर पटक कर सुबक-सुबक कर रोने लगा. मिसेज भल्ला किंकर्तव्य विमूढ़ सी खडी उसे देख रही थी. उनको कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था और वे चिंटू को गले से लगाकर खुद सुबक सुबक कर रोने लगीं.?

इक्कीसवीं सदी के शुरूआती दौर के इन ढाई दशकों में लिखी गयी इनकी लघुकथाओं में आपको अलग ही भाव ऊष्मा के नए क्षेत्र नजर आएगी। हमारे समकालीन लघुकथा में ये सभी महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैंद्य मैं लघुकथा पर यहां कुछ उदाहरण रखना चाहूंगीद्य बदलाव की बात करें तो विषयवार दृष्टि से लघुकथाओं में राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक परिपेक्ष में लघुकथा में आये परिवर्तन का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैंद्य समाज बदलता है तो लेखन के तरीके, उसकी परंपरा, शैली और व्यवहार में परिवर्तन दिखाई देने लगता हैद्य हमारे रहन-सहन, जीवन शैली बदल रही है तो निश्चित ही हमारे पठन-पाठन और लेखन की शैली भी बदलेगीद्य।

हमारी भाषा में जो बदलाव हुआ है, वह जगजाहिर हैद्य आज हम जिस तरह की फिल्में देखते हैं, वह सत्तर-अस्सी के दौरमें नहीं थाद्य अभी नए ढर्रे, नए लहजे, नए ढंग की फिल्में आ रही हैद्य फिल्में नए ढंग की आ रही है, नए ढंग के फैशन के अनुसार कपड़े पहन रहे हैं, साज-श्रृंगार के समान, घरेलू उपकरण, इलेक्ट्रहनिक्स एंड इलेक्ट्रिकल के क्षेत्र में जो बदलाव आया है, वह महत्वपूर्ण हैद्य अब घर में अलेक्सा हमारे सदस्य की तरह रहती हैद्य यह जो जीवन शैली में बदलाव आया है, वह लेखन के विषय और प्रस्तुति की परिपाटी को भी बदल रहा हैद्य वैचारिक पक्ष में आ रहे बदलाव में समावेशी भाव हमें अधिक दिखाई देते हैंद्य सकारात्मक पक्ष में बातचीत दिखाई देती है। पिछली पीढ़ी में जो परिवार थे, उसमें अनपढ़ व्यक्तियों की संख्या अधिक थी।

एक प्रकार से वैचारिक अन्धता, तर्कशक्ति की कमी, अंधविश्वास को बढ़ावा देती, कुतर्की प्रवृत्ति का बोलबाला थाद्य किसी भी चीज को समझने एवं समझाने के लिए बड़ी मशक्कत करनी पड़ती थी। अभी हमारे देश में साक्षरता सौ प्रतिशत माना जा रहा हैद्य सरकार ने अपना साक्षरता अभियान मिशन को समाप्त कर दिया है तो अब हम भी यह माँ कर चलते हैं कि हमारे देश में अब सभी पढ़े लिखे नागरिक हैं, तो पीछे की पंक्ति का व्यक्ति भी अब जागरूक नागरिक के तौर पर माना जा सकता है।

मनारेगा सहित अन्य सरकारी लाभ लेने के प्रति सचेत भारतीय मानस अब हर एक स्तर पर सतर्क समाज हैद्य समाज की अपनी वैचारिक ताकत हैद्य वह अपने अधिकारों की बात करता हैद्य ऐसे समाज का साहित्य पूर्व से अलहदा होना ही चाहिएद्य यही कारण है कि मनुष्यता को बचाने, नैतिक मूल्यों को लेकर जिस तरह से संघर्ष वर्त्तमान साहित्य में दिखाई दे रहा है, वह आने वाले समय की मांग भी हैद्य आने वाले कल की समाज की परिकल्पना करना साहित्य का प्रयोजन हैद्य इस प्रयोजन की पूर्ति में वैश्विक स्तर पर संगठित होकर काम करना होगा।

अंत में यही कहना चाहूंगी कि वेदव्यास, वाल्मीकि, तुलसीदास की परम्परा भारतीय लेखकों की पहचान हैद्य कलम जब-जब चलेगी, वह विश्व का कल्याण करती रहेगीद्य दिनकर की ये पंक्तियाँ हमें चिंतन को प्रेरित करती रहेंगी और रास्ता भी सुझाती रहेंगी कि -हर युद्ध के पहले द्विधा लड़ती उबलते क्रोध से,हर युद्ध के पहले मनुज है सोचता, क्या शस्त्र ही-उपचार एक अमोघ है अन्याय का, अपकर्ष का, विष का गरलमय द्रोह का!

निदेशक,
लघुकथा शोध केंद्र समिति, भोपाल
मो. 9575465147
Email% roy-kanta69@gmail-com

एवरग्रीन शार्ट-फिल्म प्रोडक्शन
भगवानपुर, लंका वाराणसी
9289615645
शार्ट फिल्मों में अभिनय, मॉडलिंग
विज्ञापन कार्य,प्रशिक्षण एवं
अपनी कहानी पर शार्ट-फिल्म निमार्ण
के लिए तत्काल मिलें।

गहमर की यात्रा

एशिया का सबसे बड़ा भारत के उत्तर प्रदेश का जनपद गाजीपुर का गहमर गाँव विविधताओं को समेटे भारत का दर्शन कराता है। सभी संस्कृतियों को स्वंय मे समाहित किये विविधता मे एकता का एक जीवन्त उदाहरण है। कौशिक ऋषि की भूमि, विश्वामित्र का प्रवास , ताड़का का बध,सदा प्रवाहिनी पाप नागिनी व मोक्ष दायिनी गंगा की कल कल धारा से सर्वदा अभिसिंचित, सीमा रक्षा, प्रदेश रक्षा प्रशासनिक सेवा मे प्रमुख योगदान देने वाली गहमर की भूमि सदा नमनीय व प्रणम्य है।

ऐसी पवित्र भूमि पर अवस्थित माँ कामाख्या के नाम से प्रतिष्ठापित माँ कामाख्या देवी महाविद्यालय के परिसर मे प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार गोपाल दास गहमरी के नाम पर तीन दिवसीय साहित्य संगम का आयोजन स्वंय मे महत्वपूर्ण रहा। जिसमे देश के विभिन्न प्रान्तों के साहित्यकार, रंग कर्मी, समाज सेवी, नाट्य कर्मी प्रतिभाग कर अपनी प्रतिभा से माँ कामाख्या की धरती को अभिभूत किये। सूत्रधार अखण्ड प्रताप सिंह व उनकी पत्नी ममता सिंह रहे जिनके प्रेरणा स्रोत उनके पिता अशोक सिंह रहे।

मै डॉ ओमप्रकाश द्विवेदी ओम जनपद कुशीनगर के पडरौना से सड़क मार्ग से चलकर गाजीपुर पहुंचा जहाँ जमानिया मोड़ से प्राईवेट बस से गहमर पहुंचा। गहमर पहुचते ही अशोक सिंह जी मुझे देख गदगद हो गये क्योंकि मै उनका परम सहयोगी के रूप मे उनके पडरौना नगर पालिका ईओ कार्य काल का एक गवाह रहा। श्री सिंह दृढ निश्चयी अधिकारी थे। आत्मीय भाव जाग उठा।

तीन दिवसीय कार्यशाला मे चिकित्सा, समाज सेवा,नाट्य मंचन, टेली फिल्म एकांकि, गद्य पद्य रचना, उपन्यास,कहानी, लघुकथा रिपोर्ताज पत्रकारिता आदि से सम्बन्धित उपागमो पर चर्चा हुई। मूर्धन्य विद्वान, साहित्य विद समाज सेवी दिशा निर्देश दिए।

कार्यक्रम के तीसरे दिन सभी सम्मानित आगन्तुक गंगा स्नान किये व माँ कामाख्या का दर्शन किये। माँ कामाख्या के दरबार मे साहित्यकार विशेषकर कविगण अपनी मनुहार की पंक्ति माँ के चरणों मे अर्पित किये। मन्दिर प्रबंधन के द्वारा उपस्थित कविगण का सम्मान किया गया।

गंगा स्नान व माँ के दरबार मे उपस्थिति दर्ज कराना एक अपरिचित समूह के सङ्ग मे स्वंय मे अवर्णनीय रहा। जिस अनुभूति से मै गुजरा वह एक अप्रतिम क्षण का आनन्दानुभूति का भाव दे रहा था। चेहरे पर झलकती भाव की आभा अपनापन प्रत्यक्ष कर रहा था।

कुछ पल अखण्ड के पिता श्री अशोक सिंह जी का सानिध्य, बीते दिनों की याद, पडरौना प्रवास की यादे आत्म विभोर कर रही थी। जीवन के ये ऐसे पल है जो सदा मन मस्तिष्क मे स्मरणीय रहता है। कुशीनगर जनपद के खड्डा निवासी माधुरी मधु, हाथरस की सन्तोष व अन्य पधारे सम्मानितो मे अपनापन झलक रहा था। तनिक भी नहीं लग रहा था कि ये पराये है। शिष्टता तो पराकाष्ठा पर थी। रायबरेली के बाबू शिवनाथ सिंह व गाजीपुर के इन्द्रजीत तिवारी का सानिध्य अपनापन का उदाहरण रहा।

मुझे इस संस्था के सर्वोच्च सम्मान राजाधाम देव राव गौरव सम्मान से मेरे साहित्यिक कृत पर नवाजा गया तो मै उस अनुभूति का अनुभव किया जो सर्वोच्च शिखर के शीर्ष पर पहुचने पर प्राप्त होती है। मै इस संस्था के अग्रेता अखण्ड प्रताप सिंह व उनकी पत्नी ममता सिंह तथा उनके पिता अशोक सिंह के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित किया।

गहमर की यात्रा अविस्मरणीय इसलिए है क्योंकि खट्टे मीठे अनुभवों से भरी रही। लौटते समय पंजाब मेल की यात्रा जीवन भर याद रहेगी तथा बाबू शिवनाथ सिंह व हरदोई समूह का साथ याद रहेगा। भीड़ खचाखच भरी थी पर आपसी परिचर्चा ने कठिनाई को छू मन्तर कर दिया।

डॉ ओमप्रकाश द्विवेदी ओम
पडरौना,कुशीनगर।
94153 63758

एवरग्रीन बुक पब्लिसर
लंका, वाराणसी
अपनी पुस्तक या पत्रिका के प्रकाशन के लिए
आज ही संम्पर्क करें 9451647845

मिशन जीओ और जीने दो

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद स्थित गहमर वेलफेयर सोसायटी, वाराणसी की एवरग्रीन न्यूटिशन प्वाइंट, के द्वारा भारत में बढ़ते सड़क हादसों में जान गँवाते युवकों की प्राण रक्षा एवं उससे प्रभावित परिवार को बचाने के लिए एक जीओ और जीने दो नाम की योजना की शुरूआत किया गया। आज भारत के हर चिकित्सालय एवं ट्रामा सेंटर में ८० प्रतिशत से अधिक दुर्घटना के शिकार युवा भर्ति है। जो खुद या दूसरों के गलती के कारण जीवन मरण के बीच फंसे हुए है।

जीओ और जीने दो के प्रथम चरण में देश के स्वंय सेवक संस्थानों, एनजीओं, नगर एवं ग्राम पंचायतों के माध्यम से न सिर्फ जनरूगाता अभियान चलाये जायेगें बल्कि युवाओं के साथ मिल-बैठ कर उन्हें हादसों के बाद की हकीकत चलचित्र की भॉंति दिखाई जायेगें। इस मिशन में संस्था उन मॉं-बाप एवं पत्नी-बच्चों का भी सहयोग लेगी जो असमय होने वाले सड़क हादसों में अपने पुत्र-पति को खोने का दर्द सह रहे हैं।

गहमर वेलफेयर सोसायटी ने न सिर्फ देश व राज्य के परिवहन मंत्री, मुख्यमंत्रीयों को पत्र लिख कर सहयोग मॉंगा है बल्कि वह देश के साहित्यकारों, कलाकरों एवं नेताओं से भी इस जीओं और जीने दो मुहिम में सहयोग एवं समय देने का अनुरोध किया है बल्कि इस योजना पर बनी अपनी कार्य योजना को चलाने में भी सहयोग की अपेक्षा किया है।

इस योजना कि खास बात यह है कि यह योजना दो संस्थाओं द्वारा संचालित होगी, पहली केन्द्रीय संस्था के रूप में गहमर वेलफेयर सोसाइटी होगी एवं स्थानीय संस्था के रूप में गॉंव/नगर/ शहर की वह संस्था या समाज सेवी जो अपने स्वेच्छा से तन-मन-धन से इस योजना से जुड़ कर हकीकत के धरातल पर महीने में दो बार अपने क्षेत्र में इस अभियान पर कार्य कर सकें। यदि आप इस अभियान से जुड़ना चाहे तो आप १००० रूप्ये की सदस्यता शुल्क के साथ एक शपथ पत्र नीचे दिये प्रारूप के अनुसार दिये हुए पते पर भेजें या अधिक जानकारी के लिए संस्था कार्यालय में संम्पर्क करें। जीओ और जीने दो योजना का एक कार्यालय वाराणसी ट्रामा सेंटर ठीक पीछे भी बनाया गया है।

अखंड गहमरी
गहमर,गाजीपुर .
9451647845

आकस्मिक सहायता केन्द्र

वाराणसी ट्रामा सेंटर एवं बी०एच०यू० के पीछे भगवानपुर में वाराणसी में जो बी०एच०यू० के मेन गेट एवं ट्रामा सेंटर के मेन गेट से ५ मिनट के पैदल रास्ते पर हैगहमर वेलफेयर सोसायटी द्वारा एक आकिस्मक सहायता केन्द्र का निमार्ण गहमर क्षेत्र के लोगों के लिए किया गया है। इस संबंध में जानकारी देते हुए संस्था के प्रबन्धक अखंण्ड प्रताप सिंह ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र में अकसर किसी घटना के होने पर लोग बदहवासी की हालत में रात में ट्रामा सेंटर पुहॅंच जाते हैं, जहां वह इलाज के साथ-साथ भोजन एवं ठहरने की व्यवस्था को लेकर काफी परेशान होते हैं, ऐसे में गहमर क्षेत्र का कोई भी व्यक्ति यदि किसी अप्रिय हालत में वहॉं पहॅुंचता है तो उसे रात भर ठहरने, भोजन दिया जायेगा एवं अन्य आवश्यकता की वस्तुएं उपलब्ध कराई जायेगी।

यह सुविधा केवल रात भर प्रदान किया जायेगा, सुबह वह लॉज या जहॉं भी उचित समझे कर सकते हैं। दिये हुए व्यवस्था के एवज में किसी प्रकार कोई शुल्क नहीं लिया जायेगा । अपने पेसेंट के इलाज के बाद यदि वह आवश्यक समझे तो वहॉं रखें दान-पात्र में अपनी स्वेच्छा से रकम दे सकता है। संम्पर्कं करें - **अखंड प्रताप सिह 9451647845**

साहित्य सरोज विश्रामालय

वाराणसी ट्रामा सेंटर एवं बी०एच०यू० के पीछे भगवानपुर वाराणसी में जो बी०एच०यू० के मेन गेट एवं ट्रामा सेंटर के मेन गेट से ५ मिनट के पैदल रास्ते पर है रामनगर किला से १ किलोमीटर, सामने घाट से ५०० मी० की दूरी पर है, अपने साहित्य एवं कलाकार मित्रों के लिए साहित्य सरोज पत्रिका द्वारा एक निशुल्क विश्रामालय की व्यवस्था की गई हैं।

यदि आप कही से आ रहे हैं और वाराणसी घूमने का मन है तो आप वहॉं आकर अपना सामान इत्यादि रख कर फ्रेश होकर वहॉं रखे व्यवस्था से खाना बना कर खा पीकर आराम से वाराणसी भ्रमण कर शाम को या रात भर रूक कर वापस लौट सकते हैं। यदि आप वाराणसी भ्रमण को आये हैं और अचानक किसी समस्या से ग्रसित हो गये हैं तो भी आप अखंण्ड प्रताप सिंह संपादक साहित्य सरोज को काल करके अपनी समस्या बता सकते हैं आपकी हर सभंव मदद होगी। यह सुविधा खास तौर से बाहर के साहित्यकारों एवं कलाकारों के साथ-साथ बुजुर्ग एवं बिमार साहित्यकारों एवं कलाकारों के लिए ही है। **9451647845**

7 दिनों के अभिनय एवं शार्ट फिल्म निर्माण प्रशिक्षण में बनी 4 फिल्में, मिला एवार्ड

देश विदेश में प्रतिभाओं को आगे लाने के लिए विभिन्न आयोजन के लिये विख्यात साहित्य सरोज पत्रिका द्वारा एशिया महाद्वीप के सबसे बड़े गाँव गहमर में ७ दिवसीय शार्ट फिल्म अभिनय एवं शार्ट फिल्म निर्माण प्रशिक्षण शिविर का आयोजन १५ नवम्बर से २२ नवम्बर तक किया गया। शिविर का शुभारंभ स्टेशन रोड गहमर स्थित विकास भवन में साहित्य सरोज पत्रिका के संपादक डॉ अखंड प्रताप सिंह के द्वारा किया गया। इस अवसर पर कहानी लेखन, संवाद लेखन, स्क्रीप्ट लेखन, वीडियो एवं फोटोग्राफी, क्रोमा स्टूडियों निर्माण का प्रशिक्षण देते हुए ४ शार्ट फिल्मों का निर्माण किया गया जिसमें कम्प्टीशन, ब्लड, ईएमआई एवं वन जैसी फिल्मों का निर्माण हुआ।

प्रशिक्षण शिविर में लखनऊ से अमित पाण्डेंय, अंशुल गौरव, रायबरेली से दिनेश कुमार शुक्ल, बिलासपुर छत्तीसगढ़ से पूजा सिंह गया, बिहार ने विनय दुबे ने भाग लिया। गहमर में बनी शार्ट फिल्म में कम्प्टीशन का प्रर्दशन खुजराहो के अन्तराश्ट्रीय फिल्म समारोह में हुआ।बच्चों के प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी पर बनी ४ मिनट की फिल्म की चौतरफा सराहना हुई।

अभिनय प्रशिक्षण शिविर प्राप्त करने लखनऊ से आये अमित पाण्डेंय ने कहा कि ग्रामीण परिवेश में नाम मात्र का शुल्क लेकर आयोजित इस प्रशिक्षण शिविर में जिस प्रकार सरल एवं प्रैक्टिकल करा कर छोटी से छोटी चीजों का प्रशिक्षण दिया गया वह आपको ५० हजार १ लाख रूप्ये देखकर भी हासिल नहीं हो सकता है। हम लोगों को कहानी लेखन से लेकर बाजार से सामान लाकर उसे सेट करने, लाइटिंग सेट करने का प्रशिक्षण तक दिया गया। शिविर में अभिनय प्रशिक्षण के साथ-साथ निर्देशन के भी गुण सिखाये गये ।हम इस तरह के प्रशिक्षण प्राप्त करने के इच्छुक लोगों से आग्रह करेगें कि जब कभी गहमर में या अखंड गहमरी के नेतृत्व में प्रशिक्षण शिविर लगे आप उसे जरूर अटैंड करें।

शिविर में प्रशिक्षक के रूप में लखनऊ से आई प्रसिद्ध कलाकार ज्योति किरण रतन ने कहाँ कि भारत का दिल भारत का गांव है और साहित्य सरोज पत्रिका भारत के गाँव से प्रतिभाओं को निकालने का काम विगत १० वर्शो से कर रही है। आज लोक कला अपना वजूद होती जा रही है, जिसे बचाकर रखना ही जरूरी नहीं है बल्कि जरूरत इस बात की है कि उसे स्तानांतरित किया जाये। उन्होंने बताया कि आने वाले समय में ३ जनवरी से मध्यप्रदेश के विदिशा में, १६ जनवरी से छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में इस प्रकार का आयोजन किया जायेगा।

शिविर के समापन पर साहित्य सरोज पत्रिका के संपादक अखंड प्रताप सिंह ने कहा कि एवरग्रीन फिल्म प्रोडक्शन हाउस द्वारा दिये गये सहयोग पर हम उनके आभारी है, हम उनके फिल्मों के प्रचार-प्रसार में अपना पूरा योगदान देगें। यदि आप भी शार्ट फिल्म एवं मॉडलिंग के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाना चाहते हैं तो आप पत्रिका से जुड़ें।

साहित्य सरोज
9451647845

10वें गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव में सम्मानित हुए देश भर साहित्यकार व कलाकार

प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार गोपालराम गहमरी की जन्मभूमि एशिया महाद्वीप के सबसे बड़े गहंव गहमर, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश में गोपालराम गहमरी की स्मृति में १०वें गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव का आयोजन मां कामाख्या डिग्री कालेज गहमर में २० से २२ दिसम्बर तक साहित्य सरोज पत्रिका एवं गहमर वेलफेयर सोसायटी द्वारा किया गया। तीन दिनों तक चलने वाले इस कार्यक्रम में परिचर्चा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कवि सम्मेलन, मन की बात कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बताते चले कि विगत ०६ वर्षो से साहित्य सरोज पत्रिका एवं गहमर वेलफेयर सोसाइटी गहमर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित यह गोपालराम गहमरी पर आयोजित होने वाला देश का एक मात्र कार्यक्रम है, जो अपने सनातनी परम्परा में आयोजन के लिए देश में विख्यात है।

इस अवसर पर देश भर से आये साहित्यकारों एवं कलाकारों को उनके विधा विशेष में कार्य हेतु सम्मानित किया गया। जिसमें हिन्दी साहित्य के सर्वांगीण विकास में बहुमुल्य योगदान के लिए पड़रौना,कुशीनगर जनपद के श्री ओमप्रकाश द्विवेदी जी को 'धामदेव राव गौरव सम्मान , हिन्दी साहित्य के सर्वांगीण विकास में बहुमुल्य योगदान के लिए मुजफ्फरपुर, बिहार की श्रीमती उषा किरण श्रीवास्तव जी को 'श्रीमती सरोज सिंह गौरव सम्मान,लेख-आलेख के क्षेत्र में बहुमुल्य योगदान के लिए श्रीमती शीला शर्मा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ को 'गोपालराम गहमरी गौरव सम्मानमहिला उत्थान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु आदरणीया गौरी कश्यप जी , बिलासपुर, छत्तीसगढ़ को साहित्य सरोज कविता के क्षेत्र में बहुमुल्य योगदान के लिए श्रीमती माधुरी मधु जनपद कुशीनगर को 'भोला नाथ गहमरी गौरव सम्मान,गौरव सम्मान, अभिलाषा झा, बलौदाबाजार, छत्तीसगढ़ को श्रीमती सरोज सिंह गौरव सम्मान, हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु आदरणीय शिवनाथ सिंह शिव जी को पंडित कपिल देव द्विवेदी गौरव सम्मान, सुगम संगीत/लोकगायन के क्षेत्र में संगीत शिक्षक श्री अरविन्द कुमार उपाध्याय को गोपालराम गहमरी संगीत साधक सम्मान, कविकुंभ पत्रिका की संपादक रंजीता सिंह फ़लक को गोपालराम गहमरी पत्रिका सम्मान, शार्ट फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में बहुमुल्य योगदान के लिए श्री विनय कुमार दुबे जी नागपुर, महाराष्ट्र को स्व. ठाकुर योगेश्वर सिंह स्मृति सम्मान, व्यंग्य लेखन के क्षेत्र में बहुमुल्य योगदान के लिए राम भोले शर्मा पागल जी हरदोई, उत्तर प्रदेश को 'गोपालराम गहमरी व्यंग्य लेखक सम्मान,शिक्षा के क्षेत्र में बहुमुल्य योगदान के लिए डा रमा शुक्ला झांसी, उत्तर प्रदेश को 'गोपालराम गहमरी साहित्य सेवक सम्मान, , नीती सक्सेना देहरादून को साहित्य सरोज गौरव सम्मानित, शिक्षा के क्षेत्र में बहुमुल्य योगदान के लिए श्रीमती मिंटू शर्मा जी मुजफ्फरपुर, बिहार को 'मान्धाता सिंह गौरव सम्मान।

कार्यकम के अंत में आयोजक अखंड गहमरी ने सबका आभार व्यक्त किया।

साहित्य सरोज

धर्म, संस्कृति और इतिहास

हम हिंदुस्तानी, हमारी पहचान हिंदुस्तान से है और हम हिंदुस्तान की पहचान हैं। हमारा दिल इतना बड़ा है कि हमने सभी धर्मों का अपने देश में खुले दिल से स्वागत किया और उन्हें पूरा मान और सम्मान दिया। परंतु, शायद कुछ लोग इसे हमारी कमजोरी समझ बैठे हैं। या तो उन्होंने इतिहास की किताबें ठीक से पढ़ी नहीं हैं या उन्हें पढ़ाया नहीं गया है।

यह वही देश है जहां पृथ्वीराज चौहान जैसे महान शासक ने एक निर्दय, क्रूर और हिंसक व्यक्ति को एक बार नहीं बल्कि कई बार माफ किया। और आज, कुछ लोग हमारे धर्म को हिंसा का जरिया बताते हैं।यह वे लोग हैं जो हमारी मेहनत की गाढ़ी कमाई से चुनकर संसद में जाते हैं और फिर हमारी विचारधारा, हमारे धर्म, हमारी संस्कृति और हमारी सभ्यता का मजाक बनाते हैं। और फिर ये चाहते हैं कि हम उन्हें सम्मान दें? वे क्या चाहते हैं, कि ये वही हिंदुस्तान रहे जहां कश्मीर में रातभर कबालियों ने तबाही मचाई, छोटी-छोटी बच्चियों तक को नहीं बख्शा, लूटमार की हत्या की, औरतों के साथ दुर्व्यवहार किया, और तब के हमारे महान नेता गढ़ विशाल हृदय वाले विदेश से पढ़े लिखे लोग खड़े होकर तमाशा देखते रहे यह उन्हीं के वंशज आज हमारे धर्म को हिंसक धर्म बात कर हमारी आस्था का अपमान कर रहे हैं।

कोई इन्हे बताइए आज का हिंदुस्तान वह हिंदुस्तान नहीं है। यह लंदन से पढ़कर आए हुए लोगों का हिंदुस्तान नहीं है। यह हिंदुस्तान उनका है जो अपने धर्म और अपने धर्मग्रंथों को बहुत अच्छे से जानते हैं। राहुल जी को भी इसे जानने की कोशिश करनी चाहिए। यह वही हिंदुस्तान है जहां पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप और वीर शिवाजी जैसे महान योद्धा पैदा होते हैं। लेकिन शायद इन्होंने कभी सही से हिंदुत्व को जानने की कोशिश ही नहीं की।और क्यों करेंगे उनकी खुद की आस्था ही नहीं है इन्हें तो सिर्फ हिंदू धर्म में लांछन लगाने में मजा आता है? इसी हिंदू धर्म से जैन और बौद्ध धर्म का जन्म हुआ जिसने पूरी दुनिया को शांति और सद्भावना का पाठ पढ़ाया इसी हिंदू धर्म से शैव और लिंगायत का भी प्रादुर्भाव हुआ है ,यह क्या जाने शिव कौन है शिव का मतलब क्या है विश्व का कल्याण करने के लिए शिवजी ने हलाहल तक को पी लिया था ,और जरूरत पड़ने पर त्रिशूल उठाकर तांडव करने में भी उन्हें वक्त नहीं लगता यह उस हमारे पूज्य हमारे आराध्य भगवान शिव पर उंगली उठाने की हिम्मत करते हैं और हम खड़े होकर इन्हें देखते रहते हैं। जिस हिंदू धर्म को वे हिंसा का माध्यम बता रहे हैं, वह हिंदू धर्म प्रबल भाईचारे, एकता, सत्यनिष्ठा और प्रेम का पाठ पढ़ाता और सिखाता आया है। और आज, यह बाहर से पढ़कर आए लोग हमारी संसद में , एक बेहद जिम्मेदार पद पर बैठकर, हमारे धर्म को हिंसक बता रहे हैं। हमें मुखर होकर उनके खिलाफ आवाज उठानी ही पड़ेगी और ठोस कदम उठाना पड़ेगा ताकि यह लोग बिना जाने समझे हमारे धर्म और हमारी धार्मिक आस्था पर उंगली उठाने की जुर्रत कर सके।

हिंदुस्तान एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है जहां हर धर्म, हर समुदाय को समान अधिकार दिए गए हैं। यह हमारे संविधान का मूल सिद्धांत है। लेकिन, कुछ राजनीतिक दल और नेता इस धर्मनिरपेक्षता को अपनी स्वार्थी राजनीति के लिए उपयोग कर रहे हैं। वे हमारे समाज को विभाजित करने की कोशिश कर रहे हैं, हमारे धार्मिक विश्वासों को निशाना बना रहे हैं, और हमारी सांस्कृतिक धरोहर का अपमान कर रहे है हिंदुस्तान एक लोकतांत्रिक देश में, जहां हर नागरिक को अपनी विचारधारा रखने का अधिकार है, लेकिन यह अधिकार दूसरों की आस्था और संस्कृति का अपमान करने का लाइसेंस नहीं देता है। संसद में बैठे लोगों की जिम्मेदारी है कि वे देश की एकता और अखंडता को बनाए रखें, न कि उसे तोड़ने का प्रयास करें!आधुनिक हिंदुस्तान ने विज्ञान, तकनीक और आर्थिक विकास के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रगति की ,हमें इन प्रगतियों पर गर्व है, लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हमारी जड़ें हमारे प्राचीन इतिहास, हमारी संस्कृति और हमारे धर्म में गहरी हैं।इतिहास ने हमें सिखाया है कि हम शांति-प्रिय लोग हैं, लेकिन हमें अपनी सुरक्षा और सम्मान के साथ कभी समझौता नहीं करेंगे और जरूरत पड़ने पर एट का जवाब पत्थर से देने की हिम्मत रखते हैं।

आखिरकार, हिंदुस्तान का भविष्य हमारे युवाओं के हाथ में है। हमें उन्हें अपने धर्म, संस्कृति और इतिहास की सही जानकारी देनी होगी ताकि वे गर्व से कह सकें कि वे हिंदुस्तानी हैं , संसद में बैठकर हमारी धार्मिक आस्थाओं का अपमान करने का अधिकार किसी को होना नहीं चाहिए और अगर कोई ऐसा करता है तो उसे कठोर कार्यवाही से गुजरा चाहिए ताकि फिर कोई आकर इस तरह की निंदनीय बातें करने की हिमाकत न कर सके।

गीता सिंह
जेएसपी, रायगढ़
(छत्तीसगढ़)
99930 39489

छात्र-छात्राओं के चारित्रिक एवं नैतिक मूल्यो में गिरावट का कारण,

भारतीय मनीषियों ने शिक्षा का मूल उद्देश्य चरित्र निर्माण माना है किंतु आज यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि हम छात्रों के गिरते नैतिक मूल्य पर विचार करने के लिए विवश है। वर्तमान में शिक्षा अपने मूल उद्देश्य से हट गई है। राष्ट्र की उन्नति युवा वर्ग पर ही निर्भर है। पूरे देश की नजर इनके ऊपर ही लगी रहती है किंतु यह वर्ग आज सर्वाधिक अनुशासनहीन तथा नैतिक मूल्यों से रहित होता जा रहा है। यह एक भयंकर राष्ट्रीय संकट का सूचक है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा धर्मनिरपेक्ष ऋषियों के हाथ में थी। भारत की प्राचीन शिक्षा न तो शासक के हाथ में थी ना ही राजनीतिक लोगों के प्रभाव में थी। इस कारण चरित्र, नैतिकता, ईमानदारी, उत्तम आचरण, सदाचार आदि से विभूषित हमारी संस्कृति का हजारों वर्ष तक लोप नहीं हुआ। आधुनिक काल में लहर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति ने ऐसी शिक्षा की नीव डाली कि भारतीय यूरोपीय सभ्यता का अनुनाई बन गया। फल स्वरुप शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य किसी प्रकार धन अर्जित करके भौतिक सुख प्राप्त करना रह गया। लौकिक सुख की सोच ने आंतरिक सुख शांति प्राप्त करने के रास्ते से हमें दूर कर दिया। भौतिकता की सोच ने हमारी संस्कृति पर प्रहार किया।

आज शिक्षा का क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो चुका है अतः हमें अपनी संस्कृति के अनुरूप ऐसी शिक्षा पद्धति लागू करनी होगी जिसमें पूर्व वर्णित शिक्षा का मूल उद्देश्य पूर्ण रूप से सुरक्षित रहे। शिक्षा जीवन को परिष्कृत करती है न की नैतिक पतन में सहायक होती है। किंतु छात्र छात्राओं के नैतिक पतन का पूरा दोष केवल शिक्षा पद्धति पर ही नहीं डाला जा सकता। निश्चित रूप से छात्र-छात्राओं के नैतिक पतन का कारण आज का संपूर्ण दूषित परिवेश है।

बालक कच्चे घड़े के समान होता है जो अपने चतुर्दिक परिस्थितियों तथा परिवेश की आंच में तप कर पका होता है। बालक अपने चारों तरफ जो देखता है उसकी अमित छाप उसके मन पर पड़ती है। आज का संपूर्ण परिवेश बेहद दूषित हो गया है। पारिवारिक कलह, आपसी वैमनष्यता, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगति तथा हर क्षेत्र में बढ़ती अनुशासनहीनता तथा भ्रष्टाचार के बीच बालक बड़ा होता है, फिर बालक अपने अंदर नैतिक मूल्यों का विकास किस प्रकार कर सकता है? किंतु विडंबना यह है कि सभी वर्ग के लोग इसकी पूरी जिम्मेदारी छात्रों तथा शिक्षकों पर डालकर अपने को मुक्त कर लेते हैं।

मेरी सोच यह है कि छात्र-छात्राओं के भीतर गिरते नैतिक मूल्यों के लिए यदि सबसे कम कोई दोषी है तो वह छात्र या छात्राएं ही है। बालक तो आकार ग्रहण करता हुआ एक पूर्ण चित्र है इसके निर्माण का दायित्व समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों के हाथ में है।

निसंदेह छात्र-छात्राओं के चरित्र निर्माण में शिक्षक का दायित्व सर्वाधिक है निश्चित रूप से शिक्षक वर्ग भी अपने कर्तव्यों से विमुख होता जा रहा है। उसने साधन को ही साध्य बना लिया है किंतु शिक्षक भी इसी समाज का एक अंग है। इस दूषित परिवेश में उसके अंदर भी अनेक मानवगत कमजोरीया आ सकती है किंतु जो शिक्षक समाज को दिशा देने का काम करता है वह किसी भी दूषित परिवेश में अपने दायित्वो से कैसे दूर हो सकता है? बालक के ऊपर उसके पारिवारिक परिस्थितियों का प्रभाव अत्यंत तीव्र गति से पड़ता है। अत्यंत संवेदनशील होने के कारण छोटी-छोटी घटनाएं उसे बेहद प्रभावित करती है। बालक का अधिक समय घर पर ही बितता है। अतः माता-पिता की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि उनके भीतर चारित्रिक गुणो का विकास करें। उत्तम आचरण एवं सदाचार के मार्ग पर चलने की सिख दें। मां-बाप को घर के बाहर बालक जिन बच्चों के साथ रहता है वह किस तरह के सोच के हैं। कहीं बालक घर के बाहर कुसंगति का शिकार तो नहीं है, इस पर भी गंभीरता से ध्यान देना होगा।

अंत में मेरा यही कहना है कि छात्र जीवन के क्यारी में विकसित होते फूलों की तरह है जिसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी समाज के प्रत्येक वर्ग की है यदि कोई भी कली अधखिली रह जाती है तो उसकी पूरी जिम्मेदारी किसी न किसी माली की है। समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों का यह दायित्व है की इन्हें पूर्ण पुष्प बनने तथा उनकी सुगंध को चतुर्दिक फैलने का अवसर दें ताकि अपने सुगंध से यह पूरे वातावरण को सुगंधित एवं प्रकाशित कर सके। तभी समाज तथा राष्ट्र का सर्वांगीण विकास संभव है।

हृदय नारायण सिंह
गहमर, गाजीपुर
63860 70075
(लेखक गहमर इंटर कालेज गहमर के पूर्व प्रवक्ता हैं।)

बदलते हालात

क्षितिज ने स्कूल से आते ही अपना बस्ता फेंका और यूनिफॉर्म बदल कर जल्दी से हाथ-मुँह धोया ताकि पिंटू ,अनीश से पहले वह खेल के मैदान में पहुँच सके। तभी रसोईघर से आती खुशबू ने उसके कदम रोक लिए। समोसे.... चिल्लाते हुए वह रसोई में जाकर मम्मी से लिपट गया। मम्मी उसकी इस हरकत को देखकर मुस्कुराने लगी । उन्हें पता है नाश्ता क्षितिज की कमजोरी है और समोसा तो उसका फेवरेट । वह गरम-गरम समोसे तलते गईं और क्षितिज खाते गया। आखिर मम्मी को ही कहना पड़ा -"अब बस करो बेटा, पेट खराब हो जाएगा।"

"आप तो कहतीं हैं बाहर की चीजें खाने से पेट खराब होता है ये तो घर में बने हैं फिर क्यों नुकसान होगा?"

बेटा - जरूरत से ज्यादा कोई भी चीज खाओगे तो वह नुकसान ही करेगी चाहे वह घर का ही बना क्यों न हो।तब क्षितिज जी का खाना बंद होता। "जल्दी-जल्दी मत खाओ क्षितिज" खाना गले में अटक जाएगा - मम्मी कहती ही रह गई और क्षितिज यह जा वह जा।

अपना क्रिकेट किट उठा कर वह मैदान की ओर दौड़ पड़ा जो पार्क से लगा हुआ था। सैर करने वाले मैदान के चक्कर लगा रहे थे, झूले पर ढेर सारे बच्चों की भीड़ जमा थी , कुछ झूल रहे थे कुछ अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। क्षितिज भी कुछ देर झूला झूलने का आनंद उठाने लगा। तब तक उसके बाकी दोस्त भी वहाँ पहुँच गए थे। अभी कुछ ही ओवर हुए थे कि पार्क के दूसरी छोर पर कुछ कोलाहल होने लगा। पिंटू बॉलिंग करते-करते रुक गया -"अरे यार! कुछ तो हुआ है इतना शोर हो रहा " चल-चल कुछ नहीं हुआ । तू अपनी बॉलिंग पर ध्यान दे। कुछ झगड़ा-वगड़ा हुआ होगा । बड़े लोगों का तो रोज का नाटक है। वो दो सौ पाँच नम्बर वाले अंकल अपने पड़ोसी से हरदम लड़ते रहते हैं सफाई के नाम पर। क्या हुआ अगर आप ही थोड़ी अधिक जगह की सफाई कर देंगे। ये बड़े लोग ना"

"अरे देख ! वे किसी के पीछे भाग रहे हैं, अक्षत वह हमारे तरफ ही आ रहा है। क्या पता कोई अपराध करके भाग रहा हो, चलो मिलकर दबोचते हैं।

कुछ रोमांचक काम करना हो तो अक्षत तो सदा तैयार रहता है। अच्छा खिलाड़ी होने के कारण उसके शरीर की बनावट भी तगड़ी और चुस्त है। लम्बाई अधिक होने का भी वह कभी-कभार फायदा उठा लेता है थोड़ी दबंगई करके, तो वह ऐसा मौका कब चूकने वाला था । स्टंप की एक डंडी उठाकर दौड़ पड़ा उस तरफ और उसके पीछे उसकी क्रिकेट सेना। अब वे उस भागते लड़के के आगे पहुँच गए और गार्डन का चौकीदार और बाकी सब पीछे। दोनों तरफ से घिर कर उसकी हालत खराब हो गई और उसने अपनी जेब से बटुआ निकाल कर चौकीदार को दे दिया। साथ ही वह गिड़गिड़ाने लगा -"मुझे माफ़ कर दीजिए ,मेरे छोटे भाई की तबीयत खराब हो गई है तो उसकी दवाई के लिए चोरी की वरना मैं कोई पेशेवर चोर नहीं हूँ।"उसे पकड़कर मारने को उत्सुक भीड़ कुछ ठिठक गई। तभी किसी ने कहा " अरे पकड़े जाने पर ये ऐसे ही सफाई देते हैं ताकि लोगों के मन में दया व करुणा की भावना उत्पन्न हो और उसे छोड़ दिया जाए।"

" नहीं सर मैं झूठ नहीं बोल रहा ,आप चाहें तो मेरे घर चलकर देख सकते हैं। सचमुच मेरे भाई की तबीयत खराब है ।मेरे पिता बहुत पहले हमें छोड़कर चले गए । माँ ने दूसरों के घरों में बर्तन माँज कर हमारी देखभाल की है। हम दोनों भाई सरोजिनी नगर के सरकारी स्कूल में पढ़ने जाते थे। कुछ माह पहले दुर्घनाग्रस्त होकर माँ भी चल बसी। अब हमारे सिर पर कोई छाया नहीं तो मैं ही कहीं होटल या किसी दुकान में छोटे-मोटे काम कर अपना और भाई का पेट भर रहा हूँ। दो दिन से उसे तेज बुखार है, वहीं पास के अस्पताल में दिखाया तो उन्होंने दवाई लिख दी पर उसे खरीदने के लिए मेरे पास पैसे नहीं थे। मैं जानता हूँ चोरी करना गलत बात है पर मैंने बहुत बेबसी में ऐसा कदम उठाया,मुझे माफ़ कर दीजिए। आप अभी मेरे भाई का इलाज करा दीजिए मैं उसके बदले में आपका कोई भी काम कर दूँगा।" उस लड़के की आँखों से आँसू बह रहे थे और उसके साथ वहाँ और कई लोगों की आँखें नम हो गईं थीं।

वह चोर लड़का क्षितिज , पिंटू इन्हीं की उम्र का था। उसकी करुण कथा सुनकर वे सोच में पड़ गए थे, जिनके माता-पिता नहीं रहते उनकी जिंदगी कितनी कठिन होती है।यहाँ हम सारी सुविधाएँ पाकर भी संतुष्ट नहीं रहते।

अक्षय के पापा डाक्टर थे, वह आगे बढ़कर बोला -" ठीक है तुम हमें अपने भाई के पास ले चलो ,मैं अपने पापा से कहकर उसका इलाज कराऊंगा।" "बहुत-बहुत

धन्यवाद दोस्त , तुमने मेरी बात पर विश्वास किया। चलो मेरा घर बहुत दूर नहीं है। उस लड़के ने अपना नाम सुरेश बताया ।

अक्षय के साथ उसकी पूरी क्रिकेट मंडली सुरेश के घर पहुँची। उसकी छोटी सी कच्ची झोपड़ी में पुराने कपड़ों की गठरी पर उसका छोटा भाई जो मुश्किल से नौ वर्ष का होगा, सोया हुआ था। भाई की आहट पाकर वह फुसफुसाया - पानी निखिल ने उसके माथे को छुआ, वह तप रहा था। क्षितिज ने कहा - "तुम लोग यहीं ठहरो । मैं और अक्षत साइकिल से जाते हैं, उसके पापा को लेकर आएँगे। तब तक सुरेश तुम किसी कपड़े को गीला कर के उसके माथे पर रखो तो बुखार कुछ कम होगा। अधिक बुखार होने से वह हमारे मस्तिष्क में चढ़ जाता है ऐसा मम्मी कहती है।"
" हाँ ठीक है-कहकर सुरेश तुरंत एक कपड़े को गीला कर उसके माथे पर रखने लगा और उसके हाथ-पैर को पोंछने लगा।"

अक्षय और क्षितिज ने शीघ्र घर जाकर अपने मम्मी-पापा को सारी बातें बताईं। वे उनके साथ आये और पापा ने सुरेश के भाई का चेकअप किया, उसे दवा खिलाई। पिंटू और निखिल अपने घर जाकर कुछ खाने-पीने की चीजें ले आये। सुरेश की आँखों में अपने दोस्तों के प्रति आभार झलक रहा था। तब तक यह बात पूरी कॉलोनी में फैल गई और सभी सुरेश की हालात के प्रति संवेदना जाहिर कर रहे थे। बच्चों की मदद करने की भावना की सबने प्रशंसा की और उनके निवेदन पर सुरेश की सहायता करने की पहल हुई। कॉलोनी की व्यवस्थापन समिति की बैठक हुई और सर्व सहमति से यह निर्णय लिया गया कि सुरेश को गार्डन की साफ-सफाई का काम दे दिया जाए ताकि उसकी कुछ कमाई हो और वह अपनी पढ़ाई भी जारी रख पाए। इस तरह वह पार्ट टाइम काम करके स्वाभिमान के साथ अपनी जिंदगी गुजार सकेगा।

डॉ. दीक्षा चौबे
दुर्ग छत्तीसगढ़
9424132359

सांता नहीं संतो का देश भारत

क्रिसमस यीशु मसीह के जन्म की याद में मनाया जाने वाला एक वार्षिक त्यौहार है , जो मुख्य रूप से २५ दिसंबर को दुनिया भर के अरबों लोगों के बीच एक धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है और यहां सभी धर्म को अपना-अपना त्यौहार मनाने का और अपने परंपरा के अनुसार पूजा करने का अधिकार है। लेकिन जहां पर इस अधिकार का गलत उपयोग होता है वहां पर इसके लिए विरोध होना आवश्यक होता है। भारत जहां सभी धर्म के लोग एक साथ मिलकर रहते हैं,और सभी अपने-अपने धर्म को मानते हैं लेकिन क्रिश्चियन धर्म में यह पाया गया है कि यह अपने धर्म के प्रसार के लिए गलत तरीका का प्रयोग कर रहे हैं और भोले- भाले लोगों को विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देकर के धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

वर्तमान समय में मह्र्डर्न स्कूल के नाम से संचालित विद्यालयों में जहां सिर्फ एक या दो प्रतिशत क्रिश्चियन है लेकिन वहां बच्चों को सांता क्लास बनने के लिए दबाव डाला जाता है। और वहां पढ़ने वाले ८० हिंदू बच्चों के अभिभावक इस बात का विरोध नहीं कर पाते हैं।क्या कभी इन स्कूलों में रामनवमी, गणेश पूजन या तुलसी पूजा का उत्सव मनाया गया है। अगर नहीं तो क्रिसमस डे में सांता क्लास बनने पर के लिए बच्चों को मजबूर क्यों किया जा रहा है। हिंदू समाज के भी कुछ तथा कथित लोगों को अपने बच्चों को शांता बनाने में बहुत ही गर्व का अनुभव हो रहा है। फेसबुक,स्टेटस में शांता बनाकर के अपने बच्चों को इस प्रकार से प्रस्तुत कर रहे हैं जैसे उन्होंने बहुत बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली है।हमारे देश में ज्यादातर स्कूल कह्लेज में क्रिश्चियन कल्चर (क्रिसमस डे) की आड़ में सेंटा क्लहज के नाम पर बच्चों को जोकर बनाकर ऐसे धर्म के बारे में बताया जाता है। जहां मां- बहन दृ बेटियों की इज्जत नहीं होती, बल्कि नंग्नता और बेशर्मी परोसी जाती है। फर्जी प्लास्टिक के पेड़ों को लाइटों द्वारा सजाकर क्रिसमस-डे मनाया जाता है।

हिंदू धर्म में पूजनीय तुलसी के पौधे में औषधि भी है और सुगंध भी। इसमें देवी देवताओं का वास भी है। अतः सभी स्कूल कह्लेज प्रबंधकों से निवेदन है कि आने वाली पीढ़ियों को खराब न करें। सभी हिंदुस्तान में हो रहते हैं तो हिंदुस्तान की संस्कृति पर ही विशेष तौर पर ध्यान दें। अपने धर्म अपनी संस्कृति की रक्षा करना हर हिंदू का कर्तव्य है। भारत संतों का देश है शांता का नहीं।

डॉ शीला शर्मा
बिलासपुर,
छत्तीसगढ़
95895 91992

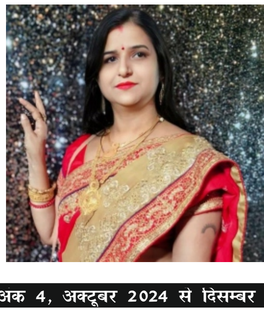

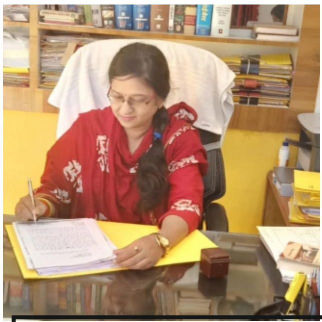

अच्छी थी पगडंडी

अच्छी थी, पगडंडी अपनी,
सड़कों पर तो, जाम बहुत है!!

फुर्र हो गई फुर्सत, अब तो,
सबके पास, काम बहुत है!!

नहीं जरूरत, बूढ़ों की अब,
हर बच्चा, बुद्धिमान बहुत है!!

उजड़ गए, सब बाग बगीचे,
दो गमलों में, शान बहुत है!!

मट्ठा, दही, नहीं खाते हैं,
कहते हैं, जुकाम बहुत है!!

पीते हैं, जब चाय, तब कहीं,
कहते हैं, आराम बहुत है!!

बंद हो गई, चिट्ठी, पत्री,
व्हाट्सएप पर, पैगाम बहुत है!!

झुके-झुके, स्कूली बच्चे,
बस्तों में, सामान बहुत है!!

नही बचे, कोई सगा सम्बन्धी,
अकड़, ऐंठ, अहसान बहुत है!!

सुविधाओं का, ढेर लगा है,
पर इंसान, थका बहुत है!!

-ममता सिंह

8224092167

रायगढ़

कोई मिला ऐसा

नेह नीर से भीगा भीगा
सुरभित कोमल कमल के जैसा
कोई कभी मिला था ऐसा।

कढ़ी धूप में छाया जैसा
रंग गुलाबी हल्का हल्का
वाणी मधुर मधु सी मुखरित
और प्रेम रस छलका छलका
नव विकसित गुलाब गुच्छों पर
नवल ओस के झुरमुट जैसा
कोई कभी मिला था ऐसा।

प्रीत के किसी श्वेत निर्झर से
ऐसे जल कण बिखर रहे
चन्द किरण के साए में ज्यों
जूही चम्पा निखर रहे
नन्दन वन के आम्र कुंज में
कुहू कुहू कोयल के जैसा
कोई कभी मिला था ऐसा।

नदिया की लहरों की हलचल
छेड़ रही कोई तराना
बरखा की पहली बूंदों सा
समहित था संगीत सुहाना
धरा वक्ष पर बूंद से उपजी
उस सौंधी सुगंध के जैसा
कोई कभी मिला था ऐसा।

रूप वसन अरुणिम स्वर्णिम से
इंद्रधनुष सी झलके
अमृत मदिरा झंकृत करती
उठती गिरती पलकें
थके पथिक की मधु निंद्रा में
प्रियतम स्वप्न सुहाने जैसा
कोई कभी मिला था ऐसा।

-कुलतार कौर कक्कड़

9977372032

भोपाल

बुरे लम्हें

एकता अहफिस जाने के लिए तैयार हो रही थी तभी फोन की घंटी घनघना उठी एकता झुंझलाते हुए कहा "पता नहीं इस समय किस का फोन आ गया"आज तो जरूर ऑफिस पहुंचने में देर हो जाएगी ।

"हैलो" एकता मैं अरुण बोल रहा हूं! मैं अहफिस के बाहर तुम्हारा इंतजार करूंगा ऑफिस खत्म होते गेट पर मिलना।

"ठीक है"। फोन बंद हो गया

एकता सोच ने लगी कि अरुण को पता है मैंने शादी के लिए एक माह की छुट्टी लेली है आज ऑफिस आई हूं इसीलिए मुझ से मिलने आया होगा? उसने जल्दी से अपनी स्कूटी निकाली और ऑफिस के लिए रवाना हो गई! आज उसका मन ऑफिस में काम में नहीं लग रहा था अरूण से मिलने का इंतजार कर रही थी।

शाम ५:०० बजे एकता ऑफिस से निकली और गेट के बाहर अरूण को इंतजार करते पाया। उसे देख कर वह समझ नहीं पा रही थी कि आज इतना उदास क्यों है? उसके हाथ में फूल भी हमेशा की तरह नहीं है" और वह रोमांटिक अंदाज में बात भी नहीं कर रहा! आखिर क्यों? अरूण बोला चलो काफी-हाउस चलते हैं। एकता के सब्र का बांध टूटने लगा। अरूण क्या बात सच-सच बताओ तभी मैं कॉफी-हाउस चलूंगी।चलो कॉफी-हाउस में बैठकर बात करते हैं, गेट पर नहीं । एकता कुछ कह पाती इसके पहले उसने अपनी मोटरसाइकिल स्टार्ट कर दी, एकता ने भी अपनी स्कूटी स्टार्ट किया। दोनों चल दिए।

काफी-हाउस पहुंच कर अरूण दो कोल्ड काफी का आर्डर दे कर आ गया। अरुण जल्दी बताओ क्या बात है मैं मानसिक तनाव से घिरती जा रही हूं एकता बोली। काफी आ गई"। दोनों सिप लेते हुए एक दूसरे के चेहरे पर आते-जाते भाव के उतार चढ़ाव को देख रहे थे।

अरूण ने चुप्पी तोडी" और बोला दरसल बात यह है कि मैं तुम्हारे साथ अब शादी नहीं कर सकता, हमारी शादी कैंसिल हो गई है"। "एकता स्तब्ध रह गई" अरूण यह क्या कह रहे हो? अरूण सिर झुकाकर चुप बैठा रहा 'काफी' जम कर बर्फ हो गई।एकता बोली तुम्हें पता भी है क्या कह रहे हो, कहीं मुझसे मजाक करने का कोई नया तरीका निकाला है। अरूण बोला नहीं! मैं बिल्कुल गंभीर होकर बात कह रहा हूं।

"आखिर क्यों"?

आज से मैंने एक माह की छुट्टी लेली है,घर में शादी की पूरी तैयारी हो चुकी है, कार्ड भी बटने लग गए हैं और अब तुम शादी तोड़ने की बात कैसे कर सकते हो? तुमने यह नहीं सोचा मेरे माता-पिता पर क्या गुजरेगी।वह अपने लोगों को क्या जवाब देंगे?

एकता एकदम जड़वत हो गई।

अरूण बोला तुम को तो पता है, २० दिन पहले मेरे दादाजी का स्वर्गवास हो गया था और कल हमारे नाना जी का भी स्वर्गवास हो गया है। घर के लोगों ने कहा कि शादी से पहले पारिवारिक में इतने अपशगुन हो रहे हैं लगता है "इस लड़की के ग्रह अच्छे नहीं हैं। तभी मुझे बताया कि हम एकता के घर शादी को मना करने जा रहे हैं उन्होंने जो सामान दिया था वह भी वापस कर देंगे। उसके बाद वह लोग इंदौर नाना के घर के लिए रवाना हो जाएंगे, तुम्हें यह खबर देने के लिए लिए कहा था तो बहुत हिम्मत जुटा कर मैं तुमसे कह पा रहा हूं, मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ पा रहा कि मैं आखिर क्या करूं?सिर झुकाकर चुप बैठा रहा।

एकता ने बिना कुछ बात किए भोपाल के लिए फ्लाइट बुक करने लगी मुंबई से भोपाल २ घंटे का सफर है एयरपोर्ट पर भी समय लगेगा, अपनी स्कूटी उठाई और घर की ओर चल दी उसको अपने माता-पिता की फिकर हो रही थी, इस खबर से उन पर क्या गुजरेगी।

एकता एयरपोर्ट पर पहुंच गई और फ्लाइट का इंतजार करने लगी। वह सोच में डूब गई कि मैं तो अरूण के घर वालों को स्कूल के समय से परिचित हूं मुझे तो अभी तक ऐसा नहीं लगा की उसके घर वाले इतने संकीर्ण विचारों वाले हैं, हमारी बचपन की दोस्ती कब प्यार में बदल गई और हमने "जीवन साथी बनने" को पूरी तरह से सहमत हो गए, दोनों के घर वालों ने खुशी खुशी हम दोनों के रिश्ते की मंजूरी दे दी और शादी ही तैयारियां होने लगीं।

पर यह एकाएक क्या हो गया?

एनाउंस हुआ सभी यात्री फ्लाइट में जाने को तैयार हो गए एकता फ्लाइट में पहुंचकर अपने मन को समझाने की कोशिश कर रही है कि अरूण कैसे अपने घरवालों की बातों में आ गया वह तो बड़े खुले विचारों का इंसान है!

वह कैसे अपनी एकता के प्रति इस कठोर निर्णय का भागी दार बन गया।

भोपाल पहुंची देखा घर का वातावरण एकदम शांत है माता-पिता एकता को देखते ही उसे लिपट गए बोले "बेटा हम तेरा सपना पूरा नहीं कर पाए"और अपने सीने से लगा लिया और रोने लगे।

एकता ने हिम्मत बधाँते हुए कहा आप लोग किसी अनहोनी होने से बच गए ईश्वर जो

करता है भले के लिए करता है।
ईश्वर ने मुझे ऐसे जीवन साथी से बचा लिया जिसमें अपने जीवन के फैसले लेने की हिम्मत न हो, जीवनसाथी के सपनों का ध्यान ना हो उसके लिए क्यों सोचना।
"फोन लगाया"
"हेलो"
अरुण मैंने तुम्हें "जीवन के बुरे लम्हे समझ भुला दिया है" फोन रख दिया ।माता-पिता गौरव पूर्ण नजरों से एकता को देखने लगे। एकता एक अनजान "नासूर"के दर्द को छिपाए हुए है।

माँ कहने लगी अब एकता से दूसरा कौन शादी करेगा क्या उसकी शादी हो पाएगी लोग तरह तरह की बातें करेंगे, कारण पूछेंगे। एकता ने दृढ़ता के साथ कहा दुनिया में सभी कमजोर नकारात्मक विचारधारा के नहीं होते उनकी अपनी सकारात्मक विचारधारा भी होती है। इस बात को "समय पर छोड़ देना चाहिए"। आगे क्या होगा कैसे होगा सोचना नहीं चाहिए। इधर अब अरुण-एकता की बात सुनकर स्तब्ध रह गया। सोचने लगा एक मैं हूं जो अपने घर वालों की बात में आकर अपने बचपन की दोस्ती और प्यार को एक झटके में खत्म कर दिया। मैंने यह नहीं सोचा की एकता पर क्या बीती होगी?

एकता के सामने मैं अपने आपको गुनहगार मानता हूं, अपने अंदर इतना साहस नहीं जुटा पाया जितना की एकता ने अपने साथ हुए अन्याय को बुरे "लम्हे" कह कर" विराम लगा दिया"एकता एक साहसी और स्वाभिमानी लड़की है! उसके सामने मेरा अस्तित्व एक" प्रश्न चिन्ह" बनकर रह गया।क्या मैं कभी एकता को भुला भी पाऊँगा?अरूण अब पश्चाताप के साये में मौन बैठा है। अब पछताने से क्या होता है जब ""चिड़ियाँ चुग गई खेत"।।

शीला श्रीवास्तव भोपाल
मोबाइल9318356454

अंगो से सीख

काले भूरे गोरे रंग। देखो कितने सुंदर अंग।।
नयन सदा ही खुलते संग। देखें दुनिया बढ़े उमंग।।

नेक काज करते हैं हाथ। इक दूजे का देते साथ।।
सीख हमें देते हैं बाल। रखो एकता बनो मिसाल।।

आगे बढ़ते जाते पैर। मिलकर करते जग की सैर।।
मुख से निकले मीठे बोल। जीवन में देता मधु घोल।।

करे इकट्ठा भोजन पेट। भरता तन में शक्ति समेट।।
नाक एक है लेती श्वास। सिखलाती जीवन है खास।।

सदा सोचता रहे दिमाग। बड़ा अहम यह तन का भाग।।
इसके बिन होता ना काम। तनिक नहीं करता आराम।।

चलो करें अंगों से प्यार। कभी नहीं होंगे बीमार।।
स्वस्थ रहें गर ये सब अंग। करें नहीं जीवन भर तंग।

प्रिया देवांगन "प्रियू"
राजिम
जिला - गरियाबंद
छत्तीसगढ़

एवरग्रीन बुक पब्लिसर
लंका, वाराणसी
अपनी पुस्तक या पत्रिका के प्रकाशन के लिए
आज ही संम्पर्क करें 9451647845

10वाँ गोपालराम गहमरी साहित्य व कला महोत्सव सम्पन्न

वर्ष २०१५ में सिवनी के डी०पी०चतुर्वेदी महाविद्यालय के डॉ रामकुमार चतुर्वेदी जी के प्रस्ताव एवं समर्थन के वादे एवं भोपाल की श्रीमती कान्ति शुक्ला जी के संरक्षण में २१ सितम्बर २०१५ से प्रसिद्ध उपन्यासकार गोपालराम गहमरी की स्मृति में उनके पैत्रिक गाँव गहमर में साहित्य सरोज पत्रिका एवं गहमर वेलफेयर सोसायटी द्वारा प्रारंम्भ हुए गोपालराम गहमरी साहित्य एवं कला महोत्सव का १० आयोजन २३ दिसम्बर २०२४ को वाराणसी भ्रमण के साथ आगामी वर्ष तक के लिए स्थगित हो गया।

२० से २२ दिसम्बर तक चले १०वें गोपालराम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन में बोध गया से आचार्य धर्मेन्द्र तिवारी जी, झांसी से श्रीमती रमा शुक्ला जी, लखनऊ ज्योति किरण रतन जी, बिलासपुर छत्तीसगढ़ से डॉ शीला शर्मा जी, मुजफ्फरपुर बिहार से डॉ उषाकिरण श्रीवास्तव जी , मोहाल पंजाब से नीति सक्सेना 'मयूरी' *Mrs Tourism Ambassador Universe Asia Pacific 2020, बलादोलबाजार छत्तीसगढ़ से अभिलाषा झा (एवरग्रीन मिसेज छत्तीसगढ़ २०२४) पटना ,बिहार से संगीता गुप्ता जी, हरदोई उत्तर प्रदेश से रामभोले शर्मा जी, रामकिशोर मस्ताना जी, गाजीपुर उत्तर प्रदेश से अर्चना आंनद , शमशाबाद विदिशा से रामबाबू मैहर देव जी, लखनऊ से अमित पांडे ',लखनऊ, दिनेश शुक्ल बाराबंकी, संतोष शर्मा शान जी हाथरस से ,रंजीता सिंह फ़लक देहरादून से , ओम प्रकाश द्विवेदी जी पड़रौना से , इन्द्रजीत निर्भिक जी गाज़ीपुर से , डॉ अणिमा श्रीवास्तव जी दानापुर से, गगनांचल तिवारी गगन जी हरदोई से , गौरी कश्यप एवं ,शानवी शर्मा बिलासपुर से ,श्रीपाल शर्मा 'ईदरीशपुरी' जी बागपत से, डॉ मिंटू शर्मा जी मुजफ्फरपुर से, अनंता कुमारी जी गया से, कवयित्री माधुरी "मधु" जी कुशीनगर, शिवनाथ सिंह "शिव " जी रायबरेली, डॉ० अरविंद कुमार उपाध्याय जी बलिया , श्री पवन वर्मा जी जम्मू , डॉ विनय कुमार दुबे जी, नागपुर उपस्थित रहे।

पूर्णतः ग्रामीण परिवेश एवं सनातनी व्यवस्था में आयोजित इस कार्यक्रम की शुरूआत २० दिसम्बर को आचार्य धर्मेन्द्र तिवारी जी की अगुवाई में सुन्दरकांड से हुई। शाम ५ बजे ग्राम प्रधान गहमर श्री बलवंत सिंह बाला ने द्वीप प्रज्ज्वलन एवं अतिथियों का स्वागत कर तीन दिनों तक चलने वाले कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत किया।

दिनांक २१ दिसम्बर को प्रातः श्रीमती उषा किरण जी की अध्यक्षता में संस्मरण पर कार्यशाला से दिन की शुरूआत हुई। इसके उपरान्त स्वास्थ पर आधारित एक एंकांकी प्रस्तुत किया। शाम को आये कलाकारों द्वारा संस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। अगले दिन गंगा स्थान, कामाख्या दर्शन पूजन के बाद मन की बात कार्यक्रम एवं एवरग्रीन फिल्म प्रोडशन द्वारा बने फिल्म का प्रदर्शन किया गया। शाम को सम्मान समारोह एवं कवि सम्मेलन का अयोजन के साथ यह कार्यक्रम अगल वर्ष तक के लिए स्थगित कर दिया गया।

नाम..
उम्र...............लिंग............शिक्षा.........
पिता/पति का नाम...............................
माता का नाम..................................
निवासी...
डाक का पूरा पता...............................
....
मोबाइल........................पिनकोड.........
आप का व्यवसाय................................
क्या आप एक अध्यापक/अध्यापिका हैं या रहे हैं..
आपके रूचि......................................
आपकी ड्रीम ऑफ लाइफ.........................
आपकी संस्था का नाम...........................
आपका कार्यक्षेत्र..................................
इस योजना को आप कैसे देखते हैं................
....
....

घोषणा

मैं अपने ईष्ट देव को साक्षी मान कर यह बचन देता हूँ कि मैं............................पुत्र.......... ....निवासी.............................. माह में दो दिन के कुछ घंटे अवश्य इस जीवन-रक्षक कार्य को दूँगा/दूँगी। मैं इस इसे लीड करने वाली संस्था को अपने विचारों एवं कार्यो से अगवत कराते हुए सदैव इस नेक कार्य को तन-मन-धन से करूँगा ताकि हमारे क्षेत्र में ही नहीं देश में मार्ग दुर्घटनाओं में कमी आये और कोई परिवार इसकी त्रासदी न झेले।हम माह में एक बार समय निकाल कर होने वाली आनलाइन बैठक में मौजूद रहूँगा, बल्कि अपने क्षेत्र में इस संस्था को बुलाकर विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों के द्वारा जन-जागरूकता फैलाने का कार्य करूँगा। यदि मैं यह कार्य सच्चे मन से नहीं कर पाया तो अपने सीन पर किसी अन्य को प्रस्तावित कर दूँगा।

मैं अपनी सदस्या शुल्क ११०० रूपये ६४५१६४७८४५ पर यूपीआई/पेटीएम/गूगल पे कर रहा हूँ। हस्ताक्षर

Samarpan Microcare Foundation
कुछ करके दिखाना है, आर्थिक आजादी पाना है।
आपके साथ हर पल, पल-पल,
HAPPY New Year
2025
Hari Om Singh
Founder & MD
HAPPY New Year
डी.पी. चतुर्वेदी
सभी छात्र-छात्राओं, अध्यापक-अध्यापिकाओं एवं
अभिवावकों को नव वर्ष हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
प्रोफेसर, कवि, साहित्यकार डॉ राम कुमार चतुर्वेदी
70000 41610
HAPPY — NEW — YEAR — 2025